॥ श्रीहरिः ॥

1850

# शतनामस्तोत्रसंग्रह

[ नामावलीसहित देवी-देवताओंके चालीस शतनामस्तोत्र ]

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥ 1850

# शतनामस्तोत्रसंग्रह

[ नामावलीसहित देवी-देवताओंके चालीस शतनामस्तोत्र ]

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

# निवेदन

भगवान्‌के अनन्त नाम हैं तथा उनके प्रत्येक नामका अपरिमित माहात्म्य भी शास्त्रोंमें बताया गया है—

सत्त्वशुद्धिकरं नाम नाम ज्ञानप्रदं स्मृतम्।
मुमुक्षूणां मुक्तिप्रदं कामिनां सर्वकामदम्॥

(सात्वततन्त्र)

'नाम अन्तःकरणकी शुद्धि करता है, नाम ज्ञान प्रदान करता है, नाम मुमुक्षुको मुक्ति प्रदान करता है तथा कामनावालोंको समस्त काम्य वस्तुओंका दान करता है।'

वेद, पुराण, शास्त्र, स्मृति आदि समस्त ग्रन्थोंमें नाम-माहात्म्य पदे-पदे दृष्टिगोचर होता है। शास्त्र अनन्त हैं, अतः नाम-माहात्म्यका भी अन्त नहीं है। भगवान्‌के नाम-जप, स्मरण, चिन्तनकी ही भाँति केवल नामके द्वारा उनकी आराधना, पूजा-उपासना करनेका भी शास्त्रोंमें विशेषरूपसे वर्णन मिलता है।

जैसे भगवान्‌के पूजन-अर्चनमें सहस्त्रनामस्तोत्रका जप तथा सहस्त्रार्चनपूजापद्धतिकी विशेष प्रसिद्धि पुराणों तथा तन्त्रागमोंमें मिलती है, वैसे ही उन्हीं ग्रन्थोंमें विभिन्न देवी-देवताओंके शतनाम अथवा अष्टोत्तरशतनामजप तथा शतार्चनपूजापद्धतिका भी विशेष विधान मिलता है। कारण, शतनामोंद्वारा अल्प समयमें ही सुगमतापूर्वक शतार्चनपूजा की जा सकती है। शतनामोंद्वारा पूजा-अर्चना करने अथवा उनका जप, पाठादि करनेकी अपार महिमा उन स्तोत्रोंके अन्तमें फलश्रुतिके रूपमें वर्णित है।

हमारे शास्त्रोंमें पंचदेवोंकी मान्यता पूर्णब्रह्मके रूपमें है, इसीलिये इन पंचदेवोंमेंसे किसी एकको अपना इष्ट बनाकर उपासना करनेकी पद्धति है। गणेश, विष्णु, शिव, शक्ति और सूर्य—इन पंचदेवोंके अन्तर्गत सभी देवी-देवताओंका अन्तर्भाव हो जाता है, इसलिये इन देवोंके 'शतनामस्तोत्र' भक्तजनोंके कल्याणके लिये अपने आर्ष-ग्रन्थोंमें प्राप्त होते हैं, जिनका पाठ भी किया जाता है तथा इनकी

नामावलीसे अर्चा-पूजा भी की जाती है। इन देवोंका शतनामार्चन विशिष्ट सामग्रीद्वारा करनेका अपने शास्त्रोंमें विधान मिलता है और उसकी विशेष महिमा भी बतायी गयी है। जैसे—विभिन्न कामनाओंकी पूर्तिके लिये गणपतिका शतनामार्चन दूर्वा, लावा अथवा मोदक आदिसे करनेका विधान है; तुलसीदलके द्वारा भगवान् विष्णुके शतनामार्चनका विशेष महत्त्व माना गया है। इसी प्रकार भगवान् सदाशिवका शतनामार्चन बिल्वपत्रादिद्वारा करना प्रशस्त है। भगवान् सूर्यनारायणका शतनामार्चन कमलपुष्पसे किया जाता है तथा भगवती दुर्गा जपापुष्प तथा कुंकुम-अक्षतादिके द्वारा शतनामार्चन करनेसे प्रसन्न होती हैं। इन देवोंके विभिन्न अवतार भी हुए हैं और अनेक नाम-रूपोंमें इनकी उपासना करनेकी विधि भी है, जैसे भगवती आदिशक्तिकी आराधना सरस्वती, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, ललिता, भवानी, गंगा, राधा तथा सीता आदि अनेक नामरूपोंमें की जा सकती है। इसी प्रकार गणेश, सूर्य, शिव और विष्णुके भी अनेक नाम और स्वरूप अपने शास्त्रोंमें प्राप्त हैं, अतः सभीके शतनामस्तोत्र ग्रन्थोंमें उपलब्ध हैं।

गीताप्रेसके द्वारा पूर्वमें कुछ देवोंके शतनामस्तोत्र विभिन्न पुस्तकोंके अन्तर्गत यत्र-तत्र प्रकाशित हुए हैं; परंतु इनका एकत्र संकलन कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। जबकि आजके व्यस्तताके युगमें इसका विशेष महत्त्व प्रतीत होता है। इस बार यह प्रयास किया गया कि विभिन्न नाम-रूपोंमें ज्ञात देवी-देवताओंके यथासाध्य अधिकाधिक स्वरूपोंके शतनामस्तोत्रोंका संग्रह एक साथ प्रकाशित किया जाय। इसके साथ ही अर्चन-पूजनकी सुविधाकी दृष्टिसे इन स्तोत्रोंकी नामावली भी दी गयी है। संख्याकी दृष्टिसे इन नामावलियोंमें सौ अथवा इससे अधिक भी नाम प्राप्त हैं।

पाठकोंकी सुविधाकी दृष्टिसे संग्रहको तीन खण्डोंमें वर्गीकृत किया गया है। प्रथम खण्डमें देवताओं तथा उनके प्रमुख अवतारोंके सभी शतनामस्तोत्रोंको नामावलीसहित रखा गया है। द्वितीय खण्डमें दश महाविद्याओंसहित शक्ति-सम्बन्धी सभी शतनामस्तोत्र नामावली-

सहित समाहित हैं। तृतीय खण्ड विशेष है। इसके अन्तर्गत शिव, शक्ति, विष्णु तथा ब्रह्माके अष्टोत्तरशत दिव्य-क्षेत्रोंके चार स्तोत्र हैं। प्रत्येक दिव्य-क्षेत्रमें देवताका एक विशेष नाम है। इस प्रकार इन अष्टोत्तरशत-दिव्यस्थानीयनामस्तोत्रोंको भी नामावलियोंसहित प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। परिशिष्टमें श्रीअर्धनारीश्वर-अष्टोत्तरशत-नामस्तोत्रम् नामक स्तोत्रात्मकनामावली, काशीके द्वादश आदित्योंका नाम तथा 'प्रज्ञाविवर्धन' नामक स्तोत्र दिया गया है।

शतनामद्वारा उपासनाके लिये सर्वप्रथम स्तोत्रके प्रत्येक नामके प्रारम्भमें 'प्रणव' ( ॐ )* अथवा 'श्री' लगानेकी विधि है तथा प्रत्येक नामका चतुर्थ्यन्त रूप लिया जाता है अर्थात् चतुर्थी विभक्ति जो कि 'सम्प्रदान' कारककी बोधक होती है। किसी नामके अन्तमें चतुर्थी विभक्ति लगानेसे उस नाममें 'के लिये' का भाव और जुड़ जाता है। फिर अन्तमें नमनके भावसे 'नमः' जोड़ना चाहिये। इस पुस्तकमें इसी प्रकार नामावली बनायी गयी है।

वैसे शतनामद्वारा साधक चार प्रकारसे उपासना कर सकते हैं—१-नमन, २-पूजन, ३-तर्पण तथा ४-हवन। प्रत्येक नामके बाद अपनी अभीष्ट क्रियाके अनुसार निम्न चारोंमेंसे किसी एक पदका प्रयोग करना चाहिये—'नमन' के लिये 'नमः'; 'पूजन' के लिये 'पूजयामि'; 'तर्पण'के लिये 'तर्पयामि' तथा 'हवन'के लिये 'स्वाहा'। भावप्रधान होनेसे नमनके लिये 'नमः' जोड़कर ही नामावलियाँ इस पुस्तकमें दी गयी हैं।

शतनामस्तोत्रोंके पूर्व विनियोग, अंग-न्यास तथा ध्यानका मन्त्र भी यथासाध्य देनेका प्रयास किया गया है, जिनका प्रयोग शतार्चनमें करना चाहिये।

परमात्मप्रभुकी प्रसन्नताके निमित्त निष्काम भावसे किया गया शतनामस्तोत्रका पाठ तथा शतार्चन अनन्त फलदायक होता है।

आशा है भक्तजन इससे लाभान्वित होंगे।

—राधेश्याम खेमका

---

* स्त्रियों तथा जिनका यज्ञोपवीत नहीं हुआ है, उन्हें प्रत्येक नामके पहले 'ॐ' के स्थानपर 'श्री' शब्दका प्रयोग करना चाहिये।

॥ श्रीहरिः ॥

# संक्षिप्त प्रयोग-विधि

सर्वप्रथम स्नान आदिसे पवित्र हो जाय। जिन देवताके शतनामस्तोत्रका पाठ करना हो अथवा शतार्चन करना हो, उनकी प्रतिमाको अपने सम्मुख किसी काष्ठपीठ आदिपर यथाविधि स्थापित कर ले, अपने बैठनेका आसन भी लगा ले। पूजन आदिकी सभी सामग्रियोंको यथास्थान रखकर अपने आसनपर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठ जाय। दीपक जलाकर पूर्वाभिमुख रख दे और हाथ धो ले। '**दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते**' कहकर पुष्प अर्पितकर कर्मसाक्षी दीपकका पूजन कर ले। तिलक लगा ले तथा निम्न मन्त्रोंसे आचमन करे—

'**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।** तथा **ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर जल छिड़ककर मार्जन कर ले—

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
**यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥**

**ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।**

तदनन्तर दाहिने हाथमें जल, पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न संकल्प करे—

**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे ....नगरे/ग्रामे ....वैक्रमाब्दे ....संवत्सरे ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....देवप्रीत्यर्थं[1] शतनामस्तोत्रपाठं करिष्ये।** (यदि शतार्चन करना हो तो '**शतनामार्चनं करिष्ये**'—ऐसा बोलना चाहिये।)

हाथका जलाक्षत छोड़ दे। कार्यकी निर्विघ्न सिद्धिके लिये श्रीगणेशजीका स्मरण कर ले।

---

१-अगर किसी कामनाकी सिद्धिके लिये शतार्चन करना हो तो संकल्पमें '**यथेप्सितकार्यसिद्धिद्वारा ....देवप्रीत्यर्थं यथालब्धोपचारैः पूजनपूर्वकं ....द्रव्यैः शतार्चनं करिष्ये**'—ऐसी योजना कर ले।

जिन देवताका अर्चन-पूजन करना हो, उनके विनियोगका मन्त्र पढ़कर जल छोड़ना चाहिये तथा अंगन्यास करना चाहिये। विनियोग और अंगन्यासके मन्त्र यथासाध्य स्तोत्रोंके प्रारम्भमें लिखे गये हैं, जिनका उपयोग शतार्चनमें भी किया जा सकता है। यदि विनियोग एवं अंगन्यासके मन्त्र उपलब्ध न हों तो अधिकारानुसार गायत्रीमन्त्रके अनुसार भी कर सकते हैं।

स्तोत्रोंके साथ दिये गये ध्यानसे भक्तिभावपूर्वक देवताके स्वरूपका ध्यान करना चाहिये तथा निम्नलिखित मन्त्रोंसे पंचोपचार मानस-पूजन करके स्तोत्रका पाठ करना चाहिये—

**मानस-पूजन—**

**१-ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।**

(प्रभो! मैं पृथिवीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।)

**२-ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।**

(प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।)

**३-ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।**

(प्रभो! मैं वायुदेवके रूपमें धूप आपको प्रदान करता हूँ।)

**४-ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।**

(प्रभो! मैं अग्निदेवके रूपमें दीपक आपको प्रदान करता हूँ।)

**५-ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।**

(प्रभो! मैं अमृतके समान नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।)

**६-ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।**

(प्रभो! मैं सर्वात्माके रूपमें संसारके सभी उपचारोंको आपके चरणोंमें समर्पित करता हूँ।)

इन मन्त्रोंसे भावनापूर्वक मानसपूजा की जा सकती है।

शतार्चन करते समय उपलब्ध सामग्रियोंसे षोडशोपचार या पंचोपचारपूजन करना चाहिये, तदनन्तर शतनामावलीके प्रत्येक नाममन्त्रसे सामग्री इष्टदेवपर चढ़ाये। स्त्रियों तथा जिनका यज्ञोपवीत नहीं हुआ है, उन्हें प्रत्येक नामके पहले '**ॐ**' के स्थानपर '**श्री**' शब्दका प्रयोग करना चाहिये, जैसे—'**श्रीगणेश्वराय नमः**।' अन्तमें आरती, पुष्पांजलि तथा क्षमा-प्रार्थना करके अर्चनको पूर्ण करे।

# विषय-सूची

**प्रथम खण्ड —**

**द्वितीय खण्ड—**

**तृतीय खण्ड—**



**परिशिष्ट—**

॥ श्रीगणपतये नमः ॥

# श्रीगणपति-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

ओंकारसंनिभमिभाननमिन्दुभालं
मुक्ताग्रबिन्दुममलद्युतिमेकदन्तम् ।
लम्बोदरं कलचतुर्भुजमादिदेवं
ध्यायेन्महागणपतिं मतिसिद्धिकान्तम् ॥*

*स्तोत्र*

ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो महागणपतिस्तथा ।
विश्वकर्ता विश्वमुखो दुर्जयो धूर्जयो जयः ॥ १ ॥
सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ २ ॥
चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः ।
शम्भुतेजा यज्ञकायः सर्वात्मा सामबृंहितः ॥ ३ ॥
कुलाचलांसो व्योमनाभिः कल्पद्रुमवनालयः ।
निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः ॥ ४ ॥
पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ।
सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः ॥ ५ ॥
इक्षुचापधरः शूली कान्तिकन्दलिताश्रयः ।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् विजयावहः ॥ ६ ॥
कामिनीकामनाकाममालिनीकेलिलालितः ।
अमोघसिद्धिराधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ७ ॥

* ओंकार-सदृश, हाथीके-से मुखवाले तथा जिनके ललाटपर चन्द्रमा और बिन्दुतुल्य मुक्ता विराजमान है, जो बड़े तेजस्वी और एक दाँतवाले हैं, जिनका उदर लम्बा है, जिनकी चार सुन्दर भुजाएँ हैं, उन बुद्धि और सिद्धिके स्वामी आदिदेव गणेशजीका हम ध्यान करते हैं।

इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः॥ ८ ॥
कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कटिसूत्रभृत्।
कारुण्यदेहः कपिलो गुह्यागमनिरूपितः॥ ९ ॥
गुहाशयो गुहाब्धिस्थो घटकुम्भो घटोदरः।
पूर्णानन्दः परानन्दो धनदो धरणीधरः॥ १० ॥
बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः।
भव्यो भूतालयो भोगदाता चैव महामनाः॥ ११ ॥
वरेण्यो वामदेवश्च वन्द्यो वज्रनिवारणः।
विश्वकर्ता विश्वचक्षुर्हवनं हव्यकव्यभुक्॥ १२ ॥
स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पस्तथा सौभाग्यवर्धनः।
कीर्तिदः शोकहारी च त्रिवर्गफलदायकः॥ १३ ॥
चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुर्थीतिथिसम्भवः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ १४ ॥
कामरूपः कामगतिर्द्विरदो द्वीपरक्षकः।
क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता लयस्थो लड्डुकप्रियः॥ १५ ॥
प्रतिवादिमुखस्तम्भो दुष्टचित्तप्रसादनः।
भगवान् भक्तिसुलभो याज्ञिको याजकप्रियः॥ १६ ॥
इत्येवं देवदेवस्य गणराजस्य धीमतः।
शतमष्टोत्तरं नाम्नां सारभूतं प्रकीर्तितम्॥ १७ ॥
सहस्रनाम्नामाकृष्य मया प्रोक्तं मनोहरम्।
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय स्मृत्वा देवं गणेश्वरम्।
पठेत्स्तोत्रमिदं भक्त्या गणराजः प्रसीदति॥ १८ ॥

*॥ इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्रीगणपत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीगणपतये नमः ॥

# श्रीगणपति-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ गणेश्वराय नमः ।
२ ॐ गणक्रीडाय नमः ।
३ ॐ महागणपतये नमः ।
४ ॐ विश्वकर्त्रे नमः ।
५ ॐ विश्वमुखाय नमः ।
६ ॐ दुर्जयाय नमः ।
७ ॐ धूर्जयाय नमः ।
८ ॐ जयाय नमः ।
९ ॐ सुरूपाय नमः ।
१० ॐ सर्वनेत्राधिवासाय नमः ।
११ ॐ वीरासनाश्रयाय नमः ।
१२ ॐ योगाधिपाय नमः ।
१३ ॐ तारकस्थाय नमः ।
१४ ॐ पुरुषाय नमः ।
१५ ॐ गजकर्णकाय नमः ।
१६ ॐ चित्राङ्गाय नमः ।
१७ ॐ श्यामदशनाय नमः ।
१८ ॐ भालचन्द्राय नमः ।
१९ ॐ चतुर्भुजाय नमः ।
२० ॐ शम्भुतेजसे नमः ।
२१ ॐ यज्ञकायाय नमः ।
२२ ॐ सर्वात्मने नमः ।
२३ ॐ सामबृंहिताय नमः ।
२४ ॐ कुलाचलांसाय नमः ।
२५ ॐ व्योमनाभये नमः ।
२६ ॐ कल्पद्रुमवनालयाय नमः ।
२७ ॐ निम्ननाभये नमः ।
२८ ॐ स्थूलकुक्षये नमः ।
२९ ॐ पीनवक्षसे नमः ।
३० ॐ बृहद्भुजाय नमः ।
३१ ॐ पीनस्कन्धाय नमः ।
३२ ॐ कम्बुकण्ठाय नमः ।
३३ ॐ लम्बोष्ठाय नमः ।
३४ ॐ लम्बनासिकाय नमः ।
३५ ॐ सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः ।
३६ ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः ।
३७ ॐ इक्षुचापधराय नमः ।
३८ ॐ शूलिने नमः ।
३९ ॐ कान्तिकन्दलिता-
श्रयाय नमः ।
४० ॐ अक्षमालाधराय नमः ।
४१ ॐ ज्ञानमुद्रावते नमः ।
४२ ॐ विजयावहाय नमः ।
४३ ॐ कामिनीकामनाकाममा-
लिनीकेलिलालिताय नमः ।
४४ ॐ अमोघसिद्धये नमः ।
४५ ॐ आधाराय नमः ।
४६ ॐ आधाराधेयवर्जिताय नमः ।
४७ ॐ इन्दीवरदलश्यामाय नमः ।
४८ ॐ इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः ।
४९ ॐ कर्मसाक्षिणे नमः ।
५० ॐ कर्मकर्त्रे नमः ।

५१ ॐ कर्माकर्मफलप्रदाय नमः।
५२ ॐ कमण्डलुधराय नमः।
५३ ॐ कल्पाय नमः।
५४ ॐ कपर्दिने नमः।
५५ ॐ कटिसूत्रभृते नमः।
५६ ॐ कारुण्यदेहाय नमः।
५७ ॐ कपिलाय नमः।
५८ ॐ गुह्यागमनिरूपिताय नमः।
५९ ॐ गुहाशयाय नमः।
६० ॐ गुहाब्धिस्थाय नमः।
६१ ॐ घटकुम्भाय नमः।
६२ ॐ घटोदराय नमः।
६३ ॐ पूर्णानन्दाय नमः।
६४ ॐ परानन्दाय नमः।
६५ ॐ धनदाय नमः।
६६ ॐ धरणीधराय नमः।
६७ ॐ बृहत्तमाय नमः।
६८ ॐ ब्रह्मपराय नमः।
६९ ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
७० ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय नमः।
७१ ॐ भव्याय नमः।
७२ ॐ भूतालयाय नमः।
७३ ॐ भोगदात्रे नमः।
७४ ॐ महामनसे नमः।
७५ ॐ वरेण्याय नमः।
७६ ॐ वामदेवाय नमः।
७७ ॐ वन्द्याय नमः।
७८ ॐ वज्रनिवारणाय नमः।
७९ ॐ विश्वकर्त्रे नमः।
८० ॐ विश्वचक्षुषे नमः।
८१ ॐ हवनाय नमः।
८२ ॐ हव्यकव्यभुजे नमः।
८३ ॐ स्वतन्त्राय नमः।
८४ ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः।
८५ ॐ सौभाग्यवर्धनाय नमः।
८६ ॐ कीर्तिदाय नमः।
८७ ॐ शोकहारिणे नमः।
८८ ॐ त्रिवर्गफलदायकाय नमः।
८९ ॐ चतुर्बाहवे नमः।
९० ॐ चतुर्दन्ताय नमः।
९१ ॐ चतुर्थीतिथिसम्भवाय नमः।
९२ ॐ सहस्रशीर्षे पुरुषाय नमः।
९३ ॐ सहस्राक्षाय नमः।
९४ ॐ सहस्रपादे नमः।
९५ ॐ कामरूपाय नमः।
९६ ॐ कामगतये नमः।
९७ ॐ द्विरदाय नमः।
९८ ॐ द्वीपरक्षकाय नमः।
९९ ॐ क्षेत्राधिपाय नमः।
१०० ॐ क्षमाभर्त्रे नमः।
१०१ ॐ लयस्थाय नमः।
१०२ ॐ लड्डुकप्रियाय नमः।
१०३ ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः।
१०४ ॐ दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः।
१०५ ॐ भगवते नमः।
१०६ ॐ भक्तिसुलभाय नमः।
१०७ ॐ याज्ञिकाय नमः।
१०८ ॐ याजकप्रियाय नमः।

*॥ इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्रीगणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीशिवाय नमः ॥

# श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥*

*स्तोत्र*

**शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः।
वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः॥ १॥
शङ्करः शूलपाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णुवल्लभः।
शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः॥ २॥
भवः शर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः।
उग्रः कपालिः कामारिरन्धकासुरसूदनः॥ ३॥
गङ्गाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः॥ ४॥
कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः।
वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः॥ ५॥
सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः॥ ६॥**

---

* चाँदीके पर्वतके समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमाको आभूषणरूपसे धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारोंसे जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथोंमें परशु तथा मृग, वर और अभय मुद्राएँ हैं, जो प्रसन्न हैं, पद्मके आसनपर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघकी खाल पहनते हैं, जो विश्वके आदि, जगत्की उत्पत्तिके बीज और समस्त भयोंको हरनेवाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वरका प्रतिदिन ध्यान करे।

हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः॥ ७ ॥
हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः।
भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः॥ ८ ॥
कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः।
मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः॥ ९ ॥
व्योमकेशो महासेनजनकश्चारुविक्रमः।
रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बरः॥ १० ॥
अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः।
शाश्वतः खण्डपरशुरजपाशविमोचकः॥ ११ ॥
मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययः प्रभुः।
पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः॥ १२ ॥
भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
अपवर्गप्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः॥ १३ ॥
इमानि दिव्यनामानि जप्यन्ते सर्वदा मया।
नामकल्पलतेयं मे सर्वाभीष्टप्रदायिनी॥ १४ ॥
नामान्येतानि सुभगे शिवदानि न संशयः।
वेदसर्वस्वभूतानि नामान्येतानि वस्तुतः॥ १५ ॥
एतानि यानि नामानि तानि सर्वार्थदान्यतः।
जप्यन्ते सादरं नित्यं मया नियमपूर्वकम्॥ १६ ॥
वेदेषु शिवनामानि श्रेष्ठान्यघहराणि च।
सन्त्यनन्तानि सुभगे वेदेषु विविधेष्वपि॥ १७ ॥
तेभ्यो नामानि संगृह्य कुमाराय महेश्वरः।
अष्टोत्तरसहस्रं तु नाम्नामुपदिशत् पुरा॥ १८ ॥

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीशिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीशिवाय नमः ॥

# श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ शिवाय नमः।
२ ॐ महेश्वराय नमः।
३ ॐ शम्भवे नमः।
४ ॐ पिनाकिने नमः।
५ ॐ शशिशेखराय नमः।
६ ॐ वामदेवाय नमः।
७ ॐ विरूपाक्षाय नमः।
८ ॐ कपर्दिने नमः।
९ ॐ नीललोहिताय नमः।
१० ॐ शङ्कराय नमः।
११ ॐ शूलपाणिने नमः।
१२ ॐ खट्वाङ्गिने नमः।
१३ ॐ विष्णुवल्लभाय नमः।
१४ ॐ शिपिविष्टाय नमः।
१५ ॐ अम्बिकानाथाय नमः।
१६ ॐ श्रीकण्ठाय नमः।
१७ ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
१८ ॐ भवाय नमः।
१९ ॐ शर्वाय नमः।
२० ॐ त्रिलोकेशाय नमः।
२१ ॐ शितिकण्ठाय नमः।
२२ ॐ शिवाप्रियाय नमः।
२३ ॐ उग्राय नमः।
२४ ॐ कपालिने नमः।
२५ ॐ कामारये नमः।
२६ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः।
२७ ॐ गङ्गाधराय नमः।
२८ ॐ ललाटाक्षाय नमः।
२९ ॐ कालकालाय नमः।
३० ॐ कृपानिधये नमः।
३१ ॐ भीमाय नमः।
३२ ॐ परशुहस्ताय नमः।
३३ ॐ मृगपाणये नमः।
३४ ॐ जटाधराय नमः।
३५ ॐ कैलासवासिने नमः।
३६ ॐ कवचिने नमः।
३७ ॐ कठोराय नमः।
३८ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः।
३९ ॐ वृषाङ्काय नमः।
४० ॐ वृषभारूढाय नमः।
४१ ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः।
४२ ॐ सामप्रियाय नमः।
४३ ॐ स्वरमयाय नमः।
४४ ॐ त्रयीमूर्तये नमः।
४५ ॐ अनीश्वराय नमः।
४६ ॐ सर्वज्ञाय नमः।
४७ ॐ परमात्मने नमः।
४८ ॐ सोमलोचनाय नमः।
४९ ॐ सूर्यलोचनाय नमः।
५० ॐ अग्निलोचनाय नमः।
५१ ॐ हविर्यज्ञमयाय नमः।
५२ ॐ सोमाय नमः।

५३ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः।
५४ ॐ सदाशिवाय नमः।
५५ ॐ विश्वेश्वराय नमः।
५६ ॐ वीरभद्राय नमः।
५७ ॐ गणनाथाय नमः।
५८ ॐ प्रजापतये नमः।
५९ ॐ हिरण्यरेतसे नमः।
६० ॐ दुर्धर्षाय नमः।
६१ ॐ गिरीशाय नमः।
६२ ॐ गिरिशाय नमः।
६३ ॐ अनघाय नमः।
६४ ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः।
६५ ॐ भर्गाय नमः।
६६ ॐ गिरिधन्विने नमः।
६७ ॐ गिरिप्रियाय नमः।
६८ ॐ कृत्तिवाससे नमः।
६९ ॐ पुरारातये नमः।
७० ॐ भगवते नमः।
७१ ॐ प्रमथाधिपाय नमः।
७२ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः।
७३ ॐ सूक्ष्मतनवे नमः।
७४ ॐ जगद्व्यापिने नमः।
७५ ॐ जगद्गुरवे नमः।
७६ ॐ व्योमकेशाय नमः।
७७ ॐ महासेनजनकाय नमः।
७८ ॐ चारुविक्रमाय नमः।
७९ ॐ रुद्राय नमः।
८० ॐ भूतपतये नमः।
८१ ॐ स्थाणवे नमः।
८२ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
८३ ॐ दिगम्बराय नमः।
८४ ॐ अष्टमूर्तये नमः।
८५ ॐ अनेकात्मने नमः।
८६ ॐ सात्त्विकाय नमः।
८७ ॐ शुद्धविग्रहाय नमः।
८८ ॐ शाश्वताय नमः।
८९ ॐ खण्डपरशवे नमः।
९० ॐ अजपाशविमोचकाय नमः।
९१ ॐ मृडाय नमः।
९२ ॐ पशुपतये नमः।
९३ ॐ देवाय नमः।
९४ ॐ महादेवाय नमः।
९५ ॐ अव्ययाय नमः।
९६ ॐ प्रभवे नमः।
९७ ॐ पूषदन्तभिदे नमः।
९८ ॐ अव्यग्राय नमः।
९९ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः।
१०० ॐ हराय नमः।
१०१ ॐ भगनेत्रभिदे नमः।
१०२ ॐ अव्यक्ताय नमः।
१०३ ॐ सहस्राक्षाय नमः।
१०४ ॐ सहस्रपादे नमः।
१०५ ॐ अपवर्गप्रदाय नमः।
१०६ ॐ अनन्ताय नमः।
१०७ ॐ तारकाय नमः।
१०८ ॐ परमेश्वराय नमः।

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीशिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीकार्तिकेयाय नमः ॥

# श्रीकार्तिकेय-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

सिन्दूरारुणकान्तिमिन्दुवदनं केयूरहारादिभि-
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गस्य सौख्यप्रदम्।
अम्भोजाभयशक्तिकुक्कुटधरं रक्ताङ्गरागांशुकं
सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥*

*स्तोत्र*

विश्वामित्रस्तु भगवान् कुमारं शरणं गतः॥ १॥
स्तवं दिव्यं सम्प्रचक्रे महासेनस्य चापि सः।
अष्टोत्तरशतनाम्नां शृणु त्वं तानि फाल्गुन॥ २॥
जपेन येषां पापानि यान्ति ज्ञानमवाप्नुयात्।
त्वं ब्रह्मवादी त्वं ब्रह्मा ब्रह्मब्राह्मणवत्सलः॥ ३॥
ब्रह्मण्यो ब्रह्मदेवश्च ब्रह्मदो ब्रह्मसंग्रहः।
त्वं परं परमं तेजो मङ्गलानाञ्च मङ्गलम्॥ ४॥
अप्रमेयगुणश्चैव मन्त्राणां मन्त्रगो भवान्।
त्वं सावित्रीमयो देवः सर्वत्रैवापराजितः॥ ५॥
मन्त्रः सर्वात्मको देवः षडक्षरवतां वरः।
गवां पुत्रः सुरारिघ्नः सम्भवो भवभावनः॥ ६॥

---

* सिन्दूरके समान अरुणकान्तिसे युक्त, चन्द्रमातुल्य मुखमण्डलवाले, केयूर-हार आदि दिव्य आभरणोंसे सुशोभित शरीरवाले, स्वर्गका सुख प्रदान करनेवाले, हाथोंमें कमल, अभय मुद्रा, शक्ति एवं कुक्कुट धारण करनेवाले, रक्तवर्णके अंगराग तथा परिधानसे सुशोभित, प्रणाम करनेवालोंके भयका नाश करनेके लिये सदा तत्पर भगवान् सुब्रह्मण्यकी मैं उपासना करता हूँ।

पिनाकी शत्रुहा चैव कूटः स्कन्दः सुराग्रणीः।
द्वादशो भूर्भुवो भावी भुवःपुत्रो नमस्कृतः॥ ७ ॥
नागराजः सुधर्मात्मा नाकपृष्ठः सनातनः।
हेमगर्भो महागर्भो जयश्च विजयेश्वरः॥ ८ ॥
त्वं कर्ता त्वं विधाता च नित्योऽनित्योऽरिमर्दनः।
महासेनो महातेजा वीरसेनश्चमूपतिः॥ ९ ॥
सुरसेनः सुराध्यक्षो भीमसेनो निरामयः।
शौरिर्यदुर्महातेजा वीर्यवान्सत्यविक्रमः॥ १० ॥
तेजोगर्भोऽसुररिपुः सुरमूर्तिः सुरोर्जितः।
कृतज्ञो वरदः सत्यः शरण्यः साधुवत्सलः॥ ११ ॥
सुव्रतः सूर्यसङ्काशो वह्निगर्भो रणोत्सुकः।
पिप्पली शीघ्रगो रौद्रिर्गाङ्गेयो रिपुदारणः॥ १२ ॥
कार्तिकेयः प्रभुः क्षान्तो नीलदंष्ट्रो महामनाः।
निग्रहो निग्रहाणाञ्च नेता त्वं दैत्यसूदनः॥ १३ ॥
प्रग्रहः परमानन्दः क्रोधघ्नस्तारकोच्छिदः।
कुक्कुटी बहुलो वादी कामदो भूरिवर्धनः॥ १४ ॥
अमोघोऽमृतदो ह्यग्निः शत्रुघ्नः सर्वबोधनः।
अनघो ह्यमरः श्रीमानुन्नतो ह्यग्निसम्भवः॥ १५ ॥
पिशाचराजः सूर्याभः शिवात्मा त्वं सनातनः।
एवं स सर्वभूतानां संस्तुतः परमेश्वरः॥ १६ ॥

नाम्नामष्टशतेनायं विश्वामित्रमहर्षिणा।
प्रसन्नमूर्तिराहेदं मुनीन्द्र व्रियतामिति॥ १७॥
मम त्वया द्विजश्रेष्ठ स्तुतिरेषा विनिर्मिता।
भविष्यति मनोभीष्टप्राप्तये प्राणिनां भुवि॥ १८॥
विवर्धते कुले लक्ष्मीस्तस्य यः प्रपठेदिमम्।
न राक्षसाः पिशाचा वा न भूतानि न चापदः॥ १९॥
विघ्नकारीणि तद्गेहे यत्रैवं संस्तुवन्ति माम्।
दुःस्वप्नं न च पश्येत्स बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥ २०॥
स्तवस्यास्य प्रभावेण दिव्यभावः पुमान्भवेत्।

*॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे माहेश्वरखण्डान्तर्गते कुमारिकाखण्डे श्रीकार्तिकेयाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीकार्तिकेयाय नमः ॥

# श्रीकार्तिकेय-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ ब्रह्मवादिने नमः।
२ ॐ ब्रह्मणे नमः।
३ ॐ ब्रह्मब्राह्मणवत्सलाय नमः।
४ ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
५ ॐ ब्रह्मदेवाय नमः।
६ ॐ ब्रह्मदाय नमः।
७ ॐ ब्रह्मसंग्रहाय नमः।
८ ॐ पराय नमः।
९ ॐ परमाय तेजसे नमः।
१० ॐ मङ्गलानाञ्च मङ्गलाय नमः।
११ ॐ अप्रमेयगुणाय नमः।
१२ ॐ मन्त्राणां मन्त्रगाय नमः।
१३ ॐ सावित्रीमयाय देवाय नमः।
१४ ॐ सर्वत्रैवापराजिताय नमः।
१५ ॐ मन्त्राय नमः।
१६ ॐ सर्वात्मकाय नमः।
१७ ॐ देवाय नमः।
१८ ॐ षडक्षरवतां वराय नमः।
१९ ॐ गवां पुत्राय नमः।
२० ॐ सुरारिघ्नाय नमः।
२१ ॐ सम्भवाय नमः।
२२ ॐ भवभावनाय नमः।
२३ ॐ पिनाकिने नमः।
२४ ॐ शत्रुघ्ने नमः।
२५ ॐ कूटाय नमः।
२६ ॐ स्कन्दाय नमः।
२७ ॐ सुराग्रण्ये नमः।
२८ ॐ द्वादशाय नमः।
२९ ॐ भुवे नमः।
३० ॐ भुवाय नमः।
३१ ॐ भाविने नमः।
३२ ॐ भुवःपुत्राय नमः।
३३ ॐ नमस्कृताय नमः।
३४ ॐ नागराजाय नमः।
३५ ॐ सुधर्मात्मने नमः।
३६ ॐ नाकपृष्ठाय नमः।
३७ ॐ सनातनाय नमः।
३८ ॐ हेमगर्भाय नमः।
३९ ॐ महागर्भाय नमः।
४० ॐ जयाय नमः।
४१ ॐ विजयेश्वराय नमः।
४२ ॐ कर्त्रे नमः।
४३ ॐ विधात्रे नमः।
४४ ॐ नित्याय नमः।
४५ ॐ अनित्याय नमः।
४६ ॐ अरिमर्दनाय नमः।
४७ ॐ महासेनाय नमः।
४८ ॐ महातेजसे नमः।
४९ ॐ वीरसेनाय नमः।
५० ॐ चमूपतये नमः।
५१ ॐ सुरसेनाय नमः।
५२ ॐ सुराध्यक्षाय नमः।

५३ ॐ भीमसेनाय नमः।
५४ ॐ निरामयाय नमः।
५५ ॐ शौरये नमः।
५६ ॐ यदवे नमः।
५७ ॐ महातेजसे नमः।
५८ ॐ वीर्यवते नमः।
५९ ॐ सत्यविक्रमाय नमः।
६० ॐ तेजोगर्भाय नमः।
६१ ॐ असुररिपवे नमः।
६२ ॐ सुरमूर्तये नमः।
६३ ॐ सुरोर्जिताय नमः।
६४ ॐ कृतज्ञाय नमः।
६५ ॐ वरदाय नमः।
६६ ॐ सत्याय नमः।
६७ ॐ शरण्याय नमः।
६८ ॐ साधुवत्सलाय नमः।
६९ ॐ सुव्रताय नमः।
७० ॐ सूर्यसङ्काशाय नमः।
७१ ॐ वह्निगर्भाय नमः।
७२ ॐ रणोत्सुकाय नमः।
७३ ॐ पिप्पलिने नमः।
७४ ॐ शीघ्रगाय नमः।
७५ ॐ रौद्रये नमः।
७६ ॐ गाङ्गेयाय नमः।
७७ ॐ रिपुदारणाय नमः।
७८ ॐ कार्तिकेयाय नमः।
७९ ॐ प्रभवे नमः।
८० ॐ क्षान्ताय नमः।
८१ ॐ नीलदंष्ट्राय नमः।
८२ ॐ महामनसे नमः।
८३ ॐ निग्रहाय नमः।
८४ ॐ निग्रहाणां नेत्रे नमः।
८५ ॐ दैत्यसूदनाय नमः।
८६ ॐ प्रग्रहाय नमः।
८७ ॐ परमानन्दाय नमः।
८८ ॐ क्रोधघ्नाय नमः।
८९ ॐ तारकोच्छिदाय नमः।
९० ॐ कुक्कुटिने नमः।
९१ ॐ बहुलाय नमः।
९२ ॐ वादिने नमः।
९३ ॐ कामदाय नमः।
९४ ॐ भूरिवर्धनाय नमः।
९५ ॐ अमोघाय नमः।
९६ ॐ अमृतदाय नमः।
९७ ॐ अग्नये नमः।
९८ ॐ शत्रुघ्नाय नमः।
९९ ॐ सर्वबोधनाय नमः।
१०० ॐ अनघाय नमः।
१०१ ॐ अमराय नमः।
१०२ ॐ श्रीमते नमः।
१०३ ॐ उन्नताय नमः।
१०४ ॐ अग्निसम्भवाय नमः।
१०५ ॐ पिशाचराजाय नमः।
१०६ ॐ सूर्याभाय नमः।
१०७ ॐ शिवात्मने नमः।
१०८ ॐ सनातनाय नमः।

*॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे माहेश्वरखण्डान्तर्गते कुमारिकाखण्डे श्रीकार्तिकेयाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीबटुकभैरवाय नमः ॥

# श्रीबटुकभैरव-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

## [ आपदुद्धारणबटुकभैरवस्तोत्रम् ]

ॐ मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्॥ १ ॥

*श्रीपार्वत्युवाच*

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रागमादिषु।
आपदुद्धारणं मन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्॥ २ ॥
सर्वेषां चैव भूतानां हितार्थं वाञ्छितं मया।
विशेषतस्तु राज्ञां वै शान्तिपुष्टिप्रसाधनम्॥ ३ ॥
अङ्गन्यासकरन्यासदेहन्याससमन्वितम्।
वक्तुमर्हसि देवेश मम हर्षविवर्धन॥ ४ ॥

*ईश्वर उवाच*

शृणु देवि महामन्त्रमापदुद्धारहेतुकम्।
सर्वदुःखप्रशमनं सर्वशत्रुविनाशनम्॥ ५ ॥
अपस्मारादिरोगाणां ज्वरादीनां विशेषतः।
नाशनं स्मृतिमात्रेण मन्त्रराजमिमं प्रिये॥ ६ ॥
ग्रहरोगभयानां च नाशनं सुखवर्धनम्।
स्नेहाद्वक्ष्यामि ते मन्त्रं सर्वसारमिमं प्रिये॥ ७ ॥
सर्वकामार्थदं पुण्यं राज्यभोगप्रदं नृणाम्।
आपदुद्धारणमिति मन्त्रं वक्ष्याम्यशेषतः॥ ८ ॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य देवीप्रणवमुद्धरेत्।
बटुकायेति वै पश्चादापदुद्धारणाय च॥ ९ ॥

कुरुद्वयं ततः पश्चाद् बटुकाय पुनः क्षिपेत् *।
देवीप्रणवमुद्धृत्य मन्त्रोद्धारमिमं प्रिये॥ १०॥
मन्त्रोद्धारमिमं देवि त्रैलोक्ये चातिदुर्लभम्।
अप्रकाश्यमिमं मन्त्रं सर्वशक्तिसमन्वितम्॥ ११॥
स्मरणादेव मन्त्रस्य भूतप्रेतपिशाचकाः।
विद्रवन्त्यतिभीता वै कालरुद्रादिव प्रजाः॥ १२॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि पूजयेद्वापि पुस्तकम्।
नाग्निचौरभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा॥ १३॥
न च मारीभयं किञ्चित्सर्वत्र सुखवान्भवेत्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रादिसम्पदः॥ १४॥
भवन्ति सततं तस्य पुस्तकस्यापि पूजनात्।
न दारिद्र्यं न दौर्भाग्यं नापदां भयमेव च॥ १५॥

*पार्वत्युवाच*

क एष भैरवो नाम आपदुद्धारणो मतः।
त्वया च कथितो देव भैरवः कल्पवित्तमः॥ १६॥
तस्य नामसहस्राणि अयुतान्यर्बुदानि च।
सारमुद्धृत्य तेषां वै नामाष्टशतकं वद॥ १७॥
यानि संकीर्तयन्मर्त्यः सर्वदुःखविवर्जितः।
सर्वान्कामानवाप्नोति साधकः सिद्धिमेव च॥ १८॥

*ईश्वर उवाच*

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः।
आपदुद्धारणस्येदं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १९॥

* मन्त्र—ॐह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ।

सर्वपापहरं पुण्यं सर्वापत्तिविनाशनम्।
सर्वकामार्थदं देवि साधकानां सुखावहम्॥ २०॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वोपद्रवनाशनम्।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्रीकरं च यशस्करम्॥ २१॥
नामाष्टकशतस्यास्यच्छन्दोऽनुष्टुप्प्रकीर्तितम्।
बृहदारण्यको नाम ऋषिर्देवोऽथ भैरवः॥ २२॥
अष्टबाहुं त्रिनयनमिति बीजं समाहितम्।
शक्तिकं कीलकं शेषमिष्टसिद्धौ नियोजयेत्॥ २३॥
सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थं विनियोगः प्रकीर्तितः।
देहान्तन्यासकं चैव पूर्वं कुर्याच्च साधकः॥ २४॥
ह्रीं बीजं बटुकः शक्तिः प्रणवः कीलकं मतम्।
आरोग्यायुरभीष्टश्रीसिद्ध्यर्थं विनियुज्यते॥ २५॥
भैरवं मूर्ध्नि विन्यस्य ललाटे भीमदर्शनम्।
नेत्रयोर्भूतहननं सारमेयानुगं भ्रुवोः॥ २६॥
कर्णयोर्भूतनाथं च प्रेतवाहं कपोलयोः।
नासापुटौष्ठयोश्चैव भस्माङ्गं सर्पभूषणम्॥ २७॥
अनादिनाथं सौम्ये च शक्तिहस्तं गले न्यसेत्।
स्कन्धयोर्दैत्यशमनं बाह्वोरतुलतेजसम्॥ २८॥
पाण्योः कपालिनं न्यस्य हृदये मुण्डमालिनम्।
शान्तं वक्षःस्थले न्यस्य स्तनयोः कामचारिणम्॥ २९॥
उदरे च सदा तुष्टं क्षेत्रेशं पार्श्वयोस्तथा।
क्षेत्रपालं पृष्ठदेशे क्षेत्रज्ञं नाभिदेशके॥ ३०॥

पापौघनाशनं कट्यां बटुकं लिङ्गदेशके।
गुदे रक्षाकरं न्यस्य तथोर्वो रक्तलोचनम्॥ ३१॥
जानुनोर्घुर्घुरारावं जङ्घयो रक्तपाणिकम्।
गुल्फयोः पादुकासिद्धं पादपृष्ठे सुरेश्वरम्॥ ३२॥
आपादमस्तकं चैव आपदुद्धारकं तथा।
पूर्वे डमरुहस्तं च दक्षिणे दण्डधारिणम्॥ ३३॥
खड्गहस्तं पश्चिमे च घण्टावादिनमुत्तरे।
आग्नेय्यामग्निवर्णं च नैर्ऋत्यां च दिगम्बरम्॥ ३४॥
वायव्यां सर्वभूतस्थमैशान्यां चाष्टसिद्धिदम्।
ऊर्ध्वं खेचारिणं न्यस्य पाताले रौद्ररूपिणम्॥ ३५॥
एवं न्यस्य च देहे स्वे षडङ्गेषु ततो न्यसेत्।
रुद्रमङ्गुष्ठयोर्न्यस्य तर्जन्योस्तु शिखीमुखम्॥ ३६॥
शिवं मध्यमयोर्न्यस्यानामिकायां त्रिशूलिनम्।
ब्रह्माणं तु कनिष्ठायां तलयोस्त्रिपुरान्तकम्॥ ३७॥
मांसाशिनं कराग्रे तु करपृष्ठे दिगम्बरम्।
हृदये भूतनाथाय आदिनाथाय मूर्धनि॥ ३८॥
आनन्दपदपूर्वाय नाथायाथ शिखासु च।
सिद्धस्थावरनाथाय कवचे विन्यसेत्तथा॥ ३९॥
सहजानन्दनाथाय न्यसेन्नेत्रत्रयेषु च।
परमानन्दनाथाय अस्त्रं चैव प्रयोजयेत्॥ ४०॥
एवं न्यासविधिं कृत्वा यथावत्तदनन्तरम्।
ध्यायेच्चैव महेशानि साधकः सर्वसिद्धये॥ ४१॥

ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठेन्नरः।
शुद्धस्फटिकसङ्काशं सहस्रादित्यवर्चसम्॥ ४२॥
नीलजीमूतसङ्काशं नीलाञ्जनसमप्रभम्।
अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम्॥ ४३॥
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसङ्कुलम्।
भुजङ्गमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम्॥ ४४॥
दिगम्बरं कुमारेशं बटुकाख्यं महाबलम्।
खट्वाङ्गमसिपाशौ च शूलं दक्षिणभागतः॥ ४५॥
डमरुं च कपालं च वरदं भुजगं तथा।
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम्॥ ४६॥
ध्यात्वा जपेत्सुसन्तुष्टः सर्वान्कामानवाप्नुयात्॥ ४७॥

*सात्त्विक-ध्यान*

वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुन्तलोद्भासिवक्त्रं
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किङ्किणीनूपुराढ्यैः।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं महेशं
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलखड्गौ दधानम्*॥ ४८॥

*राजस-ध्यान*

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्ताङ्गरागस्रजं
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलं दधानं करैः।

* स्फटिक मणिके समान आभावाले, केशोंसे सुशोभित दीप्तिमान् मुखवाले, नवीन मणिमय घुँघरू, नूपुर आदि दिव्य आभूषणोंसे प्रकाशित शरीरवाले, कमलसदृश हाथोंमें त्रिशूल और खड्ग धारण करनेवाले, विशाल मुखवाले, बालरूप, सदा प्रसन्न रहनेवाले महेश्वर बटुकभैरवकी मैं सदा वन्दना करता हूँ।

नीलग्रीवमुदारभूषणयुतं शीतांशुखण्डोज्ज्वलं
बन्धूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावयेत्[१] ॥ ४९ ॥

*तामस-ध्यान*

ध्यायेत्त्रैलोक्यकान्तं शशिशकलधरं मुण्डमालं महेशं
दिग्वस्त्रं पिङ्गकेशं डमरुमथ सृणिं शूलखड्गौ दधानम्।
नागं घण्टां कपालं करसरसिरुहैर्बिभ्रतं भीमदंष्ट्रं
सर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किङ्किणीनूपुराढ्यम्[२] ॥ ५० ॥

*स्वरूप-ध्यान*

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्[३] ॥ ५१ ॥
ध्यात्वा जपेत्सुसंहृष्टः सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
आयुरारोग्यमैश्वर्यसिद्ध्यर्थं विनियोजयेत् ॥ ५२ ॥

---

१. उदीयमान सूर्यके समान प्रभावाले, तीन नेत्रवाले, रक्त चन्दनकी मालासे शोभित, हास्यमय मुखवाले, हाथोंमें वरदमुद्रा, कपाल, अभयमुद्रा तथा त्रिशूल धारण करनेवाले, नील कण्ठवाले, प्रशस्त आभूषणोंसे युक्त, चन्द्रकलाद्वारा उज्ज्वल प्रतीत होनेवाले, बन्धूक पुष्पके समान लाल वस्त्र धारण करनेवाले और भयहर्ता भैरवदेवका सदा ध्यान करना चाहिये।

२. चन्द्रकलासे सुशोभित, मुण्डमाला पहने हुए, दिशारूपी वस्त्रसे सुशोभित, पिंगल वर्णके केशवाले, करकमलोंमें डमरू, अंकुश, शूल, खड्ग, नाग, घण्टा, कपाल धारण करनेवाले, भयानक दाढ़ोंवाले, सर्पाभूषणों एवं मणिमय घुँघरूदार नूपुरोंसे सुशोभित तथा तीन नेत्रोंवाले त्रिलोकीपति महेशका ध्यान करना चाहिये।

३. हाथोंमें कपाल और दण्ड धारण किये हुए, कानोंमें कुण्डल धारण करनेवाले, घनीभूत अन्धकारके सदृश नीलवर्णके सर्पका यज्ञोपवीत पहने हुए, सविधि यज्ञमें प्रवृत्त पूजकोंके विघ्न निवारण करनेवाले और साधकोंको सिद्धि प्रदान करनेवाले बटुकनाथकी जय हो।

*विनियोग*

*अस्य श्रीबटुकभैरवनामाष्टशतकापदुद्धारणस्तोत्रमन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः, श्रीबटुकभैरवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ह्रीं बीजम्, बटुकायेति शक्तिः, प्रणवः कीलकम्, अभीष्टसिद्ध्यर्थे पाठे जपे विनियोगः।*

*करन्यास*

*ह्रां वाम् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट्। ह्रैं वैं अनामिकाभ्यां हुम्। ह्रौं वौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ह्रः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।*

*षडङ्गन्यास*

*ह्रां वां हृदयाय नमः। ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा। ह्रूं वूं शिखायै वषट्। ह्रैं वैं कवचाय हुम्। ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः वः अस्त्राय फट्।*

*नमस्कार*

**अतितीक्ष्ण महाकाय कल्पान्तदहनोपम।**
**भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥ १॥**
**शान्तं पद्मासनस्थं शशिमुकुटधरं चोन्नताङ्गं त्रिनेत्रं**
**शूलं खड्गं च वज्रं परशुमुसलके दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।**
**नागं पाशं च घण्टां नलिनकरयुतं साङ्कुशं वामभागे**
**नागालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं नौमि तत्त्वं शिवाख्यम्॥ २॥**
**॥ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय॥**

*स्तोत्र*

**ॐ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः।**
**क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट्॥ १॥**
**श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरान्तकः।**
**रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः॥ २॥**

कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः॥ ३ ॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः।
अभीरुर्भैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः॥ ४ ॥
धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभानवान्।
नागहारो नागकेशो व्योमकेशः कपालभृत्॥ ५ ॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः॥ ६ ॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः।
बटुको बहुवेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः॥ ७ ॥
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः॥ ८ ॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः॥ ९ ॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखा।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः॥ १० ॥
कङ्कालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥ ११ ॥
शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहा मुण्डभूषितः।
बलिभुग् बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः॥ १२ ॥

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी॥ १३॥
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः॥ १४॥
मया ते कथितं देवि रहस्यं सार्वकामिकम्।
य इदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ १५॥
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न च भूतभयं तथा।
न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा॥ १६॥
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित्।
पातकानां भयं नैव यः पठेत्स्तोत्रमुत्तमम्॥ १७॥
मारीभये राजभये तथा चौराग्निजे भये।
औत्पातिकभये चैव तथा दुःस्वप्नजे भये॥ १८॥
बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
सर्वं प्रशममायाति भयं भैरवकीर्तनात्॥ १९॥
एकादशसहस्त्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि संवत्सरमतन्द्रितः॥ २०॥
स सिद्धिमाप्नुयादिष्टां दुर्लभामपि मानवैः।
षण्मासाद्भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम्॥ २१॥
राजशत्रुविनाशार्थं जपेन्मासाष्टकं यदि।
रात्रौ वारत्रयं भृत्यो राजानं वशमानयेत्॥ २२॥

धनार्थं च सुतार्थं च दारार्थं यस्तु मानवः।
पठेन्मासत्रयं देवि वारमेकं तथा निशि॥ २३॥
धनं पुत्रांस्तथा दारान्प्राप्नुयान्नात्र संशयः।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्॥ २४॥
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सद्यो न संशयः।
निगडैश्चापि यो बद्धः कारागृहनिपातितः॥ २५॥
शृंखलाबन्धनं प्राप्तः पठेच्चेदं दिवानिशम्।
यान् यान्समीहते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोति निश्चितम्॥ २६॥
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित्।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिने॥ २७॥
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम्।
इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम्॥ २८॥
सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य प्रसादतः।
भैरवस्य प्रसन्नाभूत्सर्वलोकमहेश्वरी॥ २९॥
भैरवस्तु प्रहृष्टोऽभूत्सर्वज्ञः परमेश्वरः।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरी॥ ३०॥

*॥ इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे आपदुद्धारणं नाम श्रीबटुकभैरवाष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

# श्रीबटुकभैरव-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ भैरवाय नमः ।
२ ॐ भूतनाथाय नमः ।
३ ॐ भूतात्मने नमः ।
४ ॐ भूतभावनाय नमः ।
५ ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः ।
६ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।
७ ॐ क्षेत्रदाय नमः ।
८ ॐ क्षत्रियाय नमः ।
९ ॐ विराजे नमः ।
१० ॐ श्मशानवासिने नमः ।
११ ॐ मांसाशिने नमः ।
१२ ॐ खर्पराशिने नमः ।
१३ ॐ स्मरान्तकाय नमः ।
१४ ॐ रक्तपाय नमः ।
१५ ॐ पानपाय नमः ।
१६ ॐ सिद्धाय नमः ।
१७ ॐ सिद्धिदाय नमः ।
१८ ॐ सिद्धिसेविताय नमः ।
१९ ॐ कङ्कालाय नमः ।
२० ॐ कालशमनाय नमः ।
२१ ॐ कलाकाष्ठातनवे नमः ।
२२ ॐ कवये नमः ।
२३ ॐ त्रिनेत्राय नमः ।
२४ ॐ बहुनेत्राय नमः ।
२५ ॐ पिङ्गललोचनाय नमः ।
२६ ॐ शूलपाणये नमः ।
२७ ॐ खड्गपाणये नमः ।
२८ ॐ कङ्कालिने नमः ।
२९ ॐ धूम्रलोचनाय नमः ।
३० ॐ अभीरवे नमः ।
३१ ॐ भैरवीनाथाय नमः ।
३२ ॐ भूतपाय नमः ।
३३ ॐ योगिनीपतये नमः ।
३४ ॐ धनदाय नमः ।
३५ ॐ धनहारिणे नमः ।
३६ ॐ धनवते नमः ।
३७ ॐ प्रतिभानवते नमः ।
३८ ॐ नागहाराय नमः ।
३९ ॐ नागकेशाय नमः ।
४० ॐ व्योमकेशाय नमः ।
४१ ॐ कपालभृते नमः ।
४२ ॐ कालाय नमः ।
४३ ॐ कपालमालिने नमः ।
४४ ॐ कमनीयाय नमः ।
४५ ॐ कलानिधये नमः ।
४६ ॐ त्रिलोचनाय नमः ।
४७ ॐ ज्वलन्नेत्राय नमः ।
४८ ॐ त्रिशिखिने नमः ।
४९ ॐ त्रिलोकपाय नमः ।
५० ॐ त्रिनेत्रतनयाय नमः ।
५१ ॐ डिम्भाय नमः ।
५२ ॐ शान्ताय नमः ।

५३ ॐ शान्तजनप्रियाय नमः।
५४ ॐ बटुकाय नमः।
५५ ॐ बहुवेषाय नमः।
५६ ॐ खट्वाङ्गवरधारकाय नमः।
५७ ॐ भूताध्यक्षाय नमः।
५८ ॐ पशुपतये नमः।
५९ ॐ भिक्षुकाय नमः।
६० ॐ परिचारकाय नमः।
६१ ॐ धूर्ताय नमः।
६२ ॐ दिगम्बराय नमः।
६३ ॐ शौरिणे नमः।
६४ ॐ हरिणाय नमः।
६५ ॐ पाण्डुलोचनाय नमः।
६६ ॐ प्रशान्ताय नमः।
६७ ॐ शान्तिदाय नमः।
६८ ॐ सिद्धाय नमः।
६९ ॐ शङ्करप्रियबान्धवाय नमः।
७० ॐ अष्टमूर्तये नमः।
७१ ॐ निधीशाय नमः।
७२ ॐ ज्ञानचक्षुषे नमः।
७३ ॐ तपोमयाय नमः।
७४ ॐ अष्टाधाराय नमः।
७५ ॐ षडाधाराय नमः।
७६ ॐ सर्पयुक्ताय नमः।
७७ ॐ शिखीसख्ये नमः।
७८ ॐ भूधराय नमः।
७९ ॐ भूधराधीशाय नमः।
८० ॐ भूपतये नमः।
८१ ॐ भूधरात्मजाय नमः।
८२ ॐ कङ्कालधारिणे नमः।
८३ ॐ मुण्डिने नमः।
८४ ॐ नागयज्ञोपवीतकाय नमः।
८५ ॐ जृम्भणाय नमः।
८६ ॐ मोहनाय नमः।
८७ ॐ स्तम्भिने नमः।
८८ ॐ मारणाय नमः।
८९ ॐ क्षोभणाय नमः।
९० ॐ शुद्धाय नमः।
९१ ॐ नीलाञ्जनप्रख्याय नमः।
९२ ॐ दैत्यघ्ने नमः।
९३ ॐ मुण्डभूषिताय नमः।
९४ ॐ बलिभुजे नमः।
९५ ॐ बलिभुङ्नाथाय नमः।
९६ ॐ बालाय नमः।
९७ ॐ बालपराक्रमाय नमः।
९८ ॐ सर्वापत्तारणाय नमः।
९९ ॐ दुर्गाय नमः।
१०० ॐ दुष्टभूतनिषेविताय नमः।
१०१ ॐ कामिने नमः।
१०२ ॐ कलानिधये नमः।
१०३ ॐ कान्ताय नमः।
१०४ ॐ कामिनीवशकृद्वशिने नमः।
१०५ ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः।
१०६ ॐ वैद्याय नमः।
१०७ ॐ प्रभवे नमः।
१०८ ॐ विष्णवे नमः।

*॥ इति श्रीरुद्रयामलतन्त्रे श्रीबटुकभैरवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीविष्णवे नमः ॥

# श्रीविष्णु-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥*

*स्तोत्र*

**अष्टोत्तरशतं नाम्नां विष्णोरतुलतेजसः।**
**यस्य श्रवणमात्रेण नरो नारायणो भवेत्॥ १॥**
**विष्णुर्जिष्णुर्वषट्कारो देवदेवो वृषाकपिः।**
**दामोदरो दीनबन्धुरादिदेवोऽदितेः सुतः॥ २॥**
**पुण्डरीकः परानन्दः परमात्मा परात्परः।**
**परशुधारी विश्वात्मा कृष्णः कलिमलापहः॥ ३॥**
**कौस्तुभोद्भासितोरस्को नरो नारायणो हरिः।**
**हरो हरप्रियः स्वामी वैकुण्ठो विश्वतोमुखः॥ ४॥**
**हृषीकेशोऽप्रमेयात्मा वराहो धरणीधरः।**
**वामनो वेदवक्ता च वासुदेवः सनातनः॥ ५॥**
**रामो विरामो विरतो रावणारी रमापतिः।**
**वैकुण्ठवासी वसुमान् धनदो धरणीधरः॥ ६॥**
**धर्मेशो धरणीनाथो ध्येयो धर्मभृतां वरः।**
**सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ ७॥**

---

* उन चतुर्भुज भगवान् विष्णुको मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ, जो शंख-चक्र धारण किये हैं, किरीट और कुण्डलोंसे विभूषित हैं, पीताम्बर ओढ़े हुए हैं, सुन्दर कमलके समान जिनके नेत्र हैं और जिनके हारयुक्त वक्षःस्थलपर कौस्तुभमणिकी अनूठी शोभा है।

सर्वगः सर्ववित् सर्वशरण्यः साधुवल्लभः।
कौसल्यानन्दनः श्रीमान् रक्षःकुलविनाशकः॥ ८ ॥
जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जेता जनार्तिहा।
जानकीवल्लभो देवो जयरूपो जलेश्वरः॥ ९ ॥
क्षीराब्धिवासी क्षीराब्धितनयावल्लभस्तथा।
शेषशायी पन्नगारिवाहनो विष्टरश्रवाः॥ १० ॥
माधवो मथुरानाथो मोहदो मोहनाशनः।
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो ह्यच्युतो मधुसूदनः॥ ११ ॥
सोमः सूर्याग्निनयनो नृसिंहो भक्तवत्सलः।
नित्यो निरामयः शुद्धो नरदेवो जगत्प्रभुः॥ १२ ॥
हयग्रीवो जितरिपुरुपेन्द्रो रुक्मिणीपतिः।
सर्वदेवमयः श्रीशः सर्वाधारः सनातनः॥ १३ ॥
सौम्यः सौम्यप्रदः स्रष्टा विष्वक्सेनो जनार्दनः।
यशोदातनयो योगी योगशास्त्रपरायणः॥ १४ ॥
रुद्रात्मको रुद्रमूर्ती राघवो मधुसूदनः।
इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १५ ॥
सर्वपापहरं पुण्यं विष्णोरमिततेजसः।
दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यनाशनं सुखवर्धनम्॥ १६ ॥
सर्वसम्पत्करं सौम्यं महापातकनाशनम्।
प्रातरुत्थाय विप्रेन्द्र पठेदेकाग्रमानसः।
तस्य नश्यन्ति विपदां राशयः सिद्धिमाप्नुयात्॥ १७ ॥

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीविष्णवे नमः ॥

# श्रीविष्णु-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ विष्णवे नमः।
२ ॐ जिष्णवे नमः।
३ ॐ वषट्काराय नमः।
४ ॐ देवदेवाय नमः।
५ ॐ वृषाकपये नमः।
६ ॐ दामोदराय नमः।
७ ॐ दीनबन्धवे नमः।
८ ॐ आदिदेवाय नमः।
९ ॐ अदितेः सुताय नमः।
१० ॐ पुण्डरीकाय नमः।
११ ॐ परानन्दाय नमः।
१२ ॐ परमात्मने नमः।
१३ ॐ परात्पराय नमः।
१४ ॐ परशुधारिणे नमः।
१५ ॐ विश्वात्मने नमः।
१६ ॐ कृष्णाय नमः।
१७ ॐ कलिमलापहाय नमः।
१८ ॐ कौस्तुभोद्भासितोरस्काय नमः।
१९ ॐ नराय नमः।
२० ॐ नारायणाय नमः।
२१ ॐ हरये नमः।
२२ ॐ हराय नमः।
२३ ॐ हरप्रियाय नमः।
२४ ॐ स्वामिने नमः।
२५ ॐ वैकुण्ठाय नमः।
२६ ॐ विश्वतोमुखाय नमः।
२७ ॐ हृषीकेशाय नमः।
२८ ॐ अप्रमेयात्मने नमः।
२९ ॐ वराहाय नमः।
३० ॐ धरणीधराय नमः।
३१ ॐ वामनाय नमः।
३२ ॐ वेदवक्त्रे नमः।
३३ ॐ वासुदेवाय नमः।
३४ ॐ सनातनाय नमः।
३५ ॐ रामाय नमः।
३६ ॐ विरामाय नमः।
३७ ॐ विरताय नमः।
३८ ॐ रावणारये नमः।
३९ ॐ रमापतये नमः।
४० ॐ वैकुण्ठवासिने नमः।
४१ ॐ वसुमते नमः।
४२ ॐ धनदाय नमः।
४३ ॐ धरणीधराय नमः।
४४ ॐ धर्मेशाय नमः।
४५ ॐ धरणीनाथाय नमः।
४६ ॐ ध्येयाय नमः।
४७ ॐ धर्मभृतां वराय नमः।
४८ ॐ सहस्त्रशीर्षे नमः।
४९ ॐ पुरुषाय नमः।
५० ॐ सहस्त्राक्षाय नमः।
५१ ॐ सहस्त्रपादे नमः।
५२ ॐ सर्वगाय नमः।

५३ ॐ सर्वविदे नमः ।
५४ ॐ सर्वशरण्याय नमः ।
५५ ॐ साधुवल्लभाय नमः ।
५६ ॐ कौसल्यानन्दनाय नमः ।
५७ ॐ श्रीमते नमः ।
५८ ॐ रक्षःकुलविनाशकाय नमः ।
५९ ॐ जगत्कर्त्रे नमः ।
६० ॐ जगद्धर्त्रे नमः ।
६१ ॐ जगज्जेत्रे नमः ।
६२ ॐ जनार्तिघ्ने नमः ।
६३ ॐ जानकीवल्लभाय नमः ।
६४ ॐ देवाय नमः ।
६५ ॐ जयरूपाय नमः ।
६६ ॐ जलेश्वराय नमः ।
६७ ॐ क्षीराब्धिवासिने नमः ।
६८ ॐ क्षीराब्धितनयावल्लभाय नमः ।
६९ ॐ शेषशायिने नमः ।
७० ॐ पन्नगारिवाहनाय नमः ।
७१ ॐ विष्टरश्रवसे नमः ।
७२ ॐ माधवाय नमः ।
७३ ॐ मथुरानाथाय नमः ।
७४ ॐ मोहदाय नमः ।
७५ ॐ मोहनाशनाय नमः ।
७६ ॐ दैत्यारये नमः ।
७७ ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ।
७८ ॐ अच्युताय नमः ।
७९ ॐ मधुसूदनाय नमः ।
८० ॐ सोमाय नमः ।
८१ ॐ सूर्याग्निनयनाय नमः ।
८२ ॐ नृसिंहाय नमः ।
८३ ॐ भक्तवत्सलाय नमः ।
८४ ॐ नित्याय नमः ।
८५ ॐ निरामयाय नमः ।
८६ ॐ शुद्धाय नमः ।
८७ ॐ नरदेवाय नमः ।
८८ ॐ जगत्प्रभवे नमः ।
८९ ॐ हयग्रीवाय नमः ।
९० ॐ जितरिपवे नमः ।
९१ ॐ उपेन्द्राय नमः ।
९२ ॐ रुक्मिणीपतये नमः ।
९३ ॐ सर्वदेवमयाय नमः ।
९४ ॐ श्रीशाय नमः ।
९५ ॐ सर्वाधाराय नमः ।
९६ ॐ सनातनाय नमः ।
९७ ॐ सौम्याय नमः ।
९८ ॐ सौम्यप्रदाय नमः ।
९९ ॐ स्त्रष्ट्रे नमः ।
१०० ॐ विष्वक्सेनाय नमः ।
१०१ ॐ जनार्दनाय नमः ।
१०२ ॐ यशोदातनयाय नमः ।
१०३ ॐ योगिने नमः ।
१०४ ॐ योगशास्त्रपरायणाय नमः ।
१०५ ॐ रुद्रात्मकाय नमः ।
१०६ ॐ रुद्रमूर्तये नमः ।
१०७ ॐ राघवाय नमः ।
१०८ ॐ मधुसूदनाय नमः ।

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीवेङ्कटेशाय नमः ॥

# श्रीवेङ्कटेश-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

श्रीवेङ्कटेशमतिसुन्दरमोहनाङ्गं श्रीभूमिकान्तमरविन्ददलायताक्षम्।
प्राणप्रियं परमकारुणकम्बुराशिं ब्रह्मेशवन्द्यममृतं वरदं नमामि॥
अखिलविबुधवन्द्यं विश्वरूपं सुरेशमभयवरदहस्तं कञ्जजाक्षं रमेशम्।
जलधरनिभकान्तिं श्रीमहिभ्यां समेतं परमपुरुषमाद्यं वेङ्कटेशं नमामि॥*

श्रियःकान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्॥ १॥
श्रीवेङ्कटाचलाधीशं श्रियाऽध्यासितवक्षसम्।
श्रितचेतनमन्दारं श्रीनिवासमहं भजे॥ २॥
सूत सर्वार्थतत्त्वज्ञ सर्ववेदान्तपारग।
येन चाऽऽराधितः सद्यः श्रीमद्वेङ्कटनायकः॥ ३॥
भवत्यभीष्टसर्वार्थप्रदस्तद् ब्रूहि नो मुने।
इति पृष्टस्तदा सूतो ध्यात्वा स्वात्मनि तत्क्षणात्।
उवाच मुनिशार्दूलाञ्छ्रूयतामिति वै मुनिः॥ ४॥
अस्ति किञ्चिन्महद्गोप्यं भगवत्प्रीतिकारकम्।
पुरा शेषेण कथितं कपिलाय महात्मने॥ ५॥
नाम्नामष्टशतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आदाय हेमपद्मानि स्वर्णदीसम्भवानि च॥ ६॥

---

* अत्यन्त सुन्दर और मोह लेनेवाले अंगोंसे सुशोभित, लक्ष्मी तथा भूदेवीपति, कमलपत्रके समान विशाल नेत्रोंवाले, प्राणप्रिय, अपार करुणाके सागर, ब्रह्मा तथा शिवसे वन्दित, अमृतस्वरूप तथा वर प्रदान करनेवाले श्रीवेंकटेशको मैं नमस्कार करता हूँ।

समस्त देवताओंके वन्दनीय, विश्वरूपवाले, देवताओंके स्वामी, अभय तथा वरमुद्रासे युक्त हाथवाले, कमलके समान नेत्रोंवाले, रमापति; मेघके समान श्याम कान्तिवाले, लक्ष्मी तथा भूदेवीके साथ सुशोभित होनेवाले तथा सृष्टिके आदिमें प्रादुर्भूत परम पुरुष भगवान् वेंकटेशको मैं नमस्कार करता हूँ।

ब्रह्मा तु पूर्वमभ्यर्च्य श्रीमद्वेङ्कटनायकम्।
अष्टोत्तरशतैर्दिव्यैः नामभिर्मुनिपूजितैः॥ ७ ॥
स्वाभीष्टं लब्धवान् ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः।
भवद्भिरपि पद्मैश्च समर्च्यस्तैश्च नामभिः॥ ८ ॥
तेषां शेषनगाधीशमानसोल्लासकारिणाम्।
नाम्नामष्टशतं वक्ष्ये वेङ्कटाद्रिनिवासिनः॥ ९ ॥
आयुरारोग्यदं पुंसां धनधान्यसुखप्रदम्।
ज्ञानप्रदं विशेषेण महदैश्वर्यकारकम्॥ १० ॥
अर्चयेन्नामभिर्दिव्यैः वेङ्कटेशपदाङ्कितैः।
नाम्नामष्टशतस्याऽस्य ऋषिर्ब्रह्मा प्रकीर्तितः॥ ११ ॥
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो वेङ्कटेश उदाहृतः।
नीलगोक्षीरसम्भूतो बीजमित्युच्यते बुधैः॥ १२ ॥
श्रीनिवासस्तथा शक्तिर्हृदयं वेङ्कटाधिपः।
विनियोगस्तथाभीष्टसिद्ध्यर्थे च निगद्यते॥ १३ ॥

*स्तोत्र*

ॐ नमो वेङ्कटेशाय शेषाद्रिनिलयाय च।
वृषदृग्गोचरायाथ विष्णवे सततं नमः॥ १४ ॥
सदञ्जनगिरीशाय वृषाद्रिपतये नमः।
मेरुपुत्रगिरीशाय सरःस्वामितटीजुषे।
कुमाराकल्पसेव्याय वज्रदृग्विषयाय च॥ १५ ॥
सुवर्चलासुतन्यस्तसेनापत्यभराय च।
रामाय पद्मनाभाय सदा वायुस्तुताय च॥ १६ ॥
त्यक्तवैकुण्ठलोकाय गिरिकुञ्जविहारिणे।
हरिचन्दनगोत्रेन्द्रस्वामिने सततं नमः॥ १७ ॥

शङ्खराजन्यनेत्राब्जविषयाय नमो नमः।
वसूपरिचरत्रात्रे कृष्णाय सततं नमः॥ १८॥
अब्धिकन्यापरिष्वक्तवक्षसे वेङ्कटाय च।
सनकादिमहायोगिपूजिताय नमो नमः॥ १९॥
देवजित्प्रमुखानन्तदैत्यसङ्घप्रणाशिने।
श्वेतद्वीपवसन्मुक्तपूजिताङ्घ्रियुगाय च॥ २०॥
शेषपर्वतरूपत्वप्रकाशनपराय च।
सानुस्थापितताक्ष्र्याय ताक्ष्र्याचलनिवासिने॥ २१॥
मायागूढविमानाय गरुडस्कन्धवासिने।
अनन्तशिरसे नित्यमनन्ताक्षाय ते नमः॥ २२॥
अनन्तचरणायाथ श्रीशैलनिलयाय च।
दामोदराय ते नित्यं नीलमेघनिभाय च॥ २३॥
ब्रह्मादिदेवदुर्दर्शविश्वरूपाय ते नमः।
वैकुण्ठागतसद्धेमविमानान्तर्गताय च॥ २४॥
अगस्त्याभ्यर्थिताशेषजनदृग्गोचराय च।
वासुदेवाय हरये तीर्थपञ्चकवासिने॥ २५॥
वामदेवप्रियायाथ जनकेष्टप्रदाय च।
मार्कण्डेयमहातीर्थजातपुण्यप्रदाय च॥ २६॥
वाक्पतिब्रह्मदात्रे च चन्द्रलावण्यदायिने।
नारायणनगेशाय ब्रह्मक्लृप्तोत्सवाय च॥ २७॥
शङ्खचक्रवरानम्रलसत्करतलाय च।
द्रवन्मृगमदासक्तविग्रहाय नमो नमः॥ २८॥
केशवाय नमो नित्यं नित्ययौवनमूर्तये।
अर्थितार्थप्रदात्रे च विश्वतीर्थाघहारिणे॥ २९॥

तीर्थस्वामिसरःस्नातजनाभीष्टप्रदायिने ।
कुमारधारिकावासस्कन्दाभीष्टप्रदाय च ॥ ३० ॥
जानुदघ्नसमुद्भूतपोत्रिणे कूर्ममूर्तये ।
किन्नरद्वन्द्वशापान्तप्रदात्रे विभवे नमः ॥ ३१ ॥
वैखानसमुनिश्रेष्ठपूजिताय नमो नमः ।
सिंह्वाचलनिवासाय श्रीमन्नारायणाय च ॥ ३२ ॥
सद्भक्तनीलकण्ठार्च्यनृसिंह्वाय नमो नमः ।
कुमुदाक्षगणश्रेष्ठसेनापत्यप्रदाय च ॥ ३३ ॥
दुर्मेधः प्राणहर्त्रे च श्रीधराय नमो नमः ।
क्षत्रियान्तकरामाय मत्स्यरूपाय ते नमः ॥ ३४ ॥
पाण्डवारिप्रहर्त्रे च श्रीकराय नमो नमः ।
उपत्यकाप्रदेशस्थशङ्करध्यानमूर्तये ॥ ३५ ॥
रुक्माब्जसरसीकूललक्ष्मीकृततपस्विने ।
लसल्लक्ष्मीकराम्भोजदत्तकह्लारकस्रजे ॥ ३६ ॥
शालग्रामनिवासाय शुकदृग्गोचराय च ।
नारायणार्थिताशेषजनदृग्विषयाय च ॥ ३७ ॥
मृगयारसिकायाथ वृषभासुरहारिणे ।
अञ्जनागोत्रपतये वृषभाचलवासिने ॥ ३८ ॥
अञ्जनासुतदात्रे च माधवीयाघहारिणे ।
प्रियङ्गुप्रियभक्षाय श्वेतकोलवराय च ॥ ३९ ॥
नीलधेनुपयोधारासेकदेहोद्भवाय च ।
शङ्करप्रियमित्राय चोलपुत्रप्रियाय च ॥ ४० ॥
सुधर्मिणे सुचैतन्यप्रदात्रे मधुघातिने ।
कृष्णाख्यविप्रवेदान्तदेशिकत्वप्रदाय च ॥ ४१ ॥

वराहाचलनाथाय बलभद्राय ते नमः।
त्रिविक्रमाय महते हृषीकेशाय ते नमः॥ ४२॥
अच्युताय नमो नित्यं नीलाद्रिनिलयाय च।
नमः क्षीराब्धिनाथाय वैकुण्ठाचलवासिने॥ ४३॥
मुकुन्दाय नमो नित्यमनन्ताय नमो नमः।
विरिञ्चाभ्यर्थितानीतसौम्यरूपाय ते नमः॥ ४४॥
सुवर्णमुखरीस्नातमनुजाभीष्टदायिने।
हलायुधजगत्तीर्थसमस्तफलदायिने॥ ४५॥
गोविन्दाय नमो नित्यं श्रीनिवासाय ते नमः।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां चतुर्थ्या नमसान्वितम्॥ ४६॥
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
तस्य श्रीवेङ्कटेशस्तु प्रसन्नो भवति ध्रुवम्॥ ४७॥
अर्चनायां विशेषेण ग्राह्यमष्टोत्तरं शतम्।
वेङ्कटेशाभिधेयैर्यो वेङ्कटाद्रिनिवासिनम्॥ ४८॥
अर्चयेन्नामभिस्तस्य फलं मुक्तिर्न संशयः।
गोपनीयमिदं स्तोत्रं सर्वेषां न प्रकाशयेत्॥ ४९॥
श्रद्धाभक्तियुजामेव दापयेन्नामसंग्रहम्।
इति शेषेण कथितं कपिलाय महात्मने॥ ५०॥
कपिलाख्यमहायोगिसकाशात्तु मया श्रुतम्।
तदुक्तं भवतामद्य सद्यः प्रीतिकरं हरेः॥ ५१॥
श्रीवेङ्कटाद्रिनिलयः कमलाकामुकः पुमान्।
अभङ्गुरविभूतिर्नस्तरङ्गयतु मङ्गलम्॥ ५२॥

*॥ इति श्रीवराहपुराणे श्रीवेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीवेङ्कटेशाय नमः ॥

# श्रीवेङ्कटेश-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ वेङ्कटेशाय नमः ।
२ ॐ शेषाद्रिनिलयाय नमः ।
३ ॐ वृषदृग्गोचराय नमः ।
४ ॐ विष्णवे नमः ।
५ ॐ सदञ्जनगिरीशाय नमः ।
६ ॐ वृषाद्रिपतये नमः ।
७ ॐ मेरुपुत्रगिरीशाय नमः ।
८ ॐ सरःस्वामितटीजुषे नमः ।
९ ॐ कुमाराकल्पसेव्याय नमः ।
१० ॐ वज्रदृग्विषयाय नमः ।
११ ॐ सुवर्चलासुतन्यस्त-
सेनापत्य भराय नमः ।
१२ ॐ रामाय नमः ।
१३ ॐ पद्मनाभाय नमः ।
१४ ॐ वायुस्तुताय नमः ।
१५ ॐ त्यक्तवैकुण्ठलोकाय नमः ।
१६ ॐ गिरिकुञ्जविहारिणे नमः ।
१७ ॐ हरिचन्दनगोत्रेन्द्रस्वामिने नमः ।
१८ ॐ शङ्खराजन्यनेत्राब्ज-
विषयाय नमः ।
१९ ॐ वसूपरिचरत्रात्रे नमः ।
२० ॐ कृष्णाय नमः ।
२१ ॐ अधिकन्यापरिष्वक्त-
वक्षसे नमः ।
२२ ॐ वेङ्कटाय नमः ।
२३ ॐ सनकादिमहायोगि-
पूजिताय नमः ।
२४ ॐ देवजित्प्रमुखानन्तदैत्य-
सङ्घप्रणाशिने नमः ।
२५ ॐ श्वेतद्वीपवसन्मुक्त-
पूजिताङ्घ्रियुगाय नमः ।
२६ ॐ शेषपर्वतरूपत्वप्रकाशन-
पराय नमः ।
२७ ॐ सानुस्थापितताक्ष्र्याय नमः ।
२८ ॐ ताक्ष्र्याचलनिवासिने नमः ।
२९ ॐ मायागूढविमानाय नमः ।
३० ॐ गरुडस्कन्धवासिने नमः ।
३१ ॐ अनन्तशिरसे नमः ।
३२ ॐ अनन्ताक्षाय नमः ।
३३ ॐ अनन्तचरणाय नमः ।
३४ ॐ श्रीशैलनिलयाय नमः ।
३५ ॐ दामोदराय नमः ।
३६ ॐ नीलमेघनिभाय नमः ।
३७ ॐ ब्रह्मादिदेवदुर्दर्शविश्व-
रूपाय नमः ।
३८ ॐ वैकुण्ठागतसद्धेम-
विमानान्तर्गताय नमः ।
३९ ॐ अगस्त्याभ्यर्थिताशेष-
जनदृग्गोचराय नमः ।
४० ॐ वासुदेवाय नमः ।

४१ ॐ हरये नमः ।
४२ ॐ तीर्थपञ्चकवासिने नमः ।
४३ ॐ वामदेवप्रियाय नमः ।
४४ ॐ जनकेष्टप्रदाय नमः ।
४५ ॐ मार्कण्डेयमहातीर्थजातु-
पुण्यप्रदाय नमः ।
४६ ॐ वाक्पतिब्रह्मदात्रे नमः ।
४७ ॐ चन्द्रलावण्यदायिने नमः ।
४८ ॐ नारायणनगेशाय नमः ।
४९ ॐ ब्रह्मक्लृप्तोत्सवाय नमः ।
५० ॐ शङ्खचक्रवरानम्र-
लसत्करतलाय नमः ।
५१ ॐ द्रवन्मृगमदासक्तविग्रहाय नमः ।
५२ ॐ केशवाय नमः ।
५३ ॐ नित्ययौवनमूर्तये नमः ।
५४ ॐ अर्थितार्थप्रदात्रे नमः ।
५५ ॐ विश्वतीर्थाघहारिणे नमः ।
५६ ॐ तीर्थस्वामिसरस्नातजना-
भीष्टप्रदायिने नमः ।
५७ ॐ कुमारधारिकावास-
स्कन्दाभीष्टप्रदाय नमः ।
५८ ॐ जानुदघ्नसमुद्भूत-
पोत्रिणे नमः ।
५९ ॐ कूर्ममूर्तये नमः ।
६० ॐ किन्नरद्वन्द्वशापान्त-
प्रदात्रे नमः ।
६१ ॐ विभवे नमः ।
६२ ॐ वैखानसमुनिश्रेष्ठपूजिताय नमः ।
६३ ॐ सिंह्वाचलनिवासाय नमः ।
६४ ॐ श्रीमन्नारायणाय नमः ।
६५ ॐ सद्भक्तनीलकण्ठार्च्य-
नृसिंह्वाय नमः ।
६६ ॐ कुमुदाक्षगणश्रेष्ठसेना-
पत्यप्रदाय नमः ।
६७ ॐ दुर्मेधः प्राणहर्त्रे नमः ।
६८ ॐ श्रीधराय नमः ।
६९ ॐ क्षत्रियान्तकरामाय नमः ।
७० ॐ मत्स्यरूपाय नमः ।
७१ ॐ पाण्डवारिप्रहर्त्रे नमः ।
७२ ॐ श्रीकराय नमः ।
७३ ॐ उपत्यकाप्रदेशस्थशङ्कर-
ध्यानमूर्तये नमः ।
७४ ॐ रुक्माब्जसरसीकूल-
लक्ष्मीकृततपस्विने नमः ।
७५ ॐ लसल्लक्ष्मीकराम्भोज-
दत्तकह्लारकस्रजे नमः ।
७६ ॐ शालग्रामनिवासाय नमः ।
७७ ॐ शुकदृग्गोचराय नमः ।
७८ ॐ नारायणार्थिताशेषजन-
दृग्विषयाय नमः ।
७९ ॐ मृगयारसिकाय नमः ।
८० ॐ वृषभासुरहारिणे नमः ।
८१ ॐ अञ्जनागोत्रपतये नमः ।
८२ ॐ वृषभाचलवासिने नमः ।
८३ ॐ अञ्जनासुतदात्रे नमः ।
८४ ॐ माधवीयाघहारिणे नमः ।

८५ ॐ प्रियङ्गुप्रियभक्षाय नमः।
८६ ॐ श्वेतकोलवराय नमः।
८७ ॐ नीलधेनुपयोधारासेक-
देहोद्भवाय नमः।
८८ ॐ शङ्करप्रियमित्राय नमः।
८९ ॐ चोलपुत्रप्रियाय नमः।
९० ॐ सुधर्मिणे नमः।
९१ ॐ सुचैतन्यप्रदात्रे नमः।
९२ ॐ मधुघातिने नमः।
९३ ॐ कृष्णाख्यविप्रवेदान्त-
देशिकत्वप्रदाय नमः।
९४ ॐ वराहाचलनाथाय नमः।
९५ ॐ बलभद्राय नमः।
९६ ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
९७ ॐ महते नमः।
९८ ॐ हृषीकेशाय नमः।
९९ ॐ अच्युताय नमः।
१०० ॐ नीलाद्रिनिलयाय नमः।
१०१ ॐ क्षीराब्धिनाथाय नमः।
१०२ ॐ वैकुण्ठाचलवासिने नमः।
१०३ ॐ मुकुन्दाय नमः।
१०४ ॐ अनन्ताय नमः।
१०५ ॐ विरिञ्चाभ्यर्थितानीत-
सौम्यरूपाय नमः।
१०६ ॐ सुवर्णमुखरीस्नातमनुजा-
भीष्टदायिने नमः।
१०७ ॐ हलायुधजगत्तीर्थसमस्त-
फलदायिने नमः।
१०८ ॐ गोविन्दाय नमः।
१०९ ॐ श्रीनिवासाय नमः।

*॥ इति श्रीवराहपुराणे श्रीवेङ्कटेशाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः ॥

# श्रीलक्ष्मीनृसिंह-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन चक्रपाणे
भोगीन्द्रभोगमणिरञ्जितपुण्यमूर्ते ।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥*

*स्तोत्र*

**नारसिंहो महासिंहो दिव्यसिंहो महाबलः।**
**उग्रसिंहो महादेवः स्तम्भजश्चोग्रलोचनः॥ १॥**
**रौद्रः सर्वाद्भुतः श्रीमान् योगानन्दस्त्रिविक्रमः।**
**हरिः कोलाहलश्चक्री विजयो जयवर्धनः॥ २॥**
**पञ्चाननः परब्रह्म चाघोरो घोरविक्रमः।**
**ज्वलन्मुखो ज्वालमाली महाज्वालो महाप्रभुः॥ ३॥**
**निटिलाक्षः सहस्राक्षो दुर्निरीक्ष्यः प्रतापनः।**
**महादंष्ट्रायुधः प्राज्ञश्चण्डकोपी सदाशिवः॥ ४॥**
**हिरण्यकशिपुध्वंसी दैत्यदानवभञ्जनः।**
**गुणभद्रो महाभद्रो बलभद्रः सुभद्रकः॥ ५॥**

---

* हे अति शोभायमान क्षीरसमुद्रमें निवास करनेवाले, हाथमें चक्र धारण करनेवाले, नागनाथ (शेषजी)-के फणोंकी मणियोंसे देदीप्यमान मनोहर मूर्तिवाले! हे योगीश! हे सनातन! हे शरणागतवत्सल! हे संसारसागरके लिये नौकास्वरूप! श्रीलक्ष्मीनृसिंह! मुझे अपने करकमलका सहारा दीजिये।

करालो विकरालश्च विकर्ता सर्वकर्तृकः।
शिंशुमारस्त्रिलोकात्मा ईशः सर्वेश्वरो विभुः॥ ६ ॥
भैरवाडम्बरो दिव्यश्चाच्युतः कविमाधवः।
अधोक्षजोऽक्षरः शर्वो वनमाली वरप्रदः॥ ७ ॥
विश्वम्भरोऽद्भुतो भव्यः श्रीविष्णुः पुरुषोत्तमः।
अनघास्त्रो नखास्त्रश्च सूर्यज्योतिः सुरेश्वरः॥ ८ ॥
सहस्त्रबाहुः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिप्रदायकः।
वज्रदंष्ट्रो वज्रनखो महानन्दः परन्तपः॥ ९ ॥
सर्वयन्त्रैकरूपश्च सर्वयन्त्रविदारणः।
सर्वतन्त्रात्मकोऽव्यक्तः सुव्यक्तो भक्तवत्सलः॥ १० ॥
वैशाखशुक्लभूतोत्थः शरणागतवत्सलः।
उदारकीर्तिः पुण्यात्मा महात्मा चण्डविक्रमः॥ ११ ॥
वेदत्रयप्रपूज्यश्च भगवान् परमेश्वरः।
श्रीवत्साङ्कः श्रीनिवासो जगद्व्यापी जगन्मयः॥ १२ ॥
जगत्पालो जगन्नाथो महाकायो द्विरूपभृत्।
परमात्मा परंज्योतिर्निर्गुणश्च नृकेसरी॥ १३ ॥
परतत्त्वं परंधाम सच्चिदानन्दविग्रहः।
लक्ष्मीनृसिंहः सर्वात्मा धीरः प्रह्लादपालकः॥ १४ ॥
इदं लक्ष्मीनृसिंहस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् भक्त्या सर्वाभीष्टमवाप्नुयात्॥ १५ ॥

*॥ इति नृसिंहपूजाकल्पे श्रीलक्ष्मीनृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः ॥

# श्रीलक्ष्मीनृसिंह-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ नारसिंहाय नमः ।
२ ॐ महासिंहाय नमः ।
३ ॐ दिव्यसिंहाय नमः ।
४ ॐ महाबलाय नमः ।
५ ॐ उग्रसिंहाय नमः ।
६ ॐ महादेवाय नमः ।
७ ॐ स्तम्भजाय नमः ।
८ ॐ उग्रलोचनाय नमः ।
९ ॐ रौद्राय नमः ।
१० ॐ सर्वाद्भुताय नमः ।
११ ॐ श्रीमते नमः ।
१२ ॐ योगानन्दाय नमः ।
१३ ॐ त्रिविक्रमाय नमः ।
१४ ॐ हरये नमः ।
१५ ॐ कोलाहलाय नमः ।
१६ ॐ चक्रिणे नमः ।
१७ ॐ विजयाय नमः ।
१८ ॐ जयवर्धनाय नमः ।
१९ ॐ पञ्चाननाय नमः ।
२० ॐ परब्रह्मणे नमः ।
२१ ॐ अघोराय नमः ।
२२ ॐ घोरविक्रमाय नमः ।
२३ ॐ ज्वलन्मुखाय नमः ।
२४ ॐ ज्वालमालिने नमः ।
२५ ॐ महाज्वालाय नमः ।
२६ ॐ महाप्रभवे नमः ।
२७ ॐ निटिलाक्षाय नमः ।
२८ ॐ सहस्राक्षाय नमः ।
२९ ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः ।
३० ॐ प्रतापनाय नमः ।
३१ ॐ महादंष्ट्रायुधाय नमः ।
३२ ॐ प्राज्ञाय नमः ।
३३ ॐ चण्डकोपिने नमः ।
३४ ॐ सदाशिवाय नमः ।
३५ ॐ हिरण्यकशिपुध्वंसिने नमः ।
३६ ॐ दैत्यदानवभञ्जनाय नमः ।
३७ ॐ गुणभद्राय नमः ।
३८ ॐ महाभद्राय नमः ।
३९ ॐ बलभद्राय नमः ।
४० ॐ सुभद्रकाय नमः ।
४१ ॐ करालाय नमः ।
४२ ॐ विकरालाय नमः ।
४३ ॐ विकर्त्रे नमः ।
४४ ॐ सर्वकर्तृकाय नमः ।
४५ ॐ शिंशुमाराय नमः ।
४६ ॐ त्रिलोकात्मने नमः ।
४७ ॐ ईशाय नमः ।
४८ ॐ सर्वेश्वराय नमः ।
४९ ॐ विभवे नमः ।
५० ॐ भैरवाडम्बराय नमः ।
५१ ॐ दिव्याय नमः ।
५२ ॐ अच्युताय नमः ।

५३ ॐ कविमाधवाय नमः।
५४ ॐ अधोक्षजाय नमः।
५५ ॐ अक्षराय नमः।
५६ ॐ शर्वाय नमः।
५७ ॐ वनमालिने नमः।
५८ ॐ वरप्रदाय नमः।
५९ ॐ विश्वम्भराय नमः।
६० ॐ अद्भुताय नमः।
६१ ॐ भव्याय नमः।
६२ ॐ श्रीविष्णवे नमः।
६३ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
६४ ॐ अनघास्त्राय नमः।
६५ ॐ नखास्त्राय नमः।
६६ ॐ सूर्यज्योतिषे नमः।
६७ ॐ सुरेश्वराय नमः।
६८ ॐ सहस्त्रबाहवे नमः।
६९ ॐ सर्वज्ञाय नमः।
७० ॐ सर्वसिद्धिप्रदायकाय नमः।
७१ ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः।
७२ ॐ वज्रनखाय नमः।
७३ ॐ महानन्दाय नमः।
७४ ॐ परन्तपाय नमः।
७५ ॐ सर्वयन्त्रैकरूपाय नमः।
७६ ॐ सर्वयन्त्रविदारणाय नमः।
७७ ॐ सर्वतन्त्रात्मकाय नमः।
७८ ॐ अव्यक्ताय नमः।
७९ ॐ सुव्यक्ताय नमः।
८० ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
८१ ॐ वैशाखशुक्लभूतोत्थाय नमः।
८२ ॐ शरणागतवत्सलाय नमः।
८३ ॐ उदारकीर्तये नमः।
८४ ॐ पुण्यात्मने नमः।
८५ ॐ महात्मने नमः।
८६ ॐ चण्डविक्रमाय नमः।
८७ ॐ वेदत्रयप्रपूज्याय नमः।
८८ ॐ भगवते नमः।
८९ ॐ परमेश्वराय नमः।
९० ॐ श्रीवत्साङ्काय नमः।
९१ ॐ श्रीनिवासाय नमः।
९२ ॐ जगद्व्यापिने नमः।
९३ ॐ जगन्मयाय नमः।
९४ ॐ जगत्पालाय नमः।
९५ ॐ जगन्नाथाय नमः।
९६ ॐ महाकायाय नमः।
९७ ॐ द्विरूपभृते नमः।
९८ ॐ परमात्मने नमः।
९९ ॐ परंज्योतिषे नमः।
१०० ॐ निर्गुणाय नमः।
१०१ ॐ नृकेसरिणे नमः।
१०२ ॐ परतत्त्वाय नमः।
१०३ ॐ परंधाम्ने नमः।
१०४ ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः।
१०५ ॐ लक्ष्मीनृसिंहाय नमः।
१०६ ॐ सर्वात्मने नमः।
१०७ ॐ धीराय नमः।
१०८ ॐ प्रह्लादपालकाय नमः।

*॥ इति नृसिंहपूजाकल्पे श्रीलक्ष्मीनृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीहयग्रीवाय नमः ॥

# श्रीहयग्रीव-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीहयग्रीवस्तोत्रमन्त्रस्य संकर्षण ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीहयग्रीवो देवता ऋं बीजं नमः शक्तिः विद्यार्थे जपे विनियोगः।*

*ध्यान*

**वन्दे पूरितचन्द्रमण्डलगतं श्वेतारविन्दासनं**
**मन्दाकिन्यमृताब्धिकुन्दकुमुदक्षीरेन्दुहासं हरिम्।**
**मुद्रापुस्तकशङ्खचक्रविलसच्छ्रीमद्भुजामण्डितम्**
**नित्यं निर्मलभारतीपरिमलं विश्वेशमश्वाननम्॥***

*मन्त्र*

**ॐ ऋग्यजुःसामरूपाय वेदाहरणकर्मणे।**
**प्रणवोद्गीथवचसे महाश्वशिरसे नमः॥**

*स्तोत्र*

**ज्ञानानन्दमयं देवं निर्मलं स्फटिकाकृतिम्।**
**आधारं सर्वविद्यानां हयग्रीवमुपास्महे॥ १॥**
**हयग्रीवो महाविष्णुः केशवो मधुसूदनः।**
**गोविन्दः पुण्डरीकाक्षो विष्णुर्विश्वम्भरो हरिः॥ २॥**
**आदित्यः सर्ववागीशः सर्वाधारः सनातनः।**
**निराधारो निराकारो निरीशो निरुपद्रवः॥ ३॥**

---

* पूर्णचन्द्रमण्डलमें विराजमान; श्वेतकमलके आसनपर स्थित; मन्दाकिनी, अमृतसागर, कुन्दपुष्प, कुमुद, क्षीर तथा चन्द्रमाके समान हासवाले; मुद्रा, पुस्तक, शंख, चक्रसे सुशोभित, शोभामय भुजासे सम्पन्न; शाश्वत; निर्मल वाणीकी सुगन्धसे युक्त तथा विश्वके स्वामी साक्षात् श्रीहरि भगवान् हयग्रीवकी मैं वन्दना करता हूँ।

निरञ्जनो निष्कलङ्को नित्यतृप्तो निरामयः।
चिदानन्दमयः साक्षी शरण्यः शुभदायकः॥ ४ ॥
श्रीमाँल्लोकत्रयाधीशः शिवः सरस्वतीप्रदः।
वेदोद्धर्ता वेदनिधिर्वेदवेद्यः पुरातनः॥ ५ ॥
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिः परात्परः।
परमात्मा परं ज्योतिः परेशः पारगः परः॥ ६ ॥
सकलोपनिषद्वेद्यो निष्कलः सर्वशास्त्रकृत्।
अक्षमालाज्ञानमुद्रायुक्तहस्तो वरप्रदः॥ ७ ॥
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शरण्यः परमेश्वरः।
शान्तो दान्तो जितक्रोधो जितामित्रो जगन्मयः॥ ८ ॥
जरामृत्युहरो जीवो जयदो जाड्यनाशनः।
जपप्रियो जपस्तुत्यो जपकृत्प्रियकृद्विभुः॥ ९ ॥
विमलो विश्वरूपश्च विश्वगोप्ता विधिस्तुतः।
विधिविष्णुशिवस्तुत्यः शान्तिदः शान्तिकारकः॥ १० ॥
श्रेयःप्रदः श्रुतिमयः श्रेयसां पतिरीश्वरः।
अच्युतोऽनन्तरूपश्च प्राणदः पृथिवीपतिः॥ ११ ॥
अव्यक्तव्यक्तरूपश्च सर्वसाक्षी तमोपहा।
अज्ञाननाशको ज्ञानी पूर्णचन्द्रसमप्रभः॥ १२ ॥
ज्ञानदो वाक्पतिर्योगी योगीशः सर्वकामदः।
योगारूढो महापुण्यः पुण्यकीर्तिरमित्रहा॥ १३ ॥
विश्वसाक्षी चिदाकारः परमानन्दकारकः।
महायोगी महामौनी मुनीशः श्रेयसां निधिः॥ १४ ॥

हंसः परमहंसश्च विश्वगोप्ता विराट् स्वराट्।
शुद्धस्फटिकसङ्काशो जटामण्डलसंयुतः ॥ १५ ॥
आदिमध्यान्तरहितः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
प्रणवोद्गीथरूपश्च वेदाहरणकर्मकृत् ॥ १६ ॥
नाम्नामष्टोत्तरशतं हयग्रीवस्य यः पठेत्।
स सर्ववेदवेदाङ्गशास्त्राणां पारगः कविः ॥ १७ ॥
इदमष्टोत्तरशतं नित्यं मूढोऽपि यः पठेत्।
वाचस्पतिसमो बुद्ध्या सर्वविद्याविशारदः ॥ १८ ॥
महदैश्वर्यमाप्नोति कलत्राणि च पुत्रकान्।
नश्यन्ति सकला रोगा अन्ते हरिपुरं व्रजेत् ॥ १९ ॥

*॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीहयग्रीवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीहयग्रीवाय नमः ॥

# श्रीहयग्रीव-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ हयग्रीवाय नमः ।
२ ॐ महाविष्णवे नमः ।
३ ॐ केशवाय नमः ।
४ ॐ मधुसूदनाय नमः ।
५ ॐ गोविन्दाय नमः ।
६ ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः ।
७ ॐ विष्णवे नमः ।
८ ॐ विश्वम्भराय नमः ।
९ ॐ हरये नमः ।
१० ॐ आदित्याय नमः ।
११ ॐ सर्ववागीशाय नमः ।
१२ ॐ सर्वाधाराय नमः ।
१३ ॐ सनातनाय नमः ।
१४ ॐ निराधाराय नमः ।
१५ ॐ निराकाराय नमः ।
१६ ॐ निरीशाय नमः ।
१७ ॐ निरुपद्रवाय नमः ।
१८ ॐ निरञ्जनाय नमः ।
१९ ॐ निष्कलङ्काय नमः ।
२० ॐ नित्यतृप्ताय नमः ।
२१ ॐ निरामयाय नमः ।
२२ ॐ चिदानन्दमयाय नमः ।
२३ ॐ साक्षिणे नमः ।
२४ ॐ शरण्याय नमः ।
२५ ॐ शुभदायकाय नमः ।
२६ ॐ श्रीमते नमः ।
२७ ॐ लोकत्रयाधीशाय नमः ।
२८ ॐ शिवाय नमः ।
२९ ॐ सरस्वतीप्रदाय नमः ।
३० ॐ वेदोद्धर्त्रे नमः ।
३१ ॐ वेदनिधये नमः ।
३२ ॐ वेदवेद्याय नमः ।
३३ ॐ पुरातनाय नमः ।
३४ ॐ पूर्णाय नमः ।
३५ ॐ पूरयित्रे नमः ।
३६ ॐ पुण्याय नमः ।
३७ ॐ पुण्यकीर्तये नमः ।
३८ ॐ परात्पराय नमः ।
३९ ॐ परमात्मने नमः ।
४० ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः ।
४१ ॐ परेशाय नमः ।
४२ ॐ पारगाय नमः ।
४३ ॐ पराय नमः ।
४४ ॐ सकलोपनिषद्वेद्याय नमः ।
४५ ॐ निष्कलाय नमः ।
४६ ॐ सर्वशास्त्रकृते नमः ।
४७ ॐ अक्षमालाज्ञानमुद्रा-
युक्तहस्ताय नमः ।
४८ ॐ वरप्रदाय नमः ।
४९ ॐ पुराणपुरुषाय नमः ।
५० ॐ श्रेष्ठाय नमः ।
५१ ॐ शरण्याय नमः ।
५२ ॐ परमेश्वराय नमः ।
५३ ॐ शान्ताय नमः ।
५४ ॐ दान्ताय नमः ।
५५ ॐ जितक्रोधाय नमः ।

५६ ॐ जितामित्राय नमः ।
५७ ॐ जगन्मयाय नमः ।
५८ ॐ जरामृत्युहराय नमः ।
५९ ॐ जीवाय नमः ।
६० ॐ जयदाय नमः ।
६१ ॐ जाड्यनाशनाय नमः ।
६२ ॐ जपप्रियाय नमः ।
६३ ॐ जपस्तुत्याय नमः ।
६४ ॐ जपकृते नमः ।
६५ ॐ प्रियकृते नमः ।
६६ ॐ विभवे नमः ।
६७ ॐ विमलाय नमः ।
६८ ॐ विश्वरूपाय नमः ।
६९ ॐ विश्वगोप्त्रे नमः ।
७० ॐ विधिस्तुताय नमः ।
७१ ॐ विधिविष्णुशिव-
स्तुत्याय नमः ।
७२ ॐ शान्तिदाय नमः ।
७३ ॐ शान्तिकारकाय नमः ।
७४ ॐ श्रेयःप्रदाय नमः ।
७५ ॐ श्रुतिमयाय नमः ।
७६ ॐ श्रेयसां पतये नमः ।
७७ ॐ ईश्वराय नमः ।
७८ ॐ अच्युताय नमः ।
७९ ॐ अनन्तरूपाय नमः ।
८० ॐ प्राणदाय नमः ।
८१ ॐ पृथिवीपतये नमः ।
८२ ॐ अव्यक्तव्यक्तरूपाय नमः ।
८३ ॐ सर्वसाक्षिणे नमः ।
८४ ॐ तमोपघ्ने नमः ।
८५ ॐ अज्ञाननाशकाय नमः ।
८६ ॐ ज्ञानिने नमः ।
८७ ॐ पूर्णचन्द्रसमप्रभाय नमः ।
८८ ॐ ज्ञानदाय नमः ।
८९ ॐ वाक्पतये नमः ।
९० ॐ योगिने नमः ।
९१ ॐ योगीशाय नमः ।
९२ ॐ सर्वकामदाय नमः ।
९३ ॐ योगारूढाय नमः ।
९४ ॐ महापुण्याय नमः ।
९५ ॐ पुण्यकीर्तये नमः ।
९६ ॐ अमित्रघ्ने नमः ।
९७ ॐ विश्वसाक्षिणे नमः ।
९८ ॐ चिदाकाराय नमः ।
९९ ॐ परमानन्दकारकाय नमः ।
१०० ॐ महायोगिने नमः ।
१०१ ॐ महामौनिने नमः ।
१०२ ॐ मुनीशाय नमः ।
१०३ ॐ श्रेयसां निधये नमः ।
१०४ ॐ हंसाय नमः ।
१०५ ॐ परमहंसाय नमः ।
१०६ ॐ विश्वगोप्त्रे नमः ।
१०७ ॐ विराजे नमः ।
१०८ ॐ स्वराजे नमः ।
१०९ ॐ शुद्धस्फटिकसङ्काशाय नमः ।
११० ॐ जटामण्डलसंयुताय नमः ।
१११ ॐ आदिमध्यान्तरहिताय नमः ।
११२ ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः ।
११३ ॐ प्रणवोद्गीथरूपाय नमः ।
११४ ॐ वेदाहरणकर्मकृते नमः ।

*॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीहयग्रीवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीदत्तात्रेयाय नमः ॥

# श्रीदत्तात्रेय-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

दिगम्बरं भस्मविलेपिताङ्गं
बोधात्मकं मुक्तिकरं प्रसन्नम्।
निर्मानसं श्यामतनुं भजेऽहं
दत्तात्रेयं ब्रह्मसमाधियुक्तम्॥ *

*स्तोत्र*

ॐकारतत्त्वरूपाय दिव्यज्ञानात्मने नमः।
नभोऽतीतमहाधाम्न ऐन्द्र्यर्द्ध्या ओजसे नमः॥ १॥
नष्टमत्सरगम्यायागम्याचारात्मवर्त्मने।
मोचितामेध्यकृतये ह्रींबीजश्राणितश्रिये॥ २॥
मोहादिविभ्रमान्ताय बहुकायधराय च।
भक्तदुर्वैभवच्छेत्रे क्लींबीजवरजापिने॥ ३॥
भवहेतुविनाशाय राजच्छोणाधराय च।
गतिप्रकम्पिताण्डाय चारुव्यायतबाहवे॥ ४॥
गतगर्वप्रियायास्तु यमादियतचेतसे।
वशिताजातवश्याय मुण्डिने अनसूयवे॥ ५॥

---

* जो दिगम्बर वेषमें रहनेवाले हैं, अपने समस्त अङ्गोंमें भस्म लगाये हुए हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, मुक्ति प्रदान करनेवाले हैं, प्रसन्न रहनेवाले हैं तथा जिनका शरीर कृष्णवर्णका है और जिनका मन वृत्तियोंसे रहित है—ऐसे ब्रह्मसमाधिमें प्रतिष्ठित रहनेवाले भगवान् दत्तात्रेयका मैं ध्यान करता हूँ।

वदद्वरेण्यवाग्जालाविस्पष्टविविधात्मने ।
तपोधनप्रसन्नायेडापतिस्तुतकीर्तये ॥ ६ ॥
तेजोमण्यन्तरङ्गायाद्मरसद्मविहापिने ।
आन्तरस्थानसंस्थायायैश्वर्यश्रौतगीतये ॥ ७ ॥
वातादिभययुग्भावहेतवे हेतुहेतवे ।
जगदात्मात्मभूताय विद्विषत्षट्कघातिने ॥ ८ ॥
सुरवर्गोद्धृते भूत्या असुरावासभेदिने ।
नेत्रे च नयनाक्ष्णेऽचिच्चेतनाय महात्मने ॥ ९ ॥
देवाधिदेवदेवाय वसुधासुरपालिने ।
याजिनामग्रगण्याय द्रांबीजजपतुष्टये ॥ १० ॥
वासनावनदावाय धूलियुग्देहमालिने ।
यतिसंन्यासिगतये दत्तात्रेयेतिसंविदे ॥ ११ ॥
यजनास्यभुजेऽजाय तारकावासगामिने ।
महाजवास्पृग्रूपायात्ताकाराय विरूपिणे ॥ १२ ॥
नराय धीप्रदीपाय यशस्वियशसे नमः ।
हारिणे चोज्ज्वलाङ्गायात्रेस्तनूजाय शम्भवे ॥ १३ ॥
मोचितामरसंघाय धीमतां धीकराय च ।
बलिष्ठविप्रलभ्याय यागहोमप्रियाय च ॥ १४ ॥
भजन्महिमविख्यात्रेऽमरारिमहिमच्छिदे ।
लाभाय मुण्डिपूज्याय यमिने हेममालिने ॥ १५ ॥

गतोपाधिव्याधये च हिरण्याहितकान्तये।
यतीन्द्रचर्यां दधते नरभावौषधाय च॥ १६॥
वरिष्ठयोगिपूज्याय तन्तुसंतन्वते नमः।
स्वात्मगाथासुतीर्थाय मश्रिये षट्कराय च॥ १७॥
तेजोमयोत्तमाङ्गाय नोदनानोद्यकर्मणे।
हान्याप्तिमृतिविज्ञात्र ओंकारितसुभक्तये॥ १८॥
रुक्शुङ्मनःखेदहृते दर्शनाविषयात्मने।
राङ्कवाततवस्त्राय नरतत्त्वप्रकाशिने॥ १९॥
द्रावितप्रणताघायात्तस्वजिष्णुस्वराशये।
राजत्र्यास्यैकरूपाय मस्थाय मसुबन्धवे॥ २०॥
यतये चोदनातीतप्रचारप्रभवे नमः।
मानरोषविहीनाय शिष्यसंसिद्धिकारिणे॥ २१॥
गन्त्रे पादविहीनाय चोदनाचोदितात्मने।
यवीयसेऽलर्कदुःखवारिणेऽखण्डितात्मने॥ २२॥
ह्रींबीजायाऽर्जुनेष्टाय दर्शनादर्शितात्मने।
नतिसंतुष्टचित्ताय यतये ब्रह्मचारिणे॥ २३॥
इत्येष सत्स्तवो वृत्तोऽयात्कं देयात्प्रजापिने।
मस्करीशोमनुस्यूतः परब्रह्मपदप्रदः॥ २४॥

*॥ इति श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं श्रीदत्तात्रेयाष्टोत्तरशत-नामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

|| श्रीदत्तात्रेयाय नमः ||

# श्रीदत्तात्रेय-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ ॐकारतत्त्वरूपाय नमः ।
२ ॐ दिव्यज्ञानात्मने नमः ।
३ ॐ नभोऽतीतमहाधाम्ने नमः ।
४ ॐ ऐन्द्र्यद्धर्या ओजसे नमः ।
५ ॐ नष्टमत्सरगम्याय नमः ।
६ ॐ अगम्याचारात्मवर्त्मने नमः ।
७ ॐ मोचितामेध्यकृतये नमः ।
८ ॐ ह्रींबीजश्राणितश्रिये नमः ।
९ ॐ मोहादिविभ्रमान्ताय नमः ।
१० ॐ बहुकायधराय नमः ।
११ ॐ भक्तदुर्वैभवच्छेत्रे नमः ।
१२ ॐ क्लींबीजवरजापिने नमः ।
१३ ॐ भवहेतुविनाशाय नमः ।
१४ ॐ राजच्छोणाधराय नमः ।
१५ ॐ गतिप्रकम्पिताण्डाय नमः ।
१६ ॐ चारुव्यायतबाहवे नमः ।
१७ ॐ गतगर्वप्रियाय नमः ।
१८ ॐ यमादियतचेतसे नमः ।
१९ ॐ वशिताजातवश्याय नमः ।
२० ॐ मुण्डिने नमः ।
२१ ॐ अनसूयवे नमः ।
२२ ॐ वदद्वरेण्यवाग्जालावि-
स्पष्टविविधात्मने नमः ।
२३ ॐ तपोधनप्रसन्नाय नमः ।
२४ ॐ इडापतिस्तुतकीर्तये नमः ।
२५ ॐ तेजोमण्यन्तरङ्गाय नमः ।
२६ ॐ अद्मरसद्मविहापिने नमः ।
२७ ॐ आन्तरस्थानसंस्थाय नमः ।
२८ ॐ अयैश्वर्यश्रौतगीतये नमः ।
२९ ॐ वातादिभययुग्भाव-
हेतवे नमः ।
३० ॐ हेतुहेतवे नमः ।
३१ ॐ जगदात्मात्मभूताय नमः ।
३२ ॐ विद्विषत्षट्कघातिने नमः ।
३३ ॐ सुरवर्गोद्धृते नमः ।
३४ ॐ भूत्यै नमः ।
३५ ॐ असुरावासभेदिने नमः ।
३६ ॐ नेत्रे नमः ।
३७ ॐ नयनाक्ष्णे नमः ।
३८ ॐ अचिच्चेतनाय नमः ।
३९ ॐ महात्मने नमः ।
४० ॐ देवाधिदेवदेवाय नमः ।
४१ ॐ वसुधासुरपालिने नमः ।
४२ ॐ याजिनामग्रगण्याय नमः ।
४३ ॐ द्रांबीजजपतुष्टये नमः ।
४४ ॐ वासनावनदावाय नमः ।
४५ ॐ धूलियुग्देहमालिने नमः ।
४६ ॐ यतिसंन्यासिगतये नमः ।
४७ ॐ दत्तात्रेयेतिसंविदे नमः ।
४८ ॐ यजनास्यभुजे नमः ।
४९ ॐ अजाय नमः ।
५० ॐ तारकावासगामिने नमः ।
५१ ॐ महाजवास्पृग्रूपाय नमः ।
५२ ॐ आत्ताकाराय नमः ।

५३ ॐ विरूपिणे नमः।
५४ ॐ नराय नमः।
५५ ॐ धीप्रदीपाय नमः।
५६ ॐ यशस्वियशसे नमः।
५७ ॐ हारिणे नमः।
५८ ॐ उज्ज्वलाङ्गाय नमः।
५९ ॐ अत्रेस्तनूजाय नमः।
६० ॐ शम्भवे नमः।
६१ ॐ मोचितामरसंघाय नमः।
६२ ॐ धीमतां धीकराय नमः।
६३ ॐ बलिष्ठविप्रलभ्याय नमः।
६४ ॐ यागहोमप्रियाय नमः।
६५ ॐ भजन्महिमविख्यात्रे नमः।
६६ ॐ अमरारिमहिमच्छिदे नमः।
६७ ॐ लाभाय नमः।
६८ ॐ मुण्डिपूज्याय नमः।
६९ ॐ यमिने नमः।
७० ॐ हेममालिने नमः।
७१ ॐ गतोपाधिव्याधये नमः।
७२ ॐ हिरण्याहितकान्तये नमः।
७३ ॐ यतीन्द्रचर्यां दधते नमः।
७४ ॐ नरभावौषधाय नमः।
७५ ॐ वरिष्ठयोगिपूज्याय नमः।
७६ ॐ तन्तुसन्तन्वते नमः।
७७ ॐ स्वात्मगाथासुतीर्थाय नमः।
७८ ॐ मश्रिये नमः।
७९ ॐ षट्कराय नमः।
८० ॐ तेजोमयोत्तमाङ्गाय नमः।
८१ ॐ नोदनानोद्यकर्मणे नमः।
८२ ॐ हान्याप्तिमृतिविज्ञात्रे नमः।
८३ ॐ ओंकारितसुभक्तये नमः।
८४ ॐ रुक्शुङ्मनःखेदहृते नमः।
८५ ॐ दर्शनाविषयात्मने नमः।
८६ ॐ राङ्कवाततवस्त्राय नमः।
८७ ॐ नरतत्त्वप्रकाशिने नमः।
८८ ॐ द्रावितप्रणताघाय नमः।
८९ ॐ आत्तस्वजिष्णुस्वराशये नमः।
९० ॐ राजत्र्यास्यैकरूपाय नमः।
९१ ॐ मस्थाय नमः।
९२ ॐ मसुबन्धवे नमः।
९३ ॐ यतये नमः।
९४ ॐ चोदनातीतप्रचारप्रभवे नमः।
९५ ॐ मानरोषविहीनाय नमः।
९६ ॐ शिष्यसंसिद्धिकारिणे नमः।
९७ ॐ गन्त्रे नमः।
९८ ॐ पादविहीनाय नमः।
९९ ॐ चोदनाचोदितात्मने नमः।
१०० ॐ यवीयसे नमः।
१०१ ॐ अलर्कदुःखवारिणे नमः।
१०२ ॐ अखण्डितात्मने नमः।
१०३ ॐ ह्रींबीजाय नमः।
१०४ ॐ अर्जुनेष्टाय नमः।
१०५ ॐ दर्शनादर्शितात्मने नमः।
१०६ ॐ नतिसन्तुष्टचित्ताय नमः।
१०७ ॐ यतये नमः।
१०८ ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।

*॥ इति श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचिता श्रीदत्तात्रेयाष्टोत्तरशत-नामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीराम-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम्।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं नमामि॥*

*स्तोत्र*

**श्रीरामो रामभद्रश्च रामचन्द्रश्च शाश्वतः।**
**राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुङ्गवः॥ १॥**
**जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः।**
**विश्वामित्रप्रियो दान्तः शरणत्राणतत्परः॥ २॥**
**वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः।**
**सत्यव्रतो व्रतधरः सदा हनुमदाश्रितः॥ ३॥**
**कौसलेयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः।**
**विभीषणपरित्राता हरकोदण्डखण्डनः॥ ४॥**
**सप्ततालप्रभेत्ता च दशग्रीवशिरोहरः।**
**जामदग्न्यमहादर्पदलनस्ताटकान्तकः॥ ५॥**
**वेदान्तसारो वेदात्मा भवरोगस्य भेषजम्।**
**दूषणत्रिशिरोहन्ता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः॥ ६॥**

---

* श्रीरघुनन्दन, दशरथके पुत्र, अप्रमेय, रघुकुलकी वंशपरम्परामें रत्नदीपकसदृश, आजानुबाहु, कमलपत्रके समान विशाल नेत्रोंवाले तथा राक्षसोंके विनाशक सीतापति श्रीरामको मैं नमस्कार करता हूँ।

त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः।
त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यकर्तनः॥ ७ ॥
अहल्याशापशमनः पितृभक्तो वरप्रदः।
जितेन्द्रियो जितक्रोधो जितामित्रो जगद्गुरुः॥ ८ ॥
ऋक्षवानरसंघाती चित्रकूटसमाश्रयः।
जयन्तत्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः॥ ९ ॥
सर्वदेवादिदेवश्च मृतवानरजीवनः।
मायामारीचहन्ता च महादेवो महाभुजः॥ १० ॥
सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसंस्तुतः।
महायोगो महोदारः सुग्रीवेप्सितराज्यदः॥ ११ ॥
सर्वपुण्याधिकफलः स्मृतसर्वाघनाशनः।
अनादिरादिपुरुषः महापूरुष एव च॥ १२ ॥
पुण्योदयो दयासारः पुराणपुरुषोत्तमः।
स्मितवक्त्रो स्मिताभाषी पूर्वभाषी च राघवः॥ १३ ॥
अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तमः।
मायामानुषचारित्रो महादेवादिपूजितः॥ १४ ॥
सेतुकृज्जितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः।
श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्धरः॥ १५ ॥
सर्वयज्ञाधिपो यज्वा जरामरणवर्जितः।
शिवलिङ्गप्रतिष्ठाता सर्वापगुणवर्जितः॥ १६ ॥
परमात्मा परं ब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहः।
परं ज्योतिः परं धाम पराकाशः परात्परः॥ १७ ॥
परेशः पारगः पारः सर्वदेवात्मकः परः॥ १८ ॥

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीरामाय नमः ॥

# श्रीराम-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ श्रीरामाय नमः।
२ ॐ रामभद्राय नमः।
३ ॐ रामचन्द्राय नमः।
४ ॐ शाश्वताय नमः।
५ ॐ राजीवलोचनाय नमः।
६ ॐ श्रीमते नमः।
७ ॐ राजेन्द्राय नमः।
८ ॐ रघुपुङ्गवाय नमः।
९ ॐ जानकीवल्लभाय नमः।
१० ॐ जैत्राय नमः।
११ ॐ जितामित्राय नमः।
१२ ॐ जनार्दनाय नमः।
१३ ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमः।
१४ ॐ दान्ताय नमः।
१५ ॐ शरणत्राणतत्पराय नमः।
१६ ॐ वालिप्रमथनाय नमः।
१७ ॐ वाग्मिने नमः।
१८ ॐ सत्यवाचे नमः।
१९ ॐ सत्यविक्रमाय नमः।
२० ॐ सत्यव्रताय नमः।
२१ ॐ व्रतधराय नमः।
२२ ॐ सदा हनुमदाश्रिताय नमः।
२३ ॐ कौसलेयाय नमः।
२४ ॐ खरध्वंसिने नमः।
२५ ॐ विराधवधपण्डिताय नमः।
२६ ॐ विभीषणपरित्रात्रे नमः।
२७ ॐ हरकोदण्डखण्डनाय नमः।
२८ ॐ सप्ततालप्रभेत्त्रे नमः।
२९ ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः।
३० ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः।
३१ ॐ ताटकान्तकाय नमः।
३२ ॐ वेदान्तसाराय नमः।
३३ ॐ वेदात्मने नमः।
३४ ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः।
३५ ॐ दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः।
३६ ॐ त्रिमूर्तये नमः।
३७ ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः।
३८ ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
३९ ॐ त्रिलोकात्मने नमः।
४० ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः।
४१ ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः।
४२ ॐ धन्विने नमः।
४३ ॐ दण्डकारण्यकर्तनाय नमः।
४४ ॐ अहल्याशापशमनाय नमः।
४५ ॐ पितृभक्ताय नमः।
४६ ॐ वरप्रदाय नमः।
४७ ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
४८ ॐ जितक्रोधाय नमः।
४९ ॐ जितामित्राय नमः।
५० ॐ जगद्गुरवे नमः।
५१ ॐ ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः।
५२ ॐ चित्रकूटसमाश्रयाय नमः।

५३ ॐ जयन्तत्राणवरदाय नमः।
५४ ॐ सुमित्रापुत्रसेविताय नमः।
५५ ॐ सर्वदेवादिदेवाय नमः।
५६ ॐ मृतवानरजीवनाय नमः।
५७ ॐ मायामारीचहन्त्रे नमः।
५८ ॐ महादेवाय नमः।
५९ ॐ महाभुजाय नमः।
६० ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः।
६१ ॐ सौम्याय नमः।
६२ ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
६३ ॐ मुनिसंस्तुताय नमः।
६४ ॐ महायोगाय नमः।
६५ ॐ महोदाराय नमः।
६६ ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः।
६७ ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः।
६८ ॐ स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः।
६९ ॐ अनादये नमः।
७० ॐ आदिपूरुषाय नमः।
७१ ॐ महापुरुषाय नमः।
७२ ॐ पुण्योदयाय नमः।
७३ ॐ दयासाराय नमः।
७४ ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः।
७५ ॐ स्मितवक्त्राय नमः।
७६ ॐ स्मिताभाषिणे नमः।
७७ ॐ पूर्वभाषिणे नमः।
७८ ॐ राघवाय नमः।
७९ ॐ अनन्तगुणगम्भीराय नमः।
८० ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः।
८१ ॐ मायामानुषचारित्राय नमः।
८२ ॐ महादेवादिपूजिताय नमः।
८३ ॐ सेतुकृते नमः।
८४ ॐ जितवारीशाय नमः।
८५ ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः।
८६ ॐ हरये नमः।
८७ ॐ श्यामाङ्गाय नमः।
८८ ॐ सुन्दराय नमः।
८९ ॐ शूराय नमः।
९० ॐ पीतवाससे नमः।
९१ ॐ धनुर्धराय नमः।
९२ ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः।
९३ ॐ यज्विने नमः।
९४ ॐ जरामरणवर्जिताय नमः।
९५ ॐ शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः।
९६ ॐ सर्वापगुणवर्जिताय नमः।
९७ ॐ परमात्मने नमः।
९८ ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः।
९९ ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः।
१०० ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः।
१०१ ॐ परस्मै धाम्ने नमः।
१०२ ॐ पराकाशाय नमः।
१०३ ॐ परात्पराय नमः।
१०४ ॐ परेशाय नमः।
१०५ ॐ पारगाय नमः।
१०६ ॐ पाराय नमः।
१०७ ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः।
१०८ ॐ पराय नमः।

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

# श्रीहनुमत्-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

वन्दे विद्युज्ज्वलनविलसद्ब्रह्मसूत्रैकनिष्ठं
कर्णद्वन्द्वे कनकरचिते कुण्डले धारयन्तम्।
सत्कौपीनं कपिचरवृतं कामरूपं कपीन्द्रं
पुत्रं वायोरिनसुतसुखदं वज्रदेहं वरेण्यम्॥*

*स्तोत्र*

आञ्जनेयो महावीरः हनूमान्मारुतात्मजः।
तत्त्वज्ञानप्रदायकः सीतामुद्राप्रदायकः॥ १॥
अशोकवनिकाच्छेत्ता सर्वमायाविभञ्जनः।
सर्वबन्धविमोक्ता च रक्षोविध्वंसकारकः॥ २॥
परविद्यापरिहारः परशौर्यविनाशनः।
परमन्त्रनिराकर्ता परयन्त्रप्रभेदकः॥ ३॥
सर्वग्रहविनाशी च भीमसेनसहायकृत्।
सर्वदुःखहरः सर्वलोकचारी मनोजवः॥ ४॥
पारिजातद्रुमूलस्थः सर्वमन्त्रस्वरूपवान्।
सर्वतन्त्रस्वरूपी च सर्वयन्त्रात्मकश्च वै॥ ५॥
कपीश्वरो महाकायः सर्वरोगहरः प्रभुः।
बलसिद्धिकरः सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकः॥ ६॥

---

* विद्युत्-कान्तिके सदृश वर्णवाले, ज्ञानमार्गमें एकनिष्ठ, कर्णयुगलमें सुवर्णनिर्मित कुण्डल धारण करनेवाले, सुन्दर कौपीन धारण करनेवाले, कपियोंसे सदा घिरे रहनेवाले, इच्छानुसार रूप धारण करनेवाले, वानरोंके स्वामी, सुग्रीवको सुख देनेवाले, वज्रके समान देहवाले सर्वपूज्य वायुपुत्रकी मैं वन्दना करता हूँ।

कपिसेनानायकश्च भविष्यच्चतुराननः ।
कुमारब्रह्मचारी च रत्नकुण्डलदीप्तिमान्॥ ७ ॥
सञ्चलद्बालसन्नद्धलम्बमानशिखोज्ज्वलः ।
गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञो महाबलपराक्रमः॥ ८ ॥
कारागृहविमोक्ता च शृङ्खलाबन्धमोचकः ।
सागरोत्तारकः प्राज्ञः रामदूतः प्रतापवान्॥ ९ ॥
वानरः केसरिसुतः सीताशोकनिवारणः ।
अञ्जनागर्भसम्भूतो बालार्कसदृशाननः॥ १० ॥
विभीषणप्रियकरो दशग्रीवकुलान्तकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च वज्रकायो महाद्युतिः॥ ११ ॥
चिरजीवी रामभक्तो दैत्यकार्यविघातकः ।
अक्षहन्ता काञ्चनाभः पञ्चवक्त्रो महातपाः॥ १२ ॥
लङ्घिनीभञ्जनः श्रीमान् सिंहिकाप्राणभञ्जनः ।
गन्धमादनशैलस्थः लङ्कापुरविदाहकः॥ १३ ॥
सुग्रीवसचिवो धीरः शूरो दैत्यकुलान्तकः ।
सुरार्चितो महातेजा रामचूडामणिप्रदः॥ १४ ॥
कामरूपी पिङ्गलाक्षो वार्धिमैनाकपूजितः ।
कवलीकृतमार्तण्डमण्डलो विजितेन्द्रियः॥ १५ ॥
रामसुग्रीवसन्धाता महारावणमर्दनः ।
स्फटिकाभो वागधीशो नवव्याकृतिपण्डितः॥ १६ ॥
चतुर्बाहुर्दीनबन्धुर्महात्मा भक्तवत्सलः ।
सञ्जीवननगाहर्ता शुचिर्वाग्मी दृढव्रतः॥ १७ ॥
कालनेमिप्रमथनो हरिमर्कटमर्कटः ।
दान्तः शान्तः प्रसन्नात्मा शतकण्ठमदापहृत्॥ १८ ॥

**योगी रामकथालोलः सीतान्वेषणपण्डितः।**
**वज्रदंष्ट्रो वज्रनखो रुद्रवीर्यसमुद्भवः॥ १९॥**
**इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्रविनिवारकः।**
**पार्थध्वजाग्रसंवासी शरपञ्जरभेदकः॥ २०॥**
**दशबाहुर्लोकपूज्यो जाम्बवत्प्रीतिवर्धनः।**
**सीतासमेतश्रीरामपादसेवाधुरन्धरः॥ २१॥**

*॥ इति श्रीहनुमदष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं* सम्पूर्णम्॥*

---

**हनुमानञ्जनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः।**
**रामेष्टः फाल्गुनसखः पिङ्गाक्षोऽमितविक्रमः॥**
**उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः।**
**लक्ष्मणप्राणदाता च दशग्रीवस्य दर्पहा॥**
**एवं द्वादश नामानि कपीन्द्रस्य महात्मनः।**
**स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत्॥**
**तस्य सर्वभयं नास्ति रणे च विजयी भवेत्।**
**राजद्वारे गह्वरे च भयं नास्ति कदाचन॥**

हनुमान्, अंजनीसूनु, वायुपुत्र, महाबल (महाबलवान्), रामेष्ट (रामके प्यारे), फाल्गुन (अर्जुन)-के सहायक (रूपमें उनकी ध्वजामें निवास करनेवाले), पिंगाक्ष (पीली आँखोंवाले), अमितविक्रम (अनन्त पराक्रमशाली), उदधिक्रमण (समुद्रको लाँघ जानेवाले), सीता-शोक-विनाशन (सीताके शोकका नाश करनेवाले), लक्ष्मणप्राणदाता (लक्ष्मणको संजीवनी बूटी लाकर जिलानेवाले) तथा रावणदर्पहारी—महान् आत्मबलसे सम्पन्न कपिराज हनुमान्‌जीके इन बारह नामोंका जो मनुष्य सोते, जागते अथवा कहीं भी यात्रा करते समय पाठ करता है, उसे किसी प्रकारका भी भय नहीं होता और वह संग्राममें विजयी होता है। राजद्वार एवं गहन वन (आदि) किसी भी स्थानमें उसे कभी किसी प्रकारका भय नहीं रहता। **[ आनन्दरामायण ]**

---

* प्राचीन नामावलीके आधारपर संयोजित

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

# श्रीहनुमत्-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ आञ्जनेयाय नमः।
२ ॐ महावीराय नमः।
३ ॐ हनूमते नमः।
४ ॐ मारुतात्मजाय नमः।
५ ॐ तत्त्वज्ञानप्रदायकाय नमः।
६ ॐ सीतामुद्राप्रदायकाय नमः।
७ ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः।
८ ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः।
९ ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः।
१० ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः।
११ ॐ परविद्यापरिहाराय नमः।
१२ ॐ परशौर्यविनाशनाय नमः।
१३ ॐ परमन्त्रनिराकर्त्रे नमः।
१४ ॐ परयन्त्रप्रभेदकाय नमः।
१५ ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः।
१६ ॐ भीमसेनसहायकृते नमः।
१७ ॐ सर्वदुःखहराय नमः।
१८ ॐ सर्वलोकचारिणे नमः।
१९ ॐ मनोजवाय नमः।
२० ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः।
२१ ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः।
२२ ॐ सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः।
२३ ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः।
२४ ॐ कपीश्वराय नमः।
२५ ॐ महाकायाय नमः।
२६ ॐ सर्वरोगहराय नमः।
२७ ॐ प्रभवे नमः।
२८ ॐ बलसिद्धिकराय नमः।
२९ ॐ सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः।
३० ॐ कपिसेनानायकाय नमः।
३१ ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः।
३२ ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः।
३३ ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः।
३४ ॐ सञ्चलद्बालसन्नद्धलम्ब-
मानशिखोज्ज्वलाय नमः।
३५ ॐ गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः।
३६ ॐ महाबलपराक्रमाय नमः।
३७ ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः।
३८ ॐ शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः।
३९ ॐ सागरोत्तारकाय नमः।
४० ॐ प्राज्ञाय नमः।
४१ ॐ रामदूताय नमः।
४२ ॐ प्रतापवते नमः।
४३ ॐ वानराय नमः।
४४ ॐ केसरिसुताय नमः।
४५ ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः।
४६ ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः।
४७ ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः।
४८ ॐ विभीषणप्रियकराय नमः।
४९ ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः।
५० ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः।
५१ ॐ वज्रकायाय नमः।
५२ ॐ महाद्युतये नमः।
५३ ॐ चिरजीविने नमः।

५४ ॐ रामभक्ताय नमः।
५५ ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः।
५६ ॐ अक्षहन्त्रे नमः।
५७ ॐ काञ्चनाभाय नमः।
५८ ॐ पञ्चवक्त्राय नमः।
५९ ॐ महातपसे नमः।
६० ॐ लङ्किनीभञ्जनाय नमः।
६१ ॐ श्रीमते नमः।
६२ ॐ सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः।
६३ ॐ गन्धमादनशैलस्थाय नमः।
६४ ॐ लङ्कापुरविदाहकाय नमः।
६५ ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः।
६६ ॐ धीराय नमः।
६७ ॐ शूराय नमः।
६८ ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः।
६९ ॐ सुरार्चिताय नमः।
७० ॐ महातेजसे नमः।
७१ ॐ रामचूडामणिप्रदाय नमः।
७२ ॐ कामरूपिणे नमः।
७३ ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः।
७४ ॐ वार्धिमैनाकपूजिताय नमः।
७५ ॐ कवलीकृतमार्तण्ड-
मण्डलाय नमः।
७६ ॐ विजितेन्द्रियाय नमः।
७७ ॐ रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः।
७८ ॐ महारावणमर्दनाय नमः।
७९ ॐ स्फटिकाभाय नमः।
८० ॐ वागधीशाय नमः।
८१ ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः।
८२ ॐ चतुर्बाहवे नमः।
८३ ॐ दीनबन्धवे नमः।
८४ ॐ महात्मने नमः।
८५ ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
८६ ॐ सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः।
८७ ॐ शुचये नमः।
८८ ॐ वाग्मिने नमः।
८९ ॐ दृढव्रताय नमः।
९० ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः।
९१ ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः।
९२ ॐ दान्ताय नमः।
९३ ॐ शान्ताय नमः।
९४ ॐ प्रसन्नात्मने नमः।
९५ ॐ शतकण्ठमदापहृते नमः।
९६ ॐ योगिने नमः।
९७ ॐ रामकथालोलाय नमः।
९८ ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः।
९९ ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः।
१०० ॐ वज्रनखाय नमः।
१०१ ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः।
१०२ ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मा-
स्त्रविनिवारकाय नमः।
१०३ ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः।
१०४ ॐ शरपञ्जरभेदकाय नमः।
१०५ ॐ दशबाहवे नमः।
१०६ ॐ लोकपूज्याय नमः।
१०७ ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः।
१०८ ॐ सीतासमेतश्रीरामपाद-
सेवाधुरन्धराय नमः।

*॥ इति श्रीहनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

# श्रीकृष्ण-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

शिखिमुकुटविशेषं नीलपद्माङ्गदेशं
विधुमुखकृतकेशं कौस्तुभापीतवेशम्।
मधुररवकलेशं शं भजे भ्रातृशेषं
व्रजजनवनितेशं माधवं राधिकेशम्॥*

*स्तोत्र*

**श्रीकृष्णः कमलानाथो वासुदेवः सनातनः।**
**वसुदेवात्मजः पुण्यो लीलामानुषविग्रहः॥ १॥**
**श्रीवत्सकौस्तुभधरो यशोदावत्सलो हरिः।**
**चतुर्भुजात्तचक्रासिगदाशङ्खाम्बुजायुधः॥ २॥**
**देवकीनन्दनः श्रीशो नन्दगोपप्रियात्मजः।**
**यमुनावेगसंहारी बलभद्रप्रियानुजः॥ ३॥**
**पूतनाजीवितहरः शकटासुरभञ्जनः।**
**नन्दव्रजजनानन्दी सच्चिदानन्दविग्रहः॥ ४॥**
**नवनीतविलिप्ताङ्गो नवनीतनटोऽनघः।**
**नवनीतनवाहारो मुचुकुन्दप्रसादकः॥ ५॥**

---

* जिनके मस्तकपर मोरपंखका मुकुट विशेष शोभा देता है, जिनका अंगदेश (सम्पूर्ण शरीर) नील कमलके समान श्याम है, चन्द्रमाके समान मनोहर मुखपर कुंचित केश सुशोभित हैं, कौस्तुभमणिकी सुनहरी आभासे जिनका वेश कुछ पीतवर्णका दिखायी देता है (अथवा जो पीताम्बरधारी हैं), जो (मुरलीकी) मधुर ध्वनिरूपी कलाके स्वामी हैं, कल्याणस्वरूप हैं, शेषावतार बलराम जिनके भाई हैं तथा जो व्रजवनिताओंके वल्लभ हैं, उन राधिकाके प्राणेश्वर माधवका मैं भजन (चिन्तन) करता हूँ।

षोडशस्त्रीसहस्रेशस्त्रिभङ्गी मधुराकृतिः।
शुकवागमृताब्धीन्दुर्गोविन्दो योगिनां पतिः॥ ६ ॥
वत्सवाटचरोऽनन्तो धेनुकासुरभञ्जनः।
तृणीकृततृणावर्तो यमलार्जुनभञ्जनः॥ ७ ॥
उत्तालतालभेत्ता च तमालश्यामलाकृतिः।
गोपगोपीश्वरो योगी कोटिसूर्यसमप्रभः॥ ८ ॥
इलापतिः परं ज्योतिर्यादवेन्द्रो यदूद्वहः।
वनमाली पीतवासाः पारिजातापहारकः॥ ९ ॥
गोवर्धनाचलोद्धर्ता गोपालः सर्वपालकः।
अजो निरञ्जनः कामजनकः कञ्जलोचनः॥ १० ॥
मधुहा मधुरानाथो द्वारकानायको बली।
वृन्दावनान्तसंचारी तुलसीदामभूषणः॥ ११ ॥
स्यमन्तकमणेर्हर्ता नरनारायणात्मकः।
कुब्जाकृष्णाम्बरधरो मायी परमपूरुषः॥ १२ ॥
मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदः।
संसारवैरी कंसारिर्मुरारिर्नरकान्तकः॥ १३ ॥
अनादिब्रह्मचारी च कृष्णाव्यसनकर्षकः।
शिशुपालशिरश्छेत्ता दुर्योधनकुलान्तकः॥ १४ ॥
विदुराक्रूरवरदो विश्वरूपप्रदर्शकः।
सत्यवाक्सत्यसङ्कल्पः सत्यभामारतो जयी॥ १५ ॥

सुभद्रापूर्वजो विष्णुर्भीष्ममुक्तिप्रदायकः।
जगद्गुरुर्जगन्नाथो वेणुनादविशारदः॥ १६॥
वृषभासुरविध्वंसी बाणासुरकरान्तकः।
युधिष्ठिरप्रतिष्ठाता बर्हिबर्हावतंसकः॥ १७॥
पार्थसारथिरव्यक्तो गीतामृतमहोदधिः।
कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः॥ १८॥
दामोदरो यज्ञभोक्ता दानवेन्द्रविनाशकः।
नारायणः परब्रह्म पन्नगाशनवाहनः॥ १९॥
जलक्रीडासमासक्तगोपीवस्त्रापहारकः।
पुण्यश्लोकस्तीर्थपादो वेदवेद्यो दयानिधिः॥ २०॥
सर्वतीर्थात्मकः सर्वग्रहरूपी परात्परः।
एवं श्रीकृष्णदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ २१॥
कृष्णनामामृतं नाम परमानन्दकारकम्।
अत्युपद्रवदोषघ्नं परमायुष्यवर्धनम्॥ २२॥

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीकृष्णाष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

# श्रीकृष्ण-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ श्रीकृष्णाय नमः।
२ ॐ कमलानाथाय नमः।
३ ॐ वासुदेवाय नमः।
४ ॐ सनातनाय नमः।
५ ॐ वसुदेवात्मजाय नमः।
६ ॐ पुण्याय नमः।
७ ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः।
८ ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः।
९ ॐ यशोदावत्सलाय नमः।
१० ॐ हरये नमः।
११ ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासिगदा-
शङ्खाम्बुजायुधाय नमः।
१२ ॐ देवकीनन्दनाय नमः।
१३ ॐ श्रीशाय नमः।
१४ ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः।
१५ ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः।
१६ ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः।
१७ ॐ पूतनाजीवितहराय नमः।
१८ ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः।
१९ ॐ नन्दव्रजजनानन्दिने नमः।
२० ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः।
२१ ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः।
२२ ॐ नवनीतनटाय नमः।
२३ ॐ अनघाय नमः।
२४ ॐ नवनीतनवाहाराय नमः।
२५ ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः।
२६ ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः।
२७ ॐ त्रिभङ्गिने नमः।
२८ ॐ मधुराकृतये नमः।
२९ ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः।
३० ॐ गोविन्दाय नमः।
३१ ॐ योगिनां पतये नमः।
३२ ॐ वत्सवाटचराय नमः।
३३ ॐ अनन्ताय नमः।
३४ ॐ धेनुकासुरभञ्जनाय नमः।
३५ ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः।
३६ ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः।
३७ ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः।
३८ ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः।
३९ ॐ गोपगोपीश्वराय नमः।
४० ॐ योगिने नमः।
४१ ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः।
४२ ॐ इलापतये नमः।
४३ ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः।
४४ ॐ यादवेन्द्राय नमः।
४५ ॐ यदूद्वहाय नमः।
४६ ॐ वनमालिने नमः।
४७ ॐ पीतवाससे नमः।
४८ ॐ पारिजातापहारकाय नमः।
४९ ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः।
५० ॐ गोपालाय नमः।
५१ ॐ सर्वपालकाय नमः।
५२ ॐ अजाय नमः।
५३ ॐ निरञ्जनाय नमः।

५४ ॐ कामजनकाय नमः।
५५ ॐ कञ्जलोचनाय नमः।
५६ ॐ मधुघ्ने नमः।
५७ ॐ मथुरानाथाय नमः।
५८ ॐ द्वारकानायकाय नमः।
५९ ॐ बलिने नमः।
६० ॐ वृन्दावनान्तसंचारिणे नमः।
६१ ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः।
६२ ॐ स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः।
६३ ॐ नरनारायणात्मकाय नमः।
६४ ॐ कुब्जाकृष्णाम्बर-
धराय नमः।
६५ ॐ मायिने नमः।
६६ ॐ परमपूरुषाय नमः।
६७ ॐ मुष्टिकासुरचाणूरमल्ल-
युद्धविशारदाय नमः।
६८ ॐ संसारवैरिणे नमः।
६९ ॐ कंसारये नमः।
७० ॐ मुरारये नमः।
७१ ॐ नरकान्तकाय नमः।
७२ ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः।
७३ ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः।
७४ ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः।
७५ ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः।
७६ ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः।
७७ ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः।
७८ ॐ सत्यवाचे नमः।
७९ ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः।
८० ॐ सत्यभामारताय नमः।
८१ ॐ जयिने नमः।
८२ ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः।
८३ ॐ विष्णवे नमः।
८४ ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः।
८५ ॐ जगद्गुरवे नमः।
८६ ॐ जगन्नाथाय नमः।
८७ ॐ वेणुनादविशारदाय नमः।
८८ ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः।
८९ ॐ बाणासुरकरान्तकाय नमः।
९० ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः।
९१ ॐ बर्हिबर्हावतंसकाय नमः।
९२ ॐ पार्थसारथये नमः।
९३ ॐ अव्यक्ताय नमः।
९४ ॐ गीतामृतमहोदधये नमः।
९५ ॐ कालीयफणिमाणिक्य-
रञ्जितश्रीपदाम्बुजाय नमः।
९६ ॐ दामोदराय नमः।
९७ ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः।
९८ ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः।
९९ ॐ नारायणाय नमः।
१०० ॐ परब्रह्मणे नमः।
१०१ ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः।
१०२ ॐ जलक्रीडासमासक्त-
गोपीवस्त्रापहारकाय नमः।
१०३ ॐ पुण्यश्लोकाय नमः।
१०४ ॐ तीर्थपादाय नमः।
१०५ ॐ वेदवेद्याय नमः।
१०६ ॐ दयानिधये नमः।
१०७ ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः।
१०८ ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः।
१०९ ॐ परात्पराय नमः।

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्रीकृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीगोपालाय नमः ॥

# श्रीगोपाल-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

**कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं**
**नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।**
**सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली**
**गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥***

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीगोपालशतनामस्तोत्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीगोपालः परमात्मा देवता श्रीगोपालप्रीत्यर्थे शतनामपाठे विनियोगः।*

*स्तोत्र*

**गोपालो गोपतिर्गोप्ता गोविन्दो गोकुलप्रियः।**
**गम्भीरो गगनो गोपीप्राणभृत् प्राणधारकः ॥ १ ॥**
**पतितानन्दनो नन्दी नन्दीशः कंससूदनः।**
**नारायणो नरत्राता नरकार्णवतारकः ॥ २ ॥**
**नवनीतप्रियो नेता नवीनघनसुन्दरः।**
**नवबालकवात्सल्यो ललितानन्दतत्परः ॥ ३ ॥**
**पुरुषार्थप्रदः प्रेमप्रवीणः परमाकृतिः।**
**करुणः करुणानाथः कैवल्यसुखदायकः ॥ ४ ॥**
**कदम्बकुसुमावेशी कदम्बवनमन्दिरः।**
**कादम्बीविमदामोदघूर्णलोचनपङ्कजः ॥ ५ ॥**
**कामी कान्तकलानन्दी कान्तः कामनिधिः कविः।**
**कौमोदकीगदापाणिः कवीन्द्रो गतिमान्हरः ॥ ६ ॥**

---

* जिनके मस्तकपर कस्तूरीका तिलक है, वक्षःस्थलमें कौस्तुभमणि है, नासिकाग्रमें अति सुन्दर मोतीका आभूषण (बुलाक) है, करतलमें वंशी है, हाथोंमें कंकण हैं, सम्पूर्ण शरीरमें मनोहर हरिचन्दनका लेप हुआ है और कण्ठमें मोतियोंकी माला है, व्रजांगनाओंसे घिरे हुए ऐसे गोपालचूडामणिकी बलिहारी है।

कमलेशः कलानाथः कैवल्यः सुखसागरः।
केशवः केशिहा केशः कलिकल्मषनाशनः॥ ७ ॥
कृपालुः करुणासेवी कृपोन्मीलितलोचनः।
स्वच्छन्दः सुन्दरः सुन्दः सुरवृन्दनिषेवितः॥ ८ ॥
सर्वज्ञः सर्वदो दाता सर्वपापविनाशनः।
सर्वाह्लादकरः सर्वः सर्ववेदविदां प्रभुः॥ ९ ॥
वेदान्तवेद्यो वेदात्मा वेदप्राणकरो विभुः।
विश्वात्मा विश्वविद्विश्वप्राणदो विश्ववन्दितः॥ १० ॥
विश्वेशः शमनस्त्राता विश्वेश्वरः सुखप्रदः।
विश्वदो विश्वहारी च पूरकः करुणानिधिः॥ ११ ॥
धनेशो धनदो धन्वी धीरो धीरजनप्रियः।
धरासुखप्रदो धाता दुर्धरान्तकरो धरः॥ १२ ॥
रमानाथो रमानन्दो रसज्ञो हृदयास्पदः।
रसिको रसिदो रासी रासानन्दकरो रसः॥ १३ ॥
राधिकाराधितो राधाप्राणेशः प्रेमसागरः।
नाम्नां शतं समासेन तव स्नेहात्प्रकाशितम्॥ १४ ॥
अप्रकाश्यमिमं मन्त्रं गोपनीयं प्रयत्नतः।
यस्य तस्यैकपठनात्सर्वविद्यानिधिर्भवेत्॥ १५ ॥
पूजयित्वा दयानाथं ततः स्तोत्रमुदीरयेत्।
पठनाद्देवदेवेशि भोगमुक्तफलं लभेत्॥ १६ ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वदेवाधिपो भवेत्।
जपलक्षेण सिद्धं स्यात्सत्यं सत्यं न संशयः।
किमुक्तेनैव बहुना विष्णुतुल्यो भवेन्नरः॥ १७ ॥

*॥ इति श्रीहरगौरीसंवादे श्रीगोपालशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीगोपालाय नमः ॥

# श्रीगोपाल-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ गोपालाय नमः ।
२ ॐ गोपतये नमः ।
३ ॐ गोप्त्रे नमः ।
४ ॐ गोविन्दाय नमः ।
५ ॐ गोकुलप्रियाय नमः ।
६ ॐ गम्भीराय नमः ।
७ ॐ गगनाय नमः ।
८ ॐ गोपीप्राणभृते नमः ।
९ ॐ प्राणधारकाय नमः ।
१० ॐ पतितानन्दनाय नमः ।
११ ॐ नन्दिने नमः ।
१२ ॐ नन्दीशाय नमः ।
१३ ॐ कंससूदनाय नमः ।
१४ ॐ नारायणाय नमः ।
१५ ॐ नरत्रात्रे नमः ।
१६ ॐ नरकार्णवतारकाय नमः ।
१७ ॐ नवनीतप्रियाय नमः ।
१८ ॐ नेत्रे नमः ।
१९ ॐ नवीनघनसुन्दराय नमः ।
२० ॐ नवबालकवात्सल्याय नमः ।
२१ ॐ ललितानन्दतत्पराय नमः ।
२२ ॐ पुरुषार्थप्रदाय नमः ।
२३ ॐ प्रेमप्रवीणाय नमः ।
२४ ॐ परमाकृतये नमः ।
२५ ॐ करुणाय नमः ।
२६ ॐ करुणानाथाय नमः ।
२७ ॐ कैवल्यसुखदायकाय नमः ।
२८ ॐ कदम्बकुसुमावेशिने नमः ।
२९ ॐ कदम्बवनमन्दिराय नमः ।
३० ॐ कादम्बीविमदामोदघूर्ण-
लोचनपङ्कजाय नमः ।
३१ ॐ कामिने नमः ।
३२ ॐ कान्तकलायै नमः ।
३३ ॐ आनन्दिने नमः ।
३४ ॐ कान्ताय नमः ।
३५ ॐ कामनिधये नमः ।
३६ ॐ कवये नमः ।
३७ ॐ कौमोदकीगदा-
पाणये नमः ।
३८ ॐ कवीन्द्राय नमः ।
३९ ॐ गतिमते नमः ।
४० ॐ हराय नमः ।
४१ ॐ कमलेशाय नमः ।
४२ ॐ कलानाथाय नमः ।
४३ ॐ कैवल्याय नमः ।
४४ ॐ सुखसागराय नमः ।
४५ ॐ केशवाय नमः ।
४६ ॐ केशिघ्ने नमः ।
४७ ॐ केशाय नमः ।
४८ ॐ कलिकल्मषनाशनाय नमः ।

४९ ॐ कृपालवे नमः।
५० ॐ करुणासेविने नमः।
५१ ॐ कृपोन्मीलितलोचनाय नमः।
५२ ॐ स्वच्छन्दाय नमः।
५३ ॐ सुन्दराय नमः।
५४ ॐ सुन्दाय नमः।
५५ ॐ सुरवृन्दनिषेविताय नमः।
५६ ॐ सर्वज्ञाय नमः।
५७ ॐ सर्वदाय नमः।
५८ ॐ दात्रे नमः।
५९ ॐ सर्वपापविनाशनाय नमः।
६० ॐ सर्वाह्लादकराय नमः।
६१ ॐ सर्वाय नमः।
६२ ॐ सर्ववेदविदां प्रभवे नमः।
६३ ॐ वेदान्तवेद्याय नमः।
६४ ॐ वेदात्मने नमः।
६५ ॐ वेदप्राणकराय नमः।
६६ ॐ विभवे नमः।
६७ ॐ विश्वात्मने नमः।
६८ ॐ विश्वविदे नमः।
६९ ॐ विश्वप्राणदाय नमः।
७० ॐ विश्ववन्दिताय नमः।
७१ ॐ विश्वेशाय नमः।
७२ ॐ शमनाय नमः।
७३ ॐ त्रात्रे नमः।
७४ ॐ विश्वेश्वराय नमः।
७५ ॐ सुखप्रदाय नमः।
७६ ॐ विश्वदाय नमः।
७७ ॐ विश्वहारिणे नमः।
७८ ॐ पूरकाय नमः।
७९ ॐ करुणानिधये नमः।
८० ॐ धनेशाय नमः।
८१ ॐ धनदाय नमः।
८२ ॐ धन्विने नमः।
८३ ॐ धीराय नमः।
८४ ॐ धीरजनप्रियाय नमः।
८५ ॐ धरासुखप्रदाय नमः।
८६ ॐ धात्रे नमः।
८७ ॐ दुर्धरान्तकराय नमः।
८८ ॐ धराय नमः।
८९ ॐ रमानाथाय नमः।
९० ॐ रमानन्दाय नमः।
९१ ॐ रसज्ञाय नमः।
९२ ॐ हृदयास्पदाय नमः।
९३ ॐ रसिकाय नमः।
९४ ॐ रसिदाय नमः।
९५ ॐ रासिने नमः।
९६ ॐ रासानन्दकराय नमः।
९७ ॐ रसाय नमः।
९८ ॐ राधिकाराधिताय नमः।
९९ ॐ राधाप्राणेशाय नमः।
१०० ॐ प्रेमसागराय नमः।

*॥ इति श्रीहरगौरीसंवादे श्रीगोपालाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीविट्ठलाय नमः ॥

# श्रीविट्ठल-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रुत्वा नामसहस्त्रं श्रीविट्ठलस्य गुणान्वितम्।
पार्वती परिपप्रच्छ शङ्करं लोकशङ्करम्॥ १ ॥

*श्रीपार्वत्युवाच*

देवदेव महादेव देवानुग्रहविग्रह।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां तस्य देवस्य मे वद॥ २ ॥
जनः कलिमलादिग्धोऽलसः कामाविलो जडः।
पाठाद्यस्य सकृद्वापि सौशील्यादिरतो भवेत्॥ ३ ॥
तदहं श्रोतुमिच्छामि तवाज्ञानं न विद्यते।

*सूत उवाच*

इत्युक्तो भार्यया शम्भुः संस्मरन् पुरुषोत्तमम्॥ ४ ॥
कटिस्थितकरद्वन्द्वं जगाद नगपुत्रिकाम्।

*श्रीशङ्कर उवाच*

देवि लोकोपकाराय कृतः प्रश्नस्त्वयानघे॥ ५ ॥
हिताय सर्वजन्तूनां नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
श्रीविट्ठलस्य देवस्य वाग्मिसिद्धिप्रदं नृणाम्॥ ६ ॥
अष्टोत्तरशतस्याहमृषिः प्रोक्तो मनीषिभिः।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता श्रीविट्ठलः परिकीर्तितः॥ ७ ॥

*ध्यान*

ध्यायेच्छ्रीविट्ठलाख्यं समपदकमलं पद्मपत्रायताक्षं
गम्भीरस्निग्धहासं कटिनिहितकरं नीलमेघावभासम्।
विद्युद्वासो वसानं मणिमयमुकुटं कुण्डलोद्भासिगण्डं
मायूरस्रग्विभूषाभयवरसहितं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्*॥ ८ ॥

*स्तोत्र*

ॐ क्लीं। विट्ठलः पुण्डरीकाक्षः पुण्डरीकनिभेक्षणः।
पुण्डरीकाश्रमपदः पुण्डरीकजलाप्लुतः॥ ९ ॥
पुण्डरीकक्षेत्रवासः पुण्डरीकवरप्रदः।
शारदाधिष्ठितद्वारः शारदेन्दुनिभाननः॥ १० ॥
नारदाधिष्ठितद्वारो नारदेशप्रपूजितः।
भुवनाधीश्वरीद्वारो भुवनाधीश्वरीश्वरः॥ ११ ॥
दुर्गाश्रितोत्तरद्वारो दुर्गमागमसंवृतः।
क्षुल्लपेशीपिनद्धोरुर्गोपेष्ट्याश्लिष्टजानुकः॥ १२ ॥
कटिस्थितकरद्वन्द्वो वरदाभयमुद्रितः।
त्रेतातोरणपालस्थत्रिविक्रम इतीरितः॥ १३ ॥
तितऊक्षेत्रपोश्वत्थकोटीश्वरवरप्रदः।
स एव करवीरस्थो नारीनारायणीति च॥ १४ ॥

* [इष्टिकापीठ (ईंट)-पर] अपने चरणकमलको समरूपमें रखनेवाले, कमलपत्रके समान विशाल नेत्रोंवाले, गम्भीर तथा मधुर हाससे युक्त, कटिप्रदेशपर स्थित किये हुए हाथोंसे सुशोभित, नीलमेघके समान कान्तिवाले, विद्युत्वर्णके सदृश वस्त्र धारण करनेवाले, मणिजटित मुकुटसे सुशोभित, कुण्डलसे मण्डित कपोलोंवाले, मयूरपंखकी माला-वस्त्राभूषण-वर तथा अभयमुद्रासे समन्वित और कौस्तुभमणिसे उद्भासित विग्रहवाले श्रीविट्ठल नामसे प्रसिद्ध भगवान्का ध्यान करना चाहिये।

नीरासंगमसंस्थश्च सैकतः प्रतिमार्चितः।
वेणुनादेन देवानां मनःश्रवणमङ्गलः॥ १५॥
देवकन्याकोटिकोटिनीराजितपदाम्बुजः।
पद्मतीर्थस्थिताश्वत्थो नरो नारायणो महान्॥ १६॥
चन्द्रभागासरोनीरकेलिलोलदिगम्बरः।
ससध्रीचीत्सवीबूचीरितिश्रुत्यर्थरूपधृक्॥ १७॥
ज्योतिर्मयक्षेत्रवासी सर्वोत्कृष्टत्रयात्मकः।
स्वकुण्डलप्रतिष्ठाता पञ्चायुधजलप्रियः॥ १८॥
क्षेत्रपालाग्रपूजार्थी पार्वतीपतिपूजितः।
चतुर्मुखस्तुतो विष्णुर्जगन्मोहनरूपधृक्॥ १९॥
मन्त्राक्षरावलीहृत्स्थकौस्तुभोरस्थलप्रियः।
स्वमन्त्रोज्जीवितजनः सर्वकीर्तनवल्लभः॥ २०॥
वासुदेवो दयासिन्धुर्गोगोपीपरिवारितः।
युधिष्ठिरहतारातिर्मुक्तकेशीवरप्रदः॥ २१॥
बलदेवोपदेष्टा च रुक्मिणीपुत्रनायकः।
गुरुपुत्रप्रदो नित्यमहिमा भक्तवत्सलः॥ २२॥
भक्तारिहा महादेवो भक्ताभिलषितप्रदः।
सव्यसाची ब्रह्मविद्यागुरुर्मोहापहारकः॥ २३॥
भीमामार्गप्रदाता च भीमसेनमतानुगः।
गन्धर्वानुग्रहकरो ह्यपराधसहो हरिः॥ २४॥
स्वप्नदर्शी स्वप्नदृश्यो भक्तदुःस्वप्नशान्तिकृत्।
आपत्कालानुपेक्षी चानपेक्षोऽपेक्षितो जनैः॥ २५॥

सत्योपयाचनः सत्यसन्धः सत्याभितारकः।
सत्याजानी रमाजानी राधाजानी रथाङ्गभाक्॥ २६॥
सिञ्चनः क्रीडनो गोपैर्दधिदुग्धापहारकः।
बोधिन्युत्सवयुक्तीर्थः शयन्युत्सवभूमिभाक्॥ २७॥
मार्गशीर्षोत्सवाक्रान्तवेणुनादपदाङ्कभूः।
दध्यन्नव्यञ्जनाभोक्ता दधिभुक्कामपूरकः॥ २८॥
विलान्तर्धानसत्केलिलोलुपो गोपवल्लभः।
सखिनेत्रे पिधायाशु कोऽहं पृच्छाविशारदः॥ २९॥
समासमप्रश्नपूर्वमुष्टिमुष्टिप्रदर्शिकः।
कुटिलीलासु कुशलः कुटिलालकमण्डितः॥ ३०॥
सारीलीलानुसारी च वाहक्रीडापरः सदा।
कार्णाटकीरतिरतो मङ्गलोपवनास्थितः॥ ३१॥
माध्याह्नतीर्थपूरेक्षाविस्मायितजगत्त्रयः।
निवारितक्षेत्रविघ्नो दुष्टदुर्बुद्धिभञ्जनः॥ ३२॥
वालुकावृक्षपाषाणपशुपक्षिप्रतिष्ठितः।
आशुतोषो भक्तवशः पाण्डुरङ्गः सुपावनः॥ ३३॥
पुण्यकीर्तिः परं ब्रह्म ब्रह्मण्यः कृष्ण एव च।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां विट्ठलस्य महात्मनः॥ ३४॥
इति ते कथितं देवि पवित्रं मङ्गलं महत्।
त्रिकालमेककालं वा यः पठेन्नियतः शुचिः॥ ३५॥
करस्थाः सिद्धयस्तस्य सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।
अपुत्रो बहुपुत्रः स्यादविद्यः सर्वविद्यते॥ ३६॥

निर्धनो धनदो नूनं भवेदस्य निषेवणात्।
अविनाभूतभार्यश्च जितारातिर्निरामयः ॥ ३७ ॥
बहुनोक्तेन किं देवि हरिवल्लभतामियात्।

*सूत उवाच*

श्रुत्वा तन्महदाश्चर्यमष्टोत्तरशतं परम् ॥ ३८ ॥
पुनः पुनः प्रणम्येशं पार्वती वाक्यमब्रवीत्।

*पार्वत्युवाच*

तत्क्षेत्रवसतिश्चैव तत्तीर्थस्यावगाहनम् ॥ ३९ ॥
तन्मूर्तिदर्शनं चैव तन्नामावलिकीर्तनम्।
देहि मे सर्वदा स्वामिन्नेकाग्रमनसा विभो ॥ ४० ॥

*श्रीशङ्कर उवाच*

तदस्तु तव देवेशि ममाप्येतन्मनीषितम्।
इत्युक्त्वा प्रययौ तस्य निवासं परमादरात् ॥ ४१ ॥

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे पञ्चोनषष्टिसाहस्र्यां संहितायां हररहस्ये उमामहेश्वरसंवादे श्रीविट्ठलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीविट्ठलाय नमः ॥

# श्रीविट्ठल-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ विट्ठलाय नमः।
२ ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
३ ॐ पुण्डरीकनिभेक्षणाय नमः।
४ ॐ पुण्डरीकाश्रमपदाय नमः।
५ ॐ पुण्डरीकजलाप्लुताय नमः।
६ ॐ पुण्डरीकक्षेत्रवासाय नमः।
७ ॐ पुण्डरीकवरप्रदाय नमः।
८ ॐ शारदाधिष्ठितद्वाराय नमः।
९ ॐ शारदेन्दुनिभाननाय नमः।
१० ॐ नारदाधिष्ठितद्वाराय नमः।
११ ॐ नारदेशप्रपूजिताय नमः।
१२ ॐ भुवनाधीश्वरीद्वाराय नमः।
१३ ॐ भुवनाधीश्वरीश्वराय नमः।
१४ ॐ दुर्गाश्रितोत्तरद्वाराय नमः।
१५ ॐ दुर्गमागमसंवृताय नमः।
१६ ॐ क्षुल्लपेशीपिनद्धोरवे नमः।
१७ ॐ गोपेष्ट्याश्लिष्टजानुकाय नमः।
१८ ॐ कटस्थितकरद्वन्द्वाय नमः।
१९ ॐ वरदाभयमुद्रिताय नमः।
२० ॐ त्रेतातोरणपालस्थत्रिविक्रमाय नमः।
२१ ॐ तितऊक्षेत्रपोश्वत्थकोटी-
श्वरवरप्रदाय नमः।
२२ ॐ करवीरस्थाय नमः।
२३ ॐ नारीनारायण्यै नमः।
२४ ॐ नीरासंगमसंस्थाय नमः।
२५ ॐ सैकताय नमः।
२६ ॐ प्रतिमार्चिताय नमः।
२७ ॐ वेणुनादेन देवानां मनः-
श्रवणमङ्गलाय नमः।
२८ ॐ देवकन्याकोटिकोटिनीरा-
जितपदाम्बुजाय नमः।
२९ ॐ पद्मतीर्थस्थिताश्वत्थाय नमः।
३० ॐ नराय नमः।
३१ ॐ नारायणाय नमः।
३२ ॐ महते नमः।
३३ ॐ चन्द्रभागासरोनीरकेलि-
लोलदिगम्बराय नमः।
३४ ॐ ससध्रीचीत्सवीबूचीरिति-
श्रुत्यर्थरूपधृते नमः।
३५ ॐ ज्योतिर्मयक्षेत्रवासिने नमः।
३६ ॐ सर्वोत्कृष्टत्रयात्मकाय नमः।
३७ ॐ स्वकुण्डलप्रतिष्ठात्रे नमः।
३८ ॐ पञ्चायुधजलप्रियाय नमः।
३९ ॐ क्षेत्रपालाग्रपूजार्थिने नमः।
४० ॐ पार्वतीपतिपूजिताय नमः।
४१ ॐ चतुर्मुखस्तुताय नमः।
४२ ॐ विष्णवे नमः।
४३ ॐ जगन्मोहनरूपधृते नमः।
४४ ॐ मन्त्राक्षरावलीहृत्स्थकौ-
स्तुभोरस्थलप्रियाय नमः।
४५ ॐ स्वमन्त्रोज्जीवितजनाय नमः।
४६ ॐ सर्वकीर्तनवल्लभाय नमः।
४७ ॐ वासुदेवाय नमः।
४८ ॐ दयासिन्धवे नमः।
४९ ॐ गोगोपीपरिवारिताय नमः।
५० ॐ युधिष्ठिरहताराातये नमः।
५१ ॐ मुक्तकेशीवरप्रदाय नमः।
५२ ॐ बलदेवोपदेष्ट्रे नमः।
५३ ॐ रुक्मिणीपुत्रनायकाय नमः।
५४ ॐ गुरुपुत्रप्रदाय नमः।
५५ ॐ नित्यमहिम्ने नमः।
५६ ॐ भक्तवत्सलाय नमः।

५७ ॐ भक्तारिघ्ने नमः।
५८ ॐ महादेवाय नमः।
५९ ॐ भक्ताभिलषितप्रदाय नमः।
६० ॐ सव्यसाचिने नमः।
६१ ॐ ब्रह्मविद्यागुरवे नमः।
६२ ॐ मोहापहारकाय नमः।
६३ ॐ भीमामार्गप्रदात्रे नमः।
६४ ॐ भीमसेनमतानुगाय नमः।
६५ ॐ गन्धर्वानुग्रहकराय नमः।
६६ ॐ अपराधसहाय नमः।
६७ ॐ हरये नमः।
६८ ॐ स्वप्नदर्शिने नमः।
६९ ॐ स्वप्नदृश्याय नमः।
७० ॐ भक्तदुःस्वप्नशान्तिकृते नमः।
७१ ॐ आपत्कालानुपेक्षिने नमः।
७२ ॐ अनपेक्षाय नमः
७३ ॐ अपेक्षिताय नमः।
७४ ॐ सत्योपयाचनाय नमः।
७५ ॐ सत्यसन्धाय नमः।
७६ ॐ सत्याभितारकाय नमः।
७७ ॐ सत्याजानये नमः।
७८ ॐ रमाजानये नमः।
७९ ॐ राधाजानये नमः।
८० ॐ रथाङ्गभाजे नमः।
८१ ॐ सिञ्चनाय नमः।
८२ ॐ क्रीडनाय नमः।
८३ ॐ गोपैर्दधिदुग्धापहारकाय नमः।
८४ ॐ बोधिन्युत्सवयुक्तीर्थाय नमः।
८५ ॐ शयन्युत्सवभूमिभाजे नमः।
८६ ॐ मार्गशीर्षोत्सवाक्रान्तवेणु-
नादपदाङ्कभुवे नमः।
८७ ॐ दध्यन्नव्यञ्जनाभोक्त्रे नमः।
८८ ॐ दधिभुजे नमः।
८९ ॐ कामपूरकाय नमः।
९० ॐ विलान्तर्धानसत्केलि-
लोलुपाय नमः।
९१ ॐ गोपवल्लभाय नमः।
९२ ॐ सखिनेत्रे पिधायाशु कोऽहं
पृच्छाविशारदाय नमः।
९३ ॐ समासमप्रश्नपूर्वमुष्टि-
मुष्टिप्रदर्शिकाय नमः।
९४ ॐ कुटिलीलासुकुशलाय नमः।
९५ ॐ कुटिलालक-
मण्डिताय नमः।
९६ ॐ सारीलीलानुसारिणे नमः।
९७ ॐ वाहक्रीडापराय नमः।
९८ ॐ कार्णाटकीरतिरताय नमः।
९९ ॐ मङ्गलोपवनास्थिताय नमः।
१०० ॐ माध्याह्नतीर्थपूरेक्षावि-
स्मायितजगत्त्रयाय नमः।
१०१ ॐ निवारितक्षेत्रविघ्नाय नमः।
१०२ ॐ दुष्टदुर्बुद्धिभञ्जनाय नमः।
१०३ ॐ वालुकावृक्षपाषाण-
पशुपक्षिप्रतिष्ठिताय नमः।
१०४ ॐ आशुतोषाय नमः।
१०५ ॐ भक्तवशाय नमः।
१०६ ॐ पाण्डुरङ्गाय नमः।
१०७ ॐ सुपावनाय नमः।
१०८ ॐ पुण्यकीर्तये नमः।
१०९ ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः।
११० ॐ ब्रह्मण्याय नमः।
१११ ॐ कृष्णाय नमः।

*॥ इति श्रीपद्मपुराणे पञ्चोनषष्टिसाहस्त्र्यां संहितायां हररहस्ये उमामहेश्वरसंवादे श्रीविट्ठलाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीसूर्याय नमः ॥

# श्रीसूर्य-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥*

*स्तोत्र*

*धौम्य उवाच*

सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः ।
गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः ॥ १ ॥
पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम् ।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥ २ ॥
इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः ॥ ३ ॥
वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसां पतिः ।
धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ ४ ॥
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः ।
कलाकाष्ठामुहूर्ताश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ ५ ॥
संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः ।
पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः ॥ ६ ॥

---

* भगवान् नारायण तपे हुए स्वर्णसदृश कान्तिमान् शरीर धारण किये हुए हैं। उनके गलेमें हार, भुजाओंमें बाजूबन्द एवं सिरपर किरीट विराजमान है। उनके कान मकरकुण्डलसे सुशोभित हैं। वे अपने दोनों हाथोंमें शंख-चक्र धारण किये हुए हैं। सूर्यमण्डलमें कमलासनपर बैठे हुए ऐसे भगवान् सूर्यनारायणका चिन्तन करना चाहिये।

कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः।
वरुणः सागरोंऽशुश्च जीमूतो जीवनोऽरिहा॥ ७ ॥
भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः।
स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः॥ ८ ॥
अनन्तः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः।
जयो विशालो वरदः सर्वधातुनिषेचिता॥ ९ ॥
मनःसुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारकः।
धन्वन्तरिर्धूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः॥ १० ॥
द्वादशात्मारविन्दाक्षः पिता माता पितामहः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम्॥ ११ ॥
देहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः॥ १२ ॥
एतद् वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः।
नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत् स्वयम्भुवा॥ १३ ॥
सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम्।
वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम्॥ १४ ॥
सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत्
स पुत्रदारान् धनरत्नसञ्चयान्।
लभेत जातिस्मरतां नरः सदा
धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान्॥ १५ ॥
इमं स्तवं देववरस्य यो नरः
प्रकीर्तयेच्छुचिसुमनाः समाहितः।
विमुच्यते शोकदवाग्निसागरा-
ल्लभेत कामान् मनसा यथेप्सितान्॥ १६ ॥

*॥ इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे श्रीसूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीसूर्याय नमः ॥

# श्रीसूर्य-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ सूर्याय नमः ।
२ ॐ अर्यमणे नमः ।
३ ॐ भगाय नमः ।
४ ॐ त्वष्ट्रे नमः ।
५ ॐ पूषणे नमः ।
६ ॐ अर्काय नमः ।
७ ॐ सवित्रे नमः ।
८ ॐ रवये नमः ।
९ ॐ गभस्तिमते नमः ।
१० ॐ अजाय नमः ।
११ ॐ कालाय नमः ।
१२ ॐ मृत्यवे नमः ।
१३ ॐ धात्रे नमः ।
१४ ॐ प्रभाकराय नमः ।
१५ ॐ पृथिव्यै नमः ।
१६ ॐ अद्भ्यो नमः ।
१७ ॐ तेजसे नमः ।
१८ ॐ खाय नमः ।
१९ ॐ वायवे नमः ।
२० ॐ परायणाय नमः ।
२१ ॐ सोमाय नमः ।
२२ ॐ बृहस्पतये नमः ।
२३ ॐ शुक्राय नमः ।
२४ ॐ बुधाय नमः ।
२५ ॐ अङ्गारकाय नमः ।
२६ ॐ इन्द्राय नमः ।
२७ ॐ विवस्वते नमः ।
२८ ॐ दीप्तांशवे नमः ।
२९ ॐ शुचये नमः ।
३० ॐ शौरये नमः ।
३१ ॐ शनैश्चराय नमः ।
३२ ॐ ब्रह्मणे नमः ।
३३ ॐ विष्णवे नमः ।
३४ ॐ रुद्राय नमः ।
३५ ॐ स्कन्दाय नमः ।
३६ ॐ वरुणाय नमः ।
३७ ॐ यमाय नमः ।
३८ ॐ वैद्युताग्नये नमः ।
३९ ॐ जाठराग्नये नमः ।
४० ॐ ऐन्धनाग्नये नमः ।
४१ ॐ तेजसां पतये नमः ।
४२ ॐ धर्मध्वजाय नमः ।
४३ ॐ वेदकर्त्रे नमः ।
४४ ॐ वेदाङ्गाय नमः ।
४५ ॐ वेदवाहनाय नमः ।
४६ ॐ कृताय नमः ।
४७ ॐ त्रेतायै नमः ।
४८ ॐ द्वापराय नमः ।
४९ ॐ सर्वमलाश्रयाय कलये नमः ।
५० ॐ कलाकाष्ठामुहूर्तेभ्यो नमः ।
५१ ॐ क्षपायै नमः ।
५२ ॐ यामाय नमः ।
५३ ॐ क्षणाय नमः ।
५४ ॐ संवत्सरकराय नमः ।

५५ ॐ अश्वत्थाय नमः।
५६ ॐ कालचक्राय विभावसवे नमः।
५७ ॐ शाश्वताय पुरुषाय नमः।
५८ ॐ योगिने नमः।
५९ ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः।
६० ॐ सनातनाय नमः।
६१ ॐ कालाध्यक्षाय नमः।
६२ ॐ प्रजाध्यक्षाय नमः।
६३ ॐ विश्वकर्मणे नमः।
६४ ॐ तमोनुदाय नमः।
६५ ॐ वरुणाय नमः।
६६ ॐ सागराय नमः।
६७ ॐ अंशवे नमः।
६८ ॐ जीमूताय नमः।
६९ ॐ जीवनाय नमः।
७० ॐ अरिघ्ने नमः।
७१ ॐ भूताश्रयाय नमः।
७२ ॐ भूतपतये नमः।
७३ ॐ सर्वलोकनमस्कृताय नमः।
७४ ॐ स्त्रष्ट्रे नमः।
७५ ॐ संवर्तकाय नमः।
७६ ॐ वह्नये नमः।
७७ ॐ सर्वस्यादये नमः।
७८ ॐ अलोलुपाय नमः।
७९ ॐ अनन्ताय नमः।
८० ॐ कपिलाय नमः।
८१ ॐ भानवे नमः।
८२ ॐ कामदाय नमः।
८३ ॐ सर्वतोमुखाय नमः।
८४ ॐ जयाय नमः।
८५ ॐ विशालाय नमः।
८६ ॐ वरदाय नमः।
८७ ॐ सर्वधातुनिषेचित्रे नमः।
८८ ॐ मनःसुपर्णाय नमः।
८९ ॐ भूतादये नमः।
९० ॐ शीघ्रगाय नमः।
९१ ॐ प्राणधारकाय नमः।
९२ ॐ धन्वन्तरये नमः।
९३ ॐ धूमकेतवे नमः।
९४ ॐ आदिदेवाय नमः।
९५ ॐ अदितेः सुताय नमः।
९६ ॐ द्वादशात्मने नमः।
९७ ॐ अरविन्दाक्षाय नमः।
९८ ॐ पितृमातृपितामहेभ्यो नमः।
९९ ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
१०० ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
१०१ ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
१०२ ॐ त्रिविष्टपाय नमः।
१०३ ॐ देहकर्त्रे नमः।
१०४ ॐ प्रशान्तात्मने नमः।
१०५ ॐ विश्वात्मने नमः।
१०६ ॐ विश्वतोमुखाय नमः।
१०७ ॐ चराचरात्मने नमः।
१०८ ॐ सूक्ष्मात्मने नमः।
१०९ ॐ मैत्रेयाय नमः।
११० ॐ करुणान्विताय नमः।

*॥ इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे श्रीसूर्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥

# श्रीचन्द्र-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिम्बाननम्।
मुक्तादामविभूषितेन वपुषा निर्मूलयन्तं तमः॥
हस्ताभ्यां कुमुदं वरं विदधतं नीलालकोद्भासितम्।
स्वस्याङ्कस्थमृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे॥*

*स्तोत्र*

श्रीमान् शशधरश्चन्द्रः ताराधीशो निशाकरः।
सुधानिधिः सदाराध्यः सत्पतिः साधुपूजितः॥ १॥
जितेन्द्रियो जयोद्योगो ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकः।
विकर्तनानुजो वीरो विश्वेशो विदुषां पतिः॥ २॥
दोषाकरो दुष्टदूरः पुष्टिमान् शिष्टपालकः।
अष्टमूर्तिप्रियोऽनन्तः कष्टदारुकुठारकः॥ ३॥
स्वप्रकाशः प्रकाशात्मा द्युचरो देवभोजनः।
कलाधरः कालहेतुः कामकृत्कामदायकः॥ ४॥
मृत्युसंहारकोऽमर्त्यो नित्यानुष्ठानदस्तथा।
क्षपाकरः क्षीणपापः क्षयवृद्धिसमन्वितः॥ ५॥
जैवातृकः शुचिः शुभ्रो जयी जयफलप्रदः।
सुधामयः सुरस्वामी भक्तानामिष्टदायकः॥ ६॥
भुक्तिदश्चैव भद्रश्च भक्तदारिद्र्यभञ्जनः।
सामगानप्रियः सर्वरक्षकः सागरोद्भवः॥ ७॥

---

* कर्पूर और स्फटिक मणिके समान जिनका निर्मल वर्ण है, जिनका मुखमण्डल पूर्णेन्दुबिम्बके समान है, मुक्ताकी मालाओंसे अलंकृत शरीरके द्वारा जो अन्धकारका उन्मूलन करनेवाले हैं, जो श्यामल केशराशिके कारण अतिशय सुशोभित हैं, जो अपने हाथोंमें कमलका पुष्प एवं वरमुद्रा धारण किये हुए हैं, मृगलांछनको अपनी गोदमें आश्रय देना जिनका गुण माना गया है, इस प्रकारके सुधासमुद्ररूप चन्द्रमाका मैं सदा ध्यान करता हूँ।

भयान्तकृद्भक्तिगम्यो भवबन्धविमोचकः।
जगत्प्रकाशकिरणो जगदानन्दकारणः॥ ८ ॥
निःसपत्नो निराहारो निर्विकारो निरामयः।
भूच्छायाच्छादितो भव्यो भुवनप्रतिपालकः॥ ९ ॥
सकलार्तिहरः सौम्यजनकः साधुवन्दितः।
सर्वागमज्ञः सर्वज्ञः सनकादिमुनिस्तुतः॥ १० ॥
सितच्छत्रध्वजोपेतः सिताङ्गः सितभूषणः।
श्वेतमाल्याम्बरधरः श्वेतगन्धानुलेपनः॥ ११ ॥
दशाश्वरथसंरूढो दण्डपाणिर्धनुर्धरः।
कुन्दपुष्पोज्ज्वलाकारो नयनाब्जसमुद्भवः॥ १२ ॥
आत्रेयगोत्रजोऽत्यन्तविनयः प्रियदायकः।
करुणारससम्पूर्णः कर्कटप्रभुरव्ययः॥ १३ ॥
चतुरस्त्रासनारूढः चतुरो दिव्यवाहनः।
विवस्वन्मण्डलाज्ञेयवासो वसुसमृद्धिदः॥ १४ ॥
महेश्वरप्रियो दान्तो मेरुगोत्रप्रदक्षिणः।
ग्रहमण्डलमध्यस्थो ग्रसितार्को द्विजराजः॥ १५ ॥
द्युतिलकश्च द्विभुजः तथैव द्विजपूजितः।
औदुम्बरनगावासः उदारो रोहिणीपतिः॥ १६ ॥
नित्योदयो मुनिस्तुतो नित्यानन्दफलप्रदः।
सकलाह्लादनकरः पलाशसमिधप्रियः।
चन्द्रमाश्चेति नामानि कीर्तिदानि शुभानि वै॥ १७ ॥

*॥ इति श्रीचन्द्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं* सम्पूर्णम् ॥*

---

* प्राचीन नामावलीके आधारपर संयोजित।

॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥

# श्रीचन्द्र-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ श्रीमते नमः।
२ ॐ शशधराय नमः।
३ ॐ चन्द्राय नमः।
४ ॐ ताराधीशाय नमः।
५ ॐ निशाकराय नमः।
६ ॐ सुधानिधये नमः।
७ ॐ सदाराध्याय नमः।
८ ॐ सत्पतये नमः।
९ ॐ साधुपूजिताय नमः।
१० ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
११ ॐ जयोद्योगाय नमः।
१२ ॐ ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकाय नमः।
१३ ॐ विकर्तनानुजाय नमः।
१४ ॐ वीराय नमः।
१५ ॐ विश्वेशाय नमः।
१६ ॐ विदुषां पतये नमः।
१७ ॐ दोषाकराय नमः।
१८ ॐ दुष्टदूराय नमः।
१९ ॐ पुष्टिमते नमः।
२० ॐ शिष्टपालकाय नमः।
२१ ॐ अष्टमूर्तिप्रियाय नमः।
२२ ॐ अनन्ताय नमः।
२३ ॐ कष्टदारुकुठारकाय नमः।
२४ ॐ स्वप्रकाशाय नमः।
२५ ॐ प्रकाशात्मने नमः।
२६ ॐ द्युचराय नमः।
२७ ॐ देवभोजनाय नमः।
२८ ॐ कलाधराय नमः।
२९ ॐ कालहेतवे नमः।
३० ॐ कामकृते नमः।
३१ ॐ कामदायकाय नमः।
३२ ॐ मृत्युसंहारकाय नमः।
३३ ॐ अमर्त्याय नमः।
३४ ॐ नित्यानुष्ठानदाय नमः।
३५ ॐ क्षपाकराय नमः।
३६ ॐ क्षीणपापाय नमः।
३७ ॐ क्षयवृद्धिसमन्विताय नमः।
३८ ॐ जैवातृकाय नमः।
३९ ॐ शुचये नमः।
४० ॐ शुभ्राय नमः।
४१ ॐ जयिने नमः।
४२ ॐ जयफलप्रदाय नमः।
४३ ॐ सुधामयाय नमः।
४४ ॐ सुरस्वामिने नमः।
४५ ॐ भक्तानामिष्टदायकाय नमः।
४६ ॐ भुक्तिदाय नमः।
४७ ॐ भद्राय नमः।
४८ ॐ भक्तदारिद्र्यभञ्जनाय नमः।
४९ ॐ सामगानप्रियाय नमः।
५० ॐ सर्वरक्षकाय नमः।
५१ ॐ सागरोद्भवाय नमः।
५२ ॐ भयान्तकृते नमः।

५३ ॐ भक्तिगम्याय नमः।
५४ ॐ भवबन्धविमोचकाय नमः।
५५ ॐ जगत्प्रकाशकिरणाय नमः।
५६ ॐ जगदानन्दकारणाय नमः।
५७ ॐ निःसपत्नाय नमः।
५८ ॐ निराहाराय नमः।
५९ ॐ निर्विकाराय नमः।
६० ॐ निरामयाय नमः।
६१ ॐ भूच्छायाच्छादिताय नमः।
६२ ॐ भव्याय नमः।
६३ ॐ भुवनप्रतिपालकाय नमः।
६४ ॐ सकलार्तिहराय नमः।
६५ ॐ सौम्यजनकाय नमः।
६६ ॐ साधुवन्दिताय नमः।
६७ ॐ सर्वागमज्ञाय नमः।
६८ ॐ सर्वज्ञाय नमः।
६९ ॐ सनकादिमुनिस्तुताय नमः।
७० ॐ सितच्छत्रध्वजोपेताय नमः।
७१ ॐ सिताङ्गाय नमः।
७२ ॐ सितभूषणाय नमः।
७३ ॐ श्वेतमाल्याम्बरधराय नमः।
७४ ॐ श्वेतगन्धानुलेपनाय नमः।
७५ ॐ दशाश्वरथसंरूढाय नमः।
७६ ॐ दण्डपाणये नमः।
७७ ॐ धनुर्धराय नमः।
७८ ॐ कुन्दपुष्पोज्ज्वलाकाराय नमः।
७९ ॐ नयनाब्जसमुद्भवाय नमः।
८० ॐ आत्रेयगोत्रजाय नमः।
८१ ॐ अत्यन्तविनयाय नमः।
८२ ॐ प्रियदायकाय नमः।
८३ ॐ करुणारससम्पूर्णाय नमः।
८४ ॐ कर्कटप्रभवे नमः।
८५ ॐ अव्ययाय नमः।
८६ ॐ चतुरस्त्रासनारूढाय नमः।
८७ ॐ चतुराय नमः।
८८ ॐ दिव्यवाहनाय नमः।
८९ ॐ विवस्वन्मण्डलाग्नेयवासाय नमः।
९० ॐ वसुसमृद्धिदाय नमः।
९१ ॐ महेश्वरप्रियाय नमः।
९२ ॐ दान्ताय नमः।
९३ ॐ मेरुगोत्रप्रदक्षिणाय नमः।
९४ ॐ ग्रहमण्डलमध्यस्थाय नमः।
९५ ॐ ग्रसितार्काय नमः।
९६ ॐ द्विजराजाय नमः।
९७ ॐ द्युतिलकाय नमः।
९८ ॐ द्विभुजाय नमः।
९९ ॐ द्विजपूजिताय नमः।
१०० ॐ औदुम्बरनगावासाय नमः।
१०१ ॐ उदाराय नमः।
१०२ ॐ रोहिणीपतये नमः।
१०३ ॐ नित्योदयाय नमः।
१०४ ॐ मुनिस्तुताय नमः।
१०५ ॐ नित्यानन्दफलप्रदाय नमः।
१०६ ॐ सकलाह्लादनकराय नमः।
१०७ ॐ पलाशसमिधप्रियाय नमः।
१०८ ॐ चन्द्रमसे नमः।

*॥ इति श्रीचन्द्राष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीशनये नमः ॥

# श्रीशनि-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥*

*स्तोत्र*

*नारद उवाच*

ध्यात्वा गणपतिं राजा धर्मराजो युधिष्ठिरः।
धीरः शनैश्चरस्येमं चकार स्तवमुत्तमम्॥ १ ॥
शिरो मे भास्करः पातु भालं छायासुतोऽवतु।
कोटराक्षो दृशौ पातु शिखिकण्ठनिभः श्रुती॥ २ ॥
घ्राणं मे भीषणः पातु मुखं वलिमुखोऽवतु।
स्कन्धौ संवर्तकः पातु भुजौ मे भयदोऽवतु॥ ३ ॥
सौरिर्मे हृदयं पातु नाभिं शनैश्चरोऽवतु।
ग्रहराजः कटिं पातु सर्वतो रविनन्दनः॥ ४ ॥
पादौ मन्दगतिः पातु कृष्णः पात्वखिलं वपुः।
रक्षामेतां पठेन्नित्यं सौरेर्नामबलैर्युताम्॥ ५ ॥
सुखी पुत्री चिरायुश्च स भवेन्नात्र संशयः।
ॐ शौरिः शनैश्चरः कृष्णो नीलोत्पलनिभः शनिः॥ ६ ॥

---

* जो नील-कज्जलके समान आभावाले, सूर्यदेवके पुत्र, यमराजके बड़े भाई, सूर्य तथा छायासे उत्पन्न हैं, उन शनिदेवको मैं प्रणाम करता हूँ।

शुष्कोदरो विशालाक्षो दुर्निरीक्ष्यो विभीषणः।
शितिकण्ठनिभो नीलश्छायाहृदयनन्दनः॥ ७ ॥
कालदृष्टिः कोटराक्षः स्थूलरोमा वलीमुखः।
दीर्घो निर्मांसगात्रस्तु शुष्को घोरो भयानकः॥ ८ ॥
नीलांशुः क्रोधनो रौद्रो दीर्घश्मश्रुर्जटाधरः।
मन्दो मन्दगतिः खञ्जस्तप्तः संवर्तको यमः॥ ९ ॥
ग्रहराजः कराली च सूर्यपुत्रो रविः शशी।
कुजो बुधो गुरुः काव्यो भानुजः सिंहिकासुतः॥ १० ॥
केतुर्देवपतिर्बाहुः कृतान्तो नैर्ऋतस्तथा।
कुशी मरुत्कुबेरश्च ईशानः सुर आत्मभूः॥ ११ ॥
विष्णुर्हरो गणपतिः कुमारः काम ईश्वरः।
कर्ता हर्ता पालयिता राज्यहा राज्यदायकः॥ १२ ॥
छायासुतः श्यामलाङ्गो धनहर्ता धनप्रदः।
क्रूरकर्मविधाता च सर्वकर्मावरोधकः॥ १३ ॥
तुष्टो रुष्टः कामरूपः कामदो रविनन्दनः।
ग्रहपीडाहरः शान्तो नक्षत्रेशो ग्रहेश्वरः॥ १४ ॥
स्थिरासनः स्थिरगतिर्महाकायो महाबलः।
महाप्रभो महाकालः कालात्मा कालकालकः॥ १५ ॥
आदित्यभयदाता च मृत्युरादित्यनन्दनः।
शतभिद्रुक्षदयिता त्रयोदशीतिथिप्रियः॥ १६ ॥

तिथ्यात्मा तिथिगणनो नक्षत्रगणनायकः।
योगराशिमुहूर्तात्मा कर्ता दिनपतिः प्रभुः॥ १७॥
शमीपुष्पप्रियः श्यामस्त्रैलोक्यभयदायकः।
नीलवासाः क्रियासिन्धुर्नीलाञ्जनचयच्छविः॥ १८॥
सर्वरोगहरो देवः सिद्धो देवगणस्तुतः।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सौरेश्छायासुतस्य यः॥ १९॥
पठेन्नित्यं तस्य पीडा समस्ता नश्यति ध्रुवम्।
कृत्वा पूजां पठेन्मर्त्यो भक्तिमान्यः स्तवं सदा॥ २०॥
विशेषतः शनिदिने पीडा तस्य विनश्यति।
जन्मलग्ने स्थितिर्वापि गोचरे क्रूरराशिगे॥ २१॥
दशासु च गते सौरेस्तदा स्तवमिमं पठेत्।
पूजयेद्यः शनिं भक्त्या शमीपुष्पाक्षताम्बरैः॥ २२॥
विधाय लोहप्रतिमां नरो दुःखाद्विमुच्यते।
बाधा चान्यग्रहाणां च यः पठेत्तस्य नश्यति॥ २३॥
भीतो भयाद्विमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्।
रोगी रोगाद्विमुच्येत नरः स्तवमिमं पठेत्॥ २४॥
पुत्रवान्धनवान् श्रीमाञ्जायते नात्र संशयः॥ २५॥

*नारद उवाच*

स्तवं निशम्य पार्थस्य प्रत्यक्षोऽभूच्छनैश्चरः।
दत्त्वा राज्ञे वरं कामं शनिश्चान्तर्दधे तदा॥ २६॥

*॥ इति श्रीभविष्यमहापुराणे नारदप्रोक्तं शनैश्चरस्तवराजनाम श्रीशन्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीशनये नमः ॥

# श्रीशनि-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ शौरये नमः।
२ ॐ शनैश्चराय नमः।
३ ॐ कृष्णाय नमः।
४ ॐ नीलोत्पलनिभाय नमः।
५ ॐ शनये नमः।
६ ॐ शुष्कोदराय नमः।
७ ॐ विशालाक्षाय नमः।
८ ॐ दुर्निरीक्ष्याय नमः।
९ ॐ विभीषणाय नमः।
१० ॐ शितिकण्ठनिभाय नमः।
११ ॐ नीलाय नमः।
१२ ॐ छायाहृदयनन्दनाय नमः।
१३ ॐ कालदृष्टये नमः।
१४ ॐ कोटराक्षाय नमः।
१५ ॐ स्थूलरोम्णे नमः।
१६ ॐ वलीमुखाय नमः।
१७ ॐ दीर्घाय नमः।
१८ ॐ निर्मांसगात्राय नमः।
१९ ॐ शुष्काय नमः।
२० ॐ घोराय नमः।
२१ ॐ भयानकाय नमः।
२२ ॐ नीलांशवे नमः।
२३ ॐ क्रोधनाय नमः।
२४ ॐ रौद्राय नमः।
२५ ॐ दीर्घश्मश्रवे नमः।
२६ ॐ जटाधराय नमः।
२७ ॐ मन्दाय नमः।
२८ ॐ मन्दगतये नमः।
२९ ॐ खञ्जाय नमः।
३० ॐ तप्ताय नमः।
३१ ॐ संवर्तकाय नमः।
३२ ॐ यमाय नमः।
३३ ॐ ग्रहराजाय नमः।
३४ ॐ करालिने नमः।
३५ ॐ सूर्यपुत्राय नमः।
३६ ॐ रवये नमः।
३७ ॐ शशिने नमः।
३८ ॐ कुजाय नमः।
३९ ॐ बुधाय नमः।
४० ॐ गुरवे नमः।
४१ ॐ काव्याय नमः।
४२ ॐ भानुजाय नमः।
४३ ॐ सिंहिकासुताय नमः।
४४ ॐ केतवे नमः।
४५ ॐ देवपतये नमः।
४६ ॐ बाहवे नमः।
४७ ॐ कृतान्ताय नमः।
४८ ॐ नैर्ऋताय नमः।
४९ ॐ कुशिने नमः।
५० ॐ मरुते नमः।
५१ ॐ कुबेराय नमः।
५२ ॐ ईशानाय नमः।
५३ ॐ सुराय नमः।
५४ ॐ आत्मभुवे नमः।
५५ ॐ विष्णवे नमः।
५६ ॐ हराय नमः।

५७ ॐ गणपतये नमः।
५८ ॐ कुमाराय नमः।
५९ ॐ कामाय नमः।
६० ॐ ईश्वराय नमः।
६१ ॐ कर्त्रे नमः।
६२ ॐ हर्त्रे नमः।
६३ ॐ पालयित्रे नमः।
६४ ॐ राज्यघ्ने नमः।
६५ ॐ राज्यदायकाय नमः।
६६ ॐ छायासुताय नमः।
६७ ॐ श्यामलाङ्गाय नमः।
६८ ॐ धनहर्त्रे नमः।
६९ ॐ धनप्रदाय नमः।
७० ॐ क्रूरकर्मविधात्रे नमः।
७१ ॐ सर्वकर्मविरोधकाय नमः।
७२ ॐ तुष्टाय नमः।
७३ ॐ रुष्टाय नमः।
७४ ॐ कामरूपाय नमः।
७५ ॐ कामदाय नमः।
७६ ॐ रविनन्दनाय नमः।
७७ ॐ ग्रहपीडाहराय नमः।
७८ ॐ शान्ताय नमः।
७९ ॐ नक्षत्रेशाय नमः।
८० ॐ ग्रहेश्वराय नमः।
८१ ॐ स्थिरासनाय नमः।
८२ ॐ स्थिरगतये नमः।
८३ ॐ महाकायाय नमः।
८४ ॐ महाबलाय नमः।
८५ ॐ महाप्रभवे नमः।
८६ ॐ महाकालाय नमः।
८७ ॐ कालात्मने नमः।
८८ ॐ कालकालकाय नमः।
८९ ॐ आदित्यभयदात्रे नमः।
९० ॐ मृत्यवे नमः।
९१ ॐ आदित्यनन्दनाय नमः।
९२ ॐ शतभिदे नमः।
९३ ॐ रुक्षदयितायै नमः।
९४ ॐ त्रयोदशीतिथिप्रियाय नमः।
९५ ॐ तिथ्यात्मने नमः।
९६ ॐ तिथिगणनाय नमः।
९७ ॐ नक्षत्रगणनायकाय नमः।
९८ ॐ योगराशिमुहूर्तात्मने नमः।
९९ ॐ कर्त्रे नमः।
१०० ॐ दिनपतये नमः।
१०१ ॐ प्रभवे नमः।
१०२ ॐ शमीपुष्पप्रियाय नमः।
१०३ ॐ श्यामाय नमः।
१०४ ॐ त्रैलोक्यभयदायकाय नमः।
१०५ ॐ नीलवाससे नमः।
१०६ ॐ क्रियासिन्धवे नमः।
१०७ ॐ नीलाञ्जनचय-
च्छवये नमः।
१०८ ॐ सर्वरोगहराय नमः।
१०९ ॐ देवाय नमः।
११० ॐ सिद्धाय नमः।
१११ ॐ देवगणस्तुताय नमः।

*॥ इति श्रीभविष्यमहापुराणे नारदप्रोक्तं शनैश्चरस्तवराजनाम श्रीशन्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीहरिहराभ्यां नमः ॥

# श्रीहरिहर-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्[1]

*ध्यान*

माधवोमाधवावीशौ सर्वसिद्धिविधायिनौ।
वन्दे परस्परात्मानौ परस्परनतिप्रियौ ॥[2]

*स्तोत्र*

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे
शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे।
दामोदराच्युत जनार्दन वासुदेव
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ १ ॥

गङ्गाधरान्धकरिपो हर नीलकण्ठ
वैकुण्ठ कैटभरिपो कमठाब्जपाणे।
भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ २ ॥

विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे
गौरीपते गिरिश शङ्कर चन्द्रचूड।

---

१. यमराज अपने दूतोंको आदेश देते हैं—'जहाँ भगवान् विष्णु तथा भगवान् शिवके नामोंका उच्चारण होता है, वहाँ मत जाया करो।' इसपर उन्होंने हरि-हरकी १०८ नामोंकी नामावली स्तोत्ररूपमें कही है। नामावलीका महत्त्व वर्णन करते हुए अगस्त्यजी इसकी फलश्रुतिमें कहते हैं—'जो इस धर्मराजरचित सारे पापोंका बीजनाश करनेवाली सुललित हरिहर-नामावलीका नित्य जप करेगा, उसका पुनर्जन्म नहीं होगा।'

२. एक-दूसरेको प्रणाम करनेके प्रेमी, परस्पर एकात्मरूप, सब प्रकारकी सिद्धियोंको देनेवाले, साक्षात् ईश्वरस्वरूप लक्ष्मीपति और उमापतिको मैं नमस्कार करता हूँ।

नारायणासुरनिबर्हण शार्ङ्गपाणे
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ३ ॥
मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो
श्रीकान्त पीतवसनाम्बुदनील शौरे।
ईशान कृत्तिवसन त्रिदशैकनाथ
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ४ ॥
लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य
श्रीकण्ठ दिग्वसन शान्त पिनाकपाणे।
आनन्दकन्द धरणीधर पद्मनाभ
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ५ ॥
सर्वेश्वर त्रिपुरसूदन देवदेव
ब्रह्मण्यदेव गरुडध्वज शङ्खपाणे।
त्र्यक्षोरगाभरण बालमृगाङ्कमौले
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ६ ॥
श्रीराम राघव रमेश्वर रावणारे
भूतेश मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ।
चाणूरमर्दन हृषीकपते मुरारे
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ७ ॥
शूलिन् गिरीश रजनीशकलावतंस
कंसप्रणाशन सनातन केशिनाश।
भर्ग त्रिनेत्र भव भूतपते पुरारे
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥ ८ ॥

गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो
कर्पूरगौर वृषभध्वज भालनेत्र।
गोवर्धनोद्धरण धर्मधुरीण गोप
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ ९ ॥
स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधर स्मरारे
कृष्णानिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे।
विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्रजटाकलाप
त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति॥ १० ॥
अष्टोत्तराधिकशतेन सुचारुनाम्नां
सन्दर्भितां ललितरत्नकदम्बकेन।
सन्नामकां दृढगुणां द्विजकण्ठगां यः
कुर्यादिमां स्त्रजमहो स यमं न पश्येत्॥ ११ ॥

*अगस्तिरुवाच*

यो धर्मराजरचितां ललितप्रबन्धां
नामावलीं सकलकल्मषबीजहन्त्रीम्।
धीरोऽत्र कौस्तुभभृतः शशिभूषणस्य
नित्यं जपेत् स्तनरसं स पिबेन्न मातुः॥ १२ ॥

*॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डपूर्वार्धे यमप्रोक्तं श्रीहरिहराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीहरिहराभ्यां नमः ॥

# श्रीहरिहर-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ गोविन्दाय नमः।
२ ॐ माधवाय नमः।
३ ॐ मुकुन्दाय नमः।
४ ॐ हरये नमः।
५ ॐ मुरारये नमः।
६ ॐ शम्भवे नमः।
७ ॐ शिवाय नमः।
८ ॐ ईशाय नमः।
९ ॐ शशिशेखराय नमः।
१० ॐ शूलपाणये नमः।
११ ॐ दामोदराय नमः।
१२ ॐ अच्युताय नमः।
१३ ॐ जनार्दनाय नमः।
१४ ॐ वासुदेवाय नमः।
१५ ॐ गङ्गाधराय नमः।
१६ ॐ अन्धकरिपवे नमः।
१७ ॐ हराय नमः।
१८ ॐ नीलकण्ठाय नमः।
१९ ॐ वैकुण्ठाय नमः।
२० ॐ कैटभरिपवे नमः।
२१ ॐ कमठाय नमः।
२२ ॐ अब्जपाणये नमः।
२३ ॐ भूतेशाय नमः।
२४ ॐ खण्डपरशवे नमः।
२५ ॐ मृडाय नमः।
२६ ॐ चण्डिकेशाय नमः।
२७ ॐ विष्णवे नमः।
२८ ॐ नृसिंहाय नमः।
२९ ॐ मधुसूदनाय नमः।
३० ॐ चक्रपाणये नमः।
३१ ॐ गौरीपतये नमः।
३२ ॐ गिरिशाय नमः।
३३ ॐ शङ्कराय नमः।
३४ ॐ चन्द्रचूडाय नमः।
३५ ॐ नारायणाय नमः।
३६ ॐ असुरनिबर्हणाय नमः।
३७ ॐ शार्ङ्गपाणये नमः।
३८ ॐ मृत्युञ्जयाय नमः।
३९ ॐ उग्राय नमः।
४० ॐ विषमेक्षणाय नमः।
४१ ॐ कामशत्रवे नमः।
४२ ॐ श्रीकान्ताय नमः।
४३ ॐ पीतवसनाय नमः।
४४ ॐ अम्बुदनीलाय नमः।
४५ ॐ शौरये नमः।
४६ ॐ ईशानाय नमः।
४७ ॐ कृत्तिवसनाय नमः।
४८ ॐ त्रिदशैकनाथाय नमः।
४९ ॐ लक्ष्मीपतये नमः।
५० ॐ मधुरिपवे नमः।
५१ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः।
५२ ॐ आद्याय नमः।

५३ ॐ श्रीकण्ठाय नमः।
५४ ॐ दिग्वसनाय नमः।
५५ ॐ शान्ताय नमः।
५६ ॐ पिनाकपाणये नमः।
५७ ॐ आनन्दकन्दाय नमः।
५८ ॐ धरणीधराय नमः।
५९ ॐ पद्मनाभाय नमः।
६० ॐ सर्वेश्वराय नमः।
६१ ॐ त्रिपुरसूदनाय नमः।
६२ ॐ देवदेवाय नमः।
६३ ॐ ब्रह्मण्यदेवाय नमः।
६४ ॐ गरुडध्वजाय नमः।
६५ ॐ शङ्खपाणये नमः।
६६ ॐ त्र्यक्षाय नमः।
६७ ॐ उरगाभरणाय नमः।
६८ ॐ बालमृगाङ्कमौलिने नमः।
६९ ॐ श्रीरामाय नमः।
७० ॐ राघवाय नमः।
७१ ॐ रमेश्वराय नमः।
७२ ॐ रावणारये नमः।
७३ ॐ भूतेशाय नमः।
७४ ॐ मन्मथरिपवे नमः।
७५ ॐ प्रमथाधिनाथाय नमः।
७६ ॐ चाणूरमर्दनाय नमः।
७७ ॐ हृषीकपतये नमः।
७८ ॐ मुरारये नमः।
७९ ॐ शूलिने नमः।
८० ॐ गिरीशाय नमः।
८१ ॐ रजनीशकलावतंसाय नमः।
८२ ॐ कंसप्रणाशनाय नमः।
८३ ॐ सनातनाय नमः।
८४ ॐ केशिनाशाय नमः।
८५ ॐ भर्गाय नमः।
८६ ॐ त्रिनेत्राय नमः।
८७ ॐ भवाय नमः।
८८ ॐ भूतपतये नमः।
८९ ॐ पुरारये नमः।
९० ॐ गोपीपतये नमः।
९१ ॐ यदुपतये नमः।
९२ ॐ वसुदेवसूनवे नमः।
९३ ॐ कर्पूरगौराय नमः।
९४ ॐ वृषभध्वजाय नमः।
९५ ॐ भालनेत्राय नमः।
९६ ॐ गोवर्धनोद्धरणाय नमः।
९७ ॐ धर्मधुरीणाय नमः।
९८ ॐ गोपाय नमः।
९९ ॐ स्थाणवे नमः।
१०० ॐ त्रिलोचनाय नमः।
१०१ ॐ पिनाकधराय नमः।
१०२ ॐ स्मरारये नमः।
१०३ ॐ कृष्णाय नमः।
१०४ ॐ अनिरुद्धाय नमः।
१०५ ॐ कमलाकराय नमः।
१०६ ॐ कल्मषारये नमः।
१०७ ॐ विश्वेश्वराय नमः।
१०८ ॐ त्रिपथगार्द्रजटाकलापायै नमः।

*॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे काशीखण्डपूर्वार्धे श्रीहरिहराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीकाल्यै नमः ॥

# श्रीकाली-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥*

*स्तोत्र*

*भैरव उवाच*

**शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया वरानने।**
**यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत्॥ १ ॥**
**काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।**
**कालरात्रिः कालिका च कालभैरवपूजिता॥ २ ॥**
**कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी।**
**कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्मप्रकाशिनी॥ ३ ॥**
**कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।**
**ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका॥ ४ ॥**
**कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।**
**कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी॥ ५ ॥**

---

* भगवान् विष्णुके सो जानेपर मधु और कैटभको मारनेके लिये कमलजन्मा ब्रह्माजीने जिनका स्तवन किया था, उन महाकाली देवीका मैं सेवन करता हूँ। वे अपने दस हाथोंमें खड्ग, चक्र, गदा, बाण, धनुष, परिघ, शूल, भुशुण्डि, मस्तक और शंख धारण करती हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे समस्त अंगोंमें दिव्य आभूषणोंसे विभूषित हैं। उनके शरीरकी कान्ति नीलमणिके समान है तथा वे दस मुख और दस पैरोंसे युक्त हैं।

कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुब्जेश्वरगामिनी॥ ६ ॥
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता॥ ७ ॥
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता॥ ८ ॥
कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी॥ ९ ॥
कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्धिनी॥ १० ॥
कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी॥ ११ ॥
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी॥ १२ ॥
कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालखट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी॥ १३ ॥
कोटरी कोटराक्षी च काशीकैलासवासिनी।
कात्यायनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी॥ १४ ॥
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कङ्गिनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया॥ १५ ॥

कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया॥ १६॥
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा।
इति ते कथितं देवि गुह्याद् गुह्यतरं परम्॥ १७॥
प्रपठेद्य इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि तस्यासाध्यं न विद्यते॥ १८॥
प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि।
यः पठेत्परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम्॥ १९॥
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः॥ २०॥
वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम्॥ २१॥
कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः॥ २२॥

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीकाल्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीकाल्यै नमः ॥

# श्रीकाली-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ काल्यै नमः।
२ ॐ कपालिन्यै नमः।
३ ॐ कान्तायै नमः।
४ ॐ कामदायै नमः।
५ ॐ कामसुन्दर्यै नमः।
६ ॐ कालरात्र्यै नमः।
७ ॐ कालिकायै नमः।
८ ॐ कालभैरवपूजितायै नमः।
९ ॐ कुरुकुल्लायै नमः।
१० ॐ कामिन्यै नमः।
११ ॐ कमनीयस्वभाविन्यै नमः।
१२ ॐ कुलीनायै नमः।
१३ ॐ कुलकर्त्र्यै नमः।
१४ ॐ कुलवर्त्मप्रकाशिन्यै नमः।
१५ ॐ कस्तूरीरसनीलायै नमः।
१६ ॐ काम्यायै नमः।
१७ ॐ कामस्वरूपिण्यै नमः।
१८ ॐ ककारवर्णनिलयायै नमः।
१९ ॐ कामधेन्वै नमः।
२० ॐ करालिकायै नमः।
२१ ॐ कुलकान्तायै नमः।
२२ ॐ करालास्यायै नमः।
२३ ॐ कामार्तायै नमः।
२४ ॐ कलावत्यै नमः।
२५ ॐ कृशोदर्यै नमः।
२६ ॐ कामाख्यायै नमः।
२७ ॐ कौमार्यै नमः।
२८ ॐ कुलपालिन्यै नमः।
२९ ॐ कुलजायै नमः।
३० ॐ कुलकन्यायै नमः।
३१ ॐ कलहायै नमः।
३२ ॐ कुलपूजितायै नमः।
३३ ॐ कामेश्वर्यै नमः।
३४ ॐ कामकान्तायै नमः।
३५ ॐ कुञ्जेश्वरगामिन्यै नमः।
३६ ॐ कामदात्र्यै नमः।
३७ ॐ कामहर्त्र्यै नमः।
३८ ॐ कृष्णायै नमः।
३९ ॐ कपर्दिन्यै नमः।
४० ॐ कुमुदायै नमः।
४१ ॐ कृष्णदेहायै नमः।
४२ ॐ कालिन्द्यै नमः।
४३ ॐ कुलपूजितायै नमः।
४४ ॐ काश्यप्यै नमः।
४५ ॐ कृष्णमात्रे नमः।
४६ ॐ कुलिशाङ्ग्यै नमः।
४७ ॐ कलायै नमः।
४८ ॐ क्रींरूपायै नमः।
४९ ॐ कुलगम्यायै नमः।
५० ॐ कमलायै नमः।
५१ ॐ कृष्णपूजितायै नमः।
५२ ॐ कृशाङ्ग्यै नमः।

५३ ॐ किन्नर्यै नमः ।
५४ ॐ कर्त्र्यै नमः ।
५५ ॐ कलकण्ठ्यै नमः ।
५६ ॐ कार्तिक्यै नमः ।
५७ ॐ कम्बुकण्ठ्यै नमः ।
५८ ॐ कौलिन्यै नमः ।
५९ ॐ कुमुदायै नमः ।
६० ॐ कामजीविन्यै नमः ।
६१ ॐ कुलस्त्रियै नमः ।
६२ ॐ कीर्तिकायै नमः ।
६३ ॐ कृत्यायै नमः ।
६४ ॐ कीर्त्यै नमः ।
६५ ॐ कुलपालिकायै नमः ।
६६ ॐ कामदेवकलायै नमः ।
६७ ॐ कल्पलतायै नमः ।
६८ ॐ कामाङ्गवर्धिन्यै नमः ।
६९ ॐ कुन्तायै नमः ।
७० ॐ कुमुदप्रीतायै नमः ।
७१ ॐ कदम्बकुसुमोत्सुकायै नमः ।
७२ ॐ कादम्बिन्यै नमः ।
७३ ॐ कमलिन्यै नमः ।
७४ ॐ कृष्णानन्दप्रदायिन्यै नमः ।
७५ ॐ कुमारीपूजनरतायै नमः ।
७६ ॐ कुमारीगणशोभितायै नमः ।
७७ ॐ कुमारीरञ्जनरतायै नमः ।
७८ ॐ कुमारीव्रतधारिण्यै नमः ।
७९ ॐ कङ्काल्यै नमः ।
८० ॐ कमनीयायै नमः ।
८१ ॐ कामशास्त्रविशारदायै नमः ।
८२ ॐ कपालखट्वाङ्गधरायै नमः ।
८३ ॐ कालभैरवरूपिण्यै नमः ।
८४ ॐ कोटर्यै नमः ।
८५ ॐ कोटराक्ष्यै नमः ।
८६ ॐ काशीवासिन्यै नमः ।
८७ ॐ कैलासवासिन्यै नमः ।
८८ ॐ कात्यायन्यै नमः ।
८९ ॐ कार्यकर्यै नमः ।
९० ॐ काव्यशास्त्रप्रमोदिन्यै नमः ।
९१ ॐ कामाकर्षणरूपायै नमः ।
९२ ॐ कामपीठनिवासिन्यै नमः ।
९३ ॐ कङ्गिन्यै नमः ।
९४ ॐ काकिन्यै नमः ।
९५ ॐ क्रीडायै नमः ।
९६ ॐ कुत्सितायै नमः ।
९७ ॐ कलहप्रियायै नमः ।
९८ ॐ कुण्डगोलोद्भवप्राणायै नमः ।
९९ ॐ कौशिक्यै नमः ।
१०० ॐ कीर्तिवर्धिन्यै नमः ।
१०१ ॐ कुम्भस्तन्यै नमः ।
१०२ ॐ कटाक्षायै नमः ।
१०३ ॐ काव्यायै नमः ।
१०४ ॐ कोकनदप्रियायै नमः ।
१०५ ॐ कान्तारवासिन्यै नमः ।
१०६ ॐ कान्त्यै नमः ।
१०७ ॐ कठिनायै नमः ।
१०८ ॐ कृष्णवल्लभायै नमः ।

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीकाल्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीतारायै नमः ॥

# श्रीतारा-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

ध्यायेत् कोटिदिवाकरद्युतिनिभां बालेन्दुयुक्छेखरां
रक्ताङ्गीं रसनां सुरक्तवसनां पूर्णेन्दुबिम्बाननां।
पाशं कर्तृमहाङ्कुशादिदधतीं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां
नानाभूषणभूषितां भगवतीं तारां जगत्तारिणीम्॥*

*स्तोत्र*

*श्रीशिव उवाच*

**तारिणी तरला तन्वी तारा तरुणवल्लरी।**
**तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा॥ १॥**
**तुरीया तरुणा तीव्रगमना नीलवाहिनी।**
**उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेकजटाशिरा॥ २॥**
**तरुणी शाम्भवी छिन्नभाला च भद्रतारिणी।**
**उग्रा उग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती॥ ३॥**
**द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना।**
**चण्डिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी॥ ४॥**
**अट्टहास्या करालास्या चरास्यादितिपूजिता।**
**सगुणासगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता॥ ५॥**

---

* करोड़ों सूर्यके समान देदीप्यमान कान्तिसे युक्त, मस्तकपर बालचन्द्र धारण करनेवाली, रक्तिम विग्रह तथा रसनावाली, सुन्दर लाल वस्त्र धारण किये हुए, पूर्णिमाके चन्द्रमाके समान मुखवाली, अपने चारों हाथोंमें पाश, कर्तरि (कैंची), महान् अंकुश आदिको धारण करनेवाली, नाना प्रकारके आभूषणोंसे अलंकृत, जगत्को तारने अर्थात् मोक्ष प्रदान करनेवाली भगवती ताराका भजन करना चाहिये।

रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्यविभूषिता।
बलिप्रिया बलिरता दुर्धा बलवती बला॥ ६ ॥
बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता।
ऊर्ध्वकेशेश्वरी केशा केशवा सविभूषिता॥ ७ ॥
पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिनी।
दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणेरता॥ ८ ॥
वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता।
माहेश्वरी महादेवप्रिया पञ्चविभूषिता॥ ९ ॥
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णाप्राणरूपिणी।
गान्धारी पञ्चमी पञ्चाननादिपरिपूजिता॥ १० ॥
तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी।
तत्त्वरूपा तत्त्वप्रिया तत्त्वज्ञानात्मिकानघा॥ ११ ॥
ताण्डवाचारसन्तुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी।
तालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा॥ १२ ॥
त्रपायुक्ता त्रपामुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी।
तारुण्यभावसन्तुष्टा शक्तिभक्तानुरागिनी॥ १३ ॥
शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा।
ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी॥ १४ ॥
बलभद्रप्रेमरता बलिभुग्बलिकल्पिनी।
रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुकारिणी॥ १५ ॥

इत्येतत्कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम्।
श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः॥ १६॥
य इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुतिरहस्यकम्।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विहरेत् क्षितिमण्डले॥ १७॥
तस्यैव मन्त्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा।
भवत्येव महामाये सत्यं सत्यं न संशयः॥ १८॥
मन्दे मङ्गलवारे च यः पठेन्निशि संयतः।
तस्यैव मन्त्रसिद्धिः स्याद् गाणपत्यं लभेत सः॥ १९॥
श्रद्धयाश्रद्धया वापि पठेत्ताराहस्यकम्।
सोऽचिरेणैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत्॥ २०॥
सहस्रावर्तनाद्देवि पुरश्चर्याफलं लभेत्।
एवं सततयुक्ता ये ध्यायन्तस्त्वामुपासते।
ते कृतार्था महेशानि मृत्युसंसारवर्त्मनः॥ २१॥

*॥ इति स्वर्णमालातन्त्रे श्रीताराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीतारायै नमः ॥

# श्रीतारा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ तारिण्यै नमः ।
२ ॐ तरलायै नमः ।
३ ॐ तन्व्यै नमः ।
४ ॐ तारायै नमः ।
५ ॐ तरुणवल्लर्यै नमः ।
६ ॐ तीररूपायै नमः ।
७ ॐ तर्यै नमः ।
८ ॐ श्यामायै नमः ।
९ ॐ तनुक्षीणपयोधरायै नमः ।
१० ॐ तुरीयायै नमः ।
११ ॐ तरुणायै नमः ।
१२ ॐ तीव्रगमनायै नमः ।
१३ ॐ नीलवाहिन्यै नमः ।
१४ ॐ उग्रतारायै नमः ।
१५ ॐ जयायै नमः ।
१६ ॐ चण्ड्यै नमः ।
१७ ॐ श्रीमदेकजटाशिरायै नमः ।
१८ ॐ तरुण्यै नमः ।
१९ ॐ शाम्भव्यै नमः ।
२० ॐ छिन्नभालायै नमः ।
२१ ॐ भद्रतारिण्यै नमः ।
२२ ॐ उग्रायै नमः ।
२३ ॐ उग्रप्रभायै नमः ।
२४ ॐ नीलायै नमः ।
२५ ॐ कृष्णायै नमः ।
२६ ॐ नीलसरस्वत्यै नमः ।
२७ ॐ द्वितीयायै नमः ।
२८ ॐ शोभनायै नमः ।
२९ ॐ नित्यायै नमः ।
३० ॐ नवीनायै नमः ।
३१ ॐ नित्यनूतनायै नमः ।
३२ ॐ चण्डिकायै नमः ।
३३ ॐ विजयाराध्यायै नमः ।
३४ ॐ देव्यै नमः ।
३५ ॐ गगनवाहिन्यै नमः ।
३६ ॐ अट्टहास्यायै नमः ।
३७ ॐ करालास्यायै नमः ।
३८ ॐ चरास्यायै नमः ।
३९ ॐ अदितिपूजितायै नमः ।
४० ॐ सगुणायै नमः ।
४१ ॐ असगुणायै नमः ।
४२ ॐ आराध्यायै नमः ।
४३ ॐ हरीन्द्रदेवपूजितायै नमः ।
४४ ॐ रक्तप्रियायै नमः ।
४५ ॐ रक्ताक्ष्यै नमः ।
४६ ॐ रुधिरास्यविभूषितायै नमः ।
४७ ॐ बलिप्रियायै नमः ।
४८ ॐ बलिरतायै नमः ।
४९ ॐ दुर्धायै नमः ।
५० ॐ बलवत्यै नमः ।
५१ ॐ बलायै नमः ।
५२ ॐ बलप्रियायै नमः ।

५३ ॐ बलरतायै नमः ।
५४ ॐ बलरामप्रपूजितायै नमः ।
५५ ॐ ऊर्ध्वकेशेश्वर्यै नमः ।
५६ ॐ केशायै नमः ।
५७ ॐ केशवायै नमः ।
५८ ॐ सविभूषितायै नमः ।
५९ ॐ पद्ममालायै नमः ।
६० ॐ पद्माक्ष्यै नमः ।
६१ ॐ कामाख्यायै नमः ।
६२ ॐ गिरिनन्दिन्यै नमः ।
६३ ॐ दक्षिणायै नमः ।
६४ ॐ दक्षायै नमः ।
६५ ॐ दक्षजायै नमः ।
६६ ॐ दक्षिणेरतायै नमः ।
६७ ॐ वज्रपुष्पप्रियायै नमः ।
६८ ॐ रक्तप्रियायै नमः ।
६९ ॐ कुसुमभूषितायै नमः ।
७० ॐ माहेश्वर्यै नमः ।
७१ ॐ महादेवप्रियायै नमः ।
७२ ॐ पञ्चविभूषितायै नमः ।
७३ ॐ इडायै नमः ।
७४ ॐ पिङ्गलायै नमः ।
७५ ॐ सुषुम्णाप्राणरूपिण्यै नमः ।
७६ ॐ गान्धार्यै नमः ।
७७ ॐ पञ्चम्यै नमः ।
७८ ॐ पञ्चाननादिपरिपूजितायै नमः ।
७९ ॐ तथ्यविद्यायै नमः ।
८० ॐ तथ्यरूपायै नमः ।
८१ ॐ तथ्यमार्गानुसारिण्यै नमः ।
८२ ॐ तत्त्वरूपायै नमः ।
८३ ॐ तत्त्वप्रियायै नमः ।
८४ ॐ तत्त्वज्ञानात्मिकायै नमः ।
८५ ॐ अनघायै नमः ।
८६ ॐ ताण्डवाचारसन्तुष्टायै नमः ।
८७ ॐ ताण्डवप्रियकारिण्यै नमः ।
८८ ॐ तालदानरतायै नमः ।
८९ ॐ क्रूरतापिन्यै नमः ।
९० ॐ तरणिप्रभायै नमः ।
९१ ॐ त्रपायुक्तायै नमः ।
९२ ॐ त्रपामुक्तायै नमः ।
९३ ॐ तर्पितायै नमः ।
९४ ॐ तृप्तिकारिण्यै नमः ।
९५ ॐ तारुण्यभावसन्तुष्टायै नमः ।
९६ ॐ शक्तिभक्तानुरागिन्यै नमः ।
९७ ॐ शिवासक्तायै नमः ।
९८ ॐ शिवरत्यै नमः ।
९९ ॐ शिवभक्तिपरायणायै नमः ।
१०० ॐ ताम्रद्युत्यै नमः ।
१०१ ॐ ताम्ररागायै नमः ।
१०२ ॐ ताम्रपात्रप्रभोजिन्यै नमः ।
१०३ ॐ बलभद्रप्रेमरतायै नमः ।
१०४ ॐ बलिभुजे नमः ।
१०५ ॐ बलिकल्पिन्यै नमः ।
१०६ ॐ रामरूपायै नमः ।
१०७ ॐ रामशक्त्यै नमः ।
१०८ ॐ रामरूपानुकारिण्यै नमः ।

*॥ इति स्वर्णमालातन्त्रे श्रीताराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीषोडश्यै नमः ॥

# श्रीषोडशी-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे॥*

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शम्भुर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीषोडशी देवता धर्मार्थकाममोक्षसिद्धये विनियोगः।*

*भृगु उवाच*

**चतुर्वक्त्र जगन्नाथ स्तोत्रं वद मयि प्रभो।**
**यस्यानुष्ठानमात्रेण नरो भक्तिमवाप्नुयात्॥ १॥**

*ब्रह्मोवाच*

**सहस्रनाम्नामाकृष्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।**
**गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं सुन्दर्याः परिकीर्तितम्॥ २॥**

*स्तोत्र*

**ॐ त्रिपुरा षोडशी माता त्र्यक्षरा त्रितया त्रयी।**
**सुन्दरी सुमुखी सेव्या सामवेदपरायणा॥ ३॥**
**शारदा शब्दनिलया सागरा सरिताम्बरा।**
**शुद्धा शुद्धतनुः साध्वी शिवध्यानपरायणा॥ ४॥**
**स्वामिनी शम्भुवनिता शाम्भवी च सरस्वती।**
**समुद्रमथिनी शीघ्रगामिनी शीघ्रसिद्धिदा॥ ५॥**

---

* जो उदयकालके सूर्यमण्डलकी-सी कान्ति धारण करनेवाली हैं, जिनके चार भुजाएँ और तीन नेत्र हैं तथा जो अपने हाथोंमें पाश, अंकुश, वर एवं अभयकी मुद्रा धारण किये रहती हैं, उन शिवादेवीका मैं ध्यान करता हूँ।

साधुसेव्या साधुगम्या साधुसन्तुष्टमानसा।
खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्गखर्परधारिणी॥ ६ ॥
षड्वर्गभावरहिता षड्वर्गपरिचारिका।
षड्वर्गा च षडङ्गा च षोढा षोडशवार्षिकी॥ ७ ॥
क्रतुरूपा क्रतुमती ऋभुक्षा क्रतुमण्डिता।
कवर्गादिपवर्गान्ता अन्तःस्थानन्तरूपिणी॥ ८ ॥
अकाराकाररहिता कालमृत्युजरापहा।
तन्वी तत्त्वेश्वरी तारा त्रिवर्षा ज्ञानरूपिणी॥ ९ ॥
काली कराली कामेशी छाया संज्ञाप्यरुन्धती।
निर्विकल्पा महावेगा महोत्साहा महोदरी॥ १० ॥
मेघा बलाका विमला विमलज्ञानदायिनी।
गौरी वसुन्धरा गोप्त्री गवाम्पतिनिषेविता॥ ११ ॥
भगाङ्गा भगरूपा च भक्तिभावपरायणा।
छिन्नमस्ता महाधूमा तथा धूम्रविभूषणा॥ १२ ॥
धर्मकर्मादिरहिता धर्मकर्मपरायणा।
सीता मातङ्गिनी मेधा मधुदैत्यविनाशिनी॥ १३ ॥
भैरवी भुवना माताभयदा भवसुन्दरी।
भावुका बगला कृत्या बाला त्रिपुरसुन्दरी॥ १४ ॥
रोहिणी रेवती रम्या रम्भा रावणवन्दिता।
शतयज्ञमयी सत्त्वा शतक्रतुवरप्रदा॥ १५ ॥

शतचन्द्रानना देवी सहस्त्रादित्यसन्निभा।
सोमसूर्याग्निनयना व्याघ्रचर्माम्बरावृता॥ १६॥
अर्धेन्दुधारिणी मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा।
इति ते कथितं गोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १७॥
सुन्दर्याः सर्वदं सेव्यं महापातकनाशनम्।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं कलौ युगे॥ १८॥
सहस्त्रनामपाठस्य फलं यद्वै प्रकीर्तितम्।
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं स्तवस्यास्य प्रकीर्तनात्॥ १९॥
पठेत् सदा भक्तियुतो नरो यो
निशीथकालेऽप्यरुणोदये वा।
प्रदोषकाले नवमीदिनेऽथवा
लभेत भोगान्परमाद्भुतान्प्रियान्॥ २०॥

*॥ इति ब्रह्मयामले पूर्वखण्डे श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीषोडश्यै नमः ॥

# श्रीषोडशी-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ त्रिपुरायै नमः ।
२ ॐ षोडश्यै नमः ।
३ ॐ मात्रे नमः ।
४ ॐ त्र्यक्षरायै नमः ।
५ ॐ त्रितयायै नमः ।
६ ॐ त्रय्यै नमः ।
७ ॐ सुन्दर्यै नमः ।
८ ॐ सुमुख्यै नमः ।
९ ॐ सेव्यायै नमः ।
१० ॐ सामवेदपरायणायै नमः ।
११ ॐ शारदायै नमः ।
१२ ॐ शब्दनिलयायै नमः ।
१३ ॐ सागरायै नमः ।
१४ ॐ सरिताम्बरायै नमः ।
१५ ॐ शुद्धायै नमः ।
१६ ॐ शुद्धतन्वै नमः ।
१७ ॐ साध्व्यै नमः ।
१८ ॐ शिवध्यानपरायणायै नमः ।
१९ ॐ स्वामिन्यै नमः ।
२० ॐ शम्भुवनितायै नमः ।
२१ ॐ शाम्भव्यै नमः ।
२२ ॐ सरस्वत्यै नमः ।
२३ ॐ समुद्रमथिन्यै नमः ।
२४ ॐ शीघ्रगामिन्यै नमः ।
२५ ॐ शीघ्रसिद्धिदायै नमः ।
२६ ॐ साधुसेव्यायै नमः ।
२७ ॐ साधुगम्यायै नमः ।
२८ ॐ साधुसन्तुष्टमानसायै नमः ।
२९ ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै नमः ।
३० ॐ खर्वायै नमः ।
३१ ॐ खड्गखर्परधारिण्यै नमः ।
३२ ॐ षड्वर्गभावरहितायै नमः ।
३३ ॐ षड्वर्गपरिचारिकायै नमः ।
३४ ॐ षड्वर्गायै नमः ।
३५ ॐ षडङ्गायै नमः ।
३६ ॐ षोढायै नमः ।
३७ ॐ षोडशवार्षिक्यै नमः ।
३८ ॐ क्रतुरूपायै नमः ।
३९ ॐ क्रतुमत्यै नमः ।
४० ॐ ऋभुक्षायै नमः ।
४१ ॐ क्रतुमण्डितायै नमः ।
४२ ॐ कवर्गादिपवर्गान्तायै नमः ।
४३ ॐ अन्तःस्थायै नमः ।
४४ ॐ अनन्तरूपिण्यै नमः ।
४५ ॐ अकाराकाररहितायै नमः ।
४६ ॐ कालमृत्युजरापहायै नमः ।
४७ ॐ तन्व्यै नमः ।
४८ ॐ तत्त्वेश्वर्यै नमः ।
४९ ॐ तारायै नमः ।
५० ॐ त्रिवर्षायै नमः ।
५१ ॐ ज्ञानरूपिण्यै नमः ।
५२ ॐ काल्यै नमः ।

५३ ॐ कराल्यै नमः।
५४ ॐ कामेश्यै नमः।
५५ ॐ छायायै नमः।
५६ ॐ संज्ञायै नमः।
५७ ॐ अरुन्धत्यै नमः।
५८ ॐ निर्विकल्पायै नमः।
५९ ॐ महावेगायै नमः।
६० ॐ महोत्साहायै नमः।
६१ ॐ महोदर्यै नमः।
६२ ॐ मेघायै नमः।
६३ ॐ बलाकायै नमः।
६४ ॐ विमलायै नमः।
६५ ॐ विमलज्ञानदायिन्यै नमः।
६६ ॐ गौर्यै नमः।
६७ ॐ वसुन्धरायै नमः।
६८ ॐ गोप्त्र्यै नमः।
६९ ॐ गवाम्पतिनिषेवितायै नमः।
७० ॐ भगाङ्गायै नमः।
७१ ॐ भगरूपायै नमः।
७२ ॐ भक्तिभावपरायणायै नमः।
७३ ॐ छिन्नमस्तायै नमः।
७४ ॐ महाधूमायै नमः।
७५ ॐ धूम्रविभूषणायै नमः।
७६ ॐ धर्मकर्मादिरहितायै नमः।
७७ ॐ धर्मकर्मपरायणायै नमः।
७८ ॐ सीतायै नमः।
७९ ॐ मातङ्गिन्यै नमः।
८० ॐ मेधायै नमः।
८१ ॐ मधुदैत्यविनाशिन्यै नमः।
८२ ॐ भैरव्यै नमः।
८३ ॐ भुवनायै नमः।
८४ ॐ मात्रे नमः।
८५ ॐ अभयदायै नमः।
८६ ॐ भवसुन्दर्यै नमः।
८७ ॐ भावुकायै नमः।
८८ ॐ बगलायै नमः।
८९ ॐ कृत्यायै नमः।
९० ॐ बालायै नमः।
९१ ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
९२ ॐ रोहिण्यै नमः।
९३ ॐ रेवत्यै नमः।
९४ ॐ रम्यायै नमः।
९५ ॐ रम्भायै नमः।
९६ ॐ रावणवन्दितायै नमः।
९७ ॐ शतयज्ञमय्यै नमः।
९८ ॐ सत्त्वायै नमः।
९९ ॐ शतक्रतुवरप्रदायै नमः।
१०० ॐ शतचन्द्राननायै नमः।
१०१ ॐ देव्यै नमः।
१०२ ॐ सहस्रादित्यसन्निभायै नमः।
१०३ ॐ सोमसूर्याग्निनयनायै नमः।
१०४ ॐ व्याघ्रचर्माम्बरावृतायै नमः।
१०५ ॐ अर्धेन्दुधारिण्यै नमः।
१०६ ॐ मत्तायै नमः।
१०७ ॐ मदिरायै नमः।
१०८ ॐ मदिरेक्षणायै नमः।

*॥ इति ब्रह्मयामले पूर्वखण्डे श्रीषोडश्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीभुवनेश्वर्यै नमः ॥

# श्रीभुवनेश्वरी-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्॥*

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शक्तिर्ऋषिर्गायत्रीच्छन्दो भुवनेश्वरी देवता चतुर्वर्गसाधने जपे विनियोगः।*

**कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते।**
**नरनारीहितार्थाय शिवं पप्रच्छ पार्वती॥ १॥**

*देव्युवाच*

**भुवनेश्वरीमहाविद्यानाम्नामष्टोत्तरं शतम्।**
**कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा॥ २॥**

*ईश्वर उवाच*

**शृणु देवि महाभागे स्तवराजमिदं शुभम्।**
**सहस्रनाम्नामधिकं सिद्धिदं मोक्षहेतुकम्॥ ३॥**
**शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः।**
**त्रिकालं श्रद्धया युक्तैः सर्वकामफलप्रदम्॥ ४॥**

*स्तोत्र*

**महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा।**
**माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी॥ ५॥**

---

* मैं भुवनेश्वरीदेवीका ध्यान करता हूँ। उनके श्रीअंगोंकी आभा प्रभातकालके सूर्यके समान है और मस्तकपर चन्द्रमाका मुकुट है। वे उभरे हुए स्तनों और तीन नेत्रोंसे युक्त हैं। उनके मुखपर मुसकानकी छटा छायी रहती है और हाथोंमें वरद, अंकुश, पाश एवं अभय-मुद्रा शोभा पाते हैं।

वागीश्वरी योगरूपा योगिनी कोटिसेविता।
जया च विजया चैव कौमारी सर्वमङ्गला॥ ६ ॥
हिङ्गुला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी।
ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी॥ ७ ॥
वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्या कुलपूजिता।
वामाङ्गा वामचारा च वामदेवप्रिया तथा॥ ८ ॥
डाकिनी योगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका।
पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती॥ ९ ॥
भूचरी खेचरी माया मातङ्गी भुवनेश्वरी।
कान्ता पतिव्रता साक्षी सुचक्षुः कुण्डवासिनी॥ १० ॥
उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिनी।
इन्द्राणी ब्रह्मचाण्डाली चण्डिका वायुवल्लभा॥ ११ ॥
सर्वधातुमयीमूर्तिर्जलरूपा जलोदरी।
आकाशी रणगा चैव नृकपालविभूषणा॥ १२ ॥
नर्मदा मोक्षदा चैव कामधर्मार्थदायिनी।
गायत्री चाथ सावित्री त्रिसन्ध्या तीर्थगामिनी॥ १३ ॥
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा।
पौर्णमासी कुहूरूपा तिथिमूर्तिस्वरूपिणी॥ १४ ॥
सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला।
अनला अर्धमात्रा च अरुणा पीतलोचना॥ १५ ॥

लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी।
नागपाशधरा मूर्तिरगाधा धृतकुण्डला॥ १६॥
क्षत्ररूपी क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता।
अव्यक्ता व्यक्तलोका च शम्भुरूपा मनस्विनी॥ १७॥
मातङ्गी मत्तमातङ्गी महादेवप्रिया सदा।
दैत्यहा चैव वाराही सर्वशास्त्रमयी शुभा॥ १८॥
य इदं पठते भक्त्या शृणुयाद्वा समाहितः।
अपुत्रो लभते पुत्रान् निर्धनो धनवान् भवेत्॥ १९॥
मूर्खोऽपि लभते शास्त्रं चौरोऽपि लभते गतिम्।
वेदानां पाठको विप्रः क्षत्रियो विजयी भवेत्॥ २०॥
वैश्यस्तु धनवान्भूयाच्छूद्रस्तु सुखमेधते।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः॥ २१॥
ये पठन्ति सदा भक्त्या न ते वै दुःखभागिनः।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं वा चतुर्थकम्॥ २२॥
ये पठन्ति सदा भक्त्या स्वर्गलोके च पूजिताः।
रुद्रं दृष्ट्वा यथा देवाः पन्नगा गरुडं यथा।
शत्रवः प्रपलायन्ते तस्य वक्त्रविलोकनात्॥ २३॥

*॥ इति श्रीरुद्रयामले देवीशङ्करसंवादे श्रीभुवनेश्वर्य-*
*ष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीभुवनेश्वर्यै नमः ॥

# श्रीभुवनेश्वरी-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ महामायायै नमः।
२ ॐ महाविद्यायै नमः।
३ ॐ महायोगायै नमः।
४ ॐ महोत्कटायै नमः।
५ ॐ माहेश्वर्यै नमः।
६ ॐ कुमार्यै नमः।
७ ॐ ब्रह्माण्यै नमः।
८ ॐ ब्रह्मरूपिण्यै नमः।
९ ॐ वागीश्वर्यै नमः।
१० ॐ योगरूपायै नमः।
११ ॐ योगिन्यै नमः।
१२ ॐ कोटिसेवितायै नमः।
१३ ॐ जयायै नमः।
१४ ॐ विजयायै नमः।
१५ ॐ कौमार्यै नमः।
१६ ॐ सर्वमङ्गलायै नमः।
१७ ॐ हिङ्गुलायै नमः।
१८ ॐ विलास्यै नमः।
१९ ॐ ज्वालिन्यै नमः।
२० ॐ ज्वालरूपिण्यै नमः।
२१ ॐ ईश्वर्यै नमः।
२२ ॐ क्रूरसंहार्यै नमः।
२३ ॐ कुलमार्गप्रदायिन्यै नमः।
२४ ॐ वैष्णव्यै नमः।
२५ ॐ सुभगाकारायै नमः।
२६ ॐ सुकुल्यायै नमः।
२७ ॐ कुलपूजितायै नमः।
२८ ॐ वामाङ्गायै नमः।
२९ ॐ वामचारायै नमः।
३० ॐ वामदेवप्रियायै नमः।
३१ ॐ डाकिन्यै नमः।
३२ ॐ योगिनीरूपायै नमः।
३३ ॐ भूतेश्यै नमः।
३४ ॐ भूतनायिकायै नमः।
३५ ॐ पद्मावत्यै नमः।
३६ ॐ पद्मनेत्रायै नमः।
३७ ॐ प्रबुद्धायै नमः।
३८ ॐ सरस्वत्यै नमः।
३९ ॐ भूचर्यै नमः।
४० ॐ खेचर्यै नमः।
४१ ॐ मायायै नमः।
४२ ॐ मातङ्ग्यै नमः।
४३ ॐ भुवनेश्वर्यै नमः।
४४ ॐ कान्तायै नमः।
४५ ॐ पतिव्रतायै नमः।
४६ ॐ साक्ष्यै नमः।
४७ ॐ सुचक्षुष्यै नमः।
४८ ॐ कुण्डवासिन्यै नमः।
४९ ॐ उमायै नमः।
५० ॐ कुमार्यै नमः।
५१ ॐ लोकेश्यै नमः।
५२ ॐ सुकेश्यै नमः।

५३ ॐ पद्मरागिन्यै नमः।
५४ ॐ इन्द्राण्यै नमः।
५५ ॐ ब्रह्मचाण्डाल्यै नमः।
५६ ॐ चण्डिकायै नमः।
५७ ॐ वायुवल्लभायै नमः।
५८ ॐ सर्वधातुमयीमूर्त्यै नमः।
५९ ॐ जलरूपायै नमः।
६० ॐ जलोदर्यै नमः।
६१ ॐ आकाश्यै नमः।
६२ ॐ रणगायै नमः।
६३ ॐ नृकपालविभूषणायै नमः।
६४ ॐ नर्मदायै नमः।
६५ ॐ मोक्षदायै नमः।
६६ ॐ कामधर्मार्थदायिन्यै नमः।
६७ ॐ गायत्र्यै नमः।
६८ ॐ सावित्र्यै नमः।
६९ ॐ त्रिसन्ध्यायै नमः।
७० ॐ तीर्थगामिन्यै नमः।
७१ ॐ अष्टम्यै नमः।
७२ ॐ नवम्यै नमः।
७३ ॐ दशम्यै नमः।
७४ ॐ एकादश्यै नमः।
७५ ॐ पौर्णमास्यै नमः।
७६ ॐ कुहूरूपायै नमः।
७७ ॐ तिथिमूर्तिस्वरूपिण्यै नमः।
७८ ॐ सुरारिनाशकार्यै नमः।
७९ ॐ उग्ररूपायै नमः।
८० ॐ वत्सलायै नमः।
८१ ॐ अनलायै नमः।
८२ ॐ अर्धमात्रायै नमः।
८३ ॐ अरुणायै नमः।
८४ ॐ पीतलोचनायै नमः।
८५ ॐ लज्जायै नमः।
८६ ॐ सरस्वत्यै नमः।
८७ ॐ विद्यायै नमः।
८८ ॐ भवान्यै नमः।
८९ ॐ पापनाशिन्यै नमः।
९० ॐ नागपाशधरायै नमः।
९१ ॐ मूर्त्यै नमः।
९२ ॐ अगाधायै नमः।
९३ ॐ धृतकुण्डलायै नमः।
९४ ॐ क्षत्ररूप्यै नमः।
९५ ॐ क्षयकर्यै नमः।
९६ ॐ तेजस्विन्यै नमः।
९७ ॐ शुचिस्मितायै नमः।
९८ ॐ अव्यक्तायै नमः।
९९ ॐ व्यक्तलोकायै नमः।
१०० ॐ शम्भुरूपायै नमः।
१०१ ॐ मनस्विन्यै नमः।
१०२ ॐ मातङ्ग्यै नमः।
१०३ ॐ मत्तमातङ्ग्यै नमः।
१०४ ॐ महादेवप्रियायै नमः।
१०५ ॐ दैत्यहायै नमः।
१०६ ॐ वाराह्यै नमः।
१०७ ॐ सर्वशास्त्रमय्यै नमः।
१०८ ॐ शुभायै नमः।

*॥ इति श्रीरुद्रयामले देवीशङ्करसंवादे श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीत्रिपुरभैरव्यै नमः ॥

# श्रीत्रिपुरभैरवी-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥*

*स्तोत्र*

*श्रीदेव्युवाच*

**कैलासवासिन् भगवन् प्राणेश्वर कृपानिधे।**
**भक्तवत्सल भैरव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १॥**
**न श्रुतं देवदेवेश वद मां दीनवत्सल।**

*श्रीशिव उवाच*

**शृणु प्रिये महागोप्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ २॥**
**भैरव्याः शुभदं सेव्यं सर्वसम्पत्प्रदायकम्।**
**यस्यानुष्ठानमात्रेण किं न सिध्यति भूतले॥ ३॥**
**ॐ भैरवी भैरवाराध्या भूतिदा भूतभावना।**
**आर्या ब्राह्मी कामधेनुः सर्वसम्पत्प्रदायिनी॥ ४॥**
**त्रैलोक्यवन्दिता देवी महिषासुरमर्दिनी।**
**मोहघ्नी मालती माला महापातकनाशिनी॥ ५॥**

---

* जगदम्बाके श्रीअंगोंकी कान्ति उदयकालके सहस्रों सूर्योंके समान है। वे लाल रंगकी रेशमी साड़ी पहने हुए हैं। उनके गलेमें मुण्डमाला शोभा पा रही है। दोनों स्तनोंपर रक्त चन्दनका लेप लगा है। वे अपने कर-कमलोंमें जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्राएँ धारण किये हुए हैं। तीन नेत्रोंसे सुशोभित मुखारविन्दकी बड़ी शोभा हो रही है। उनके मस्तकपर चन्द्रमाके साथ ही रत्नमय मुकुट बँधा है तथा वे कमलके आसनपर विराजमान हैं। ऐसी देवीको मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

क्रोधिनी क्रोधनिलया क्रोधरक्तेक्षणा कुहूः।
त्रिपुरा त्रिपुराधारा त्रिनेत्रा भीमभैरवी॥ ६ ॥
देवकी देवमाता च देवदुष्टविनाशिनी।
दामोदरप्रिया दीर्घा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी॥ ७ ॥
लम्बोदरी लम्बकर्णा प्रलम्बितपयोधरा।
प्रत्यङ्गिरा प्रतिपदा प्रणतक्लेशनाशिनी॥ ८ ॥
प्रभावती गुणवती गणमाता गुहेश्वरी।
क्षीराब्धितनया क्षेम्या जगत्त्राणविधायिनी॥ ९ ॥
महामारी महामोहा महाक्रोधा महानदी।
महापातकसंहन्त्री महामोहप्रदायिनी॥ १० ॥
विकराला महाकाला कालरूपा कलावती।
कपालखट्वाङ्गधरा खड्गखर्परधारिणी॥ ११ ॥
कुमारी कुङ्कुमप्रीता कुङ्कुमारुणरञ्जिता।
कौमोदकी कुमुदिनी कीर्त्या कीर्तिप्रदायिनी॥ १२ ॥
नवीना नीरदा नित्या नन्दिकेश्वरपालिनी।
घर्घरा घर्घरारावा घोरा घोरस्वरूपिणी॥ १३ ॥
कलिघ्नी कलिधर्मघ्नी कलिकौतुकनाशिनी।
किशोरी केशवप्रीता क्लेशसङ्घनिवारिणी॥ १४ ॥
महोन्मत्ता महामत्ता महाविद्या महीमयी।
महायज्ञा महावाणी महामन्दरधारिणी॥ १५ ॥

मोक्षदा मोहदा मोहा भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।
अट्टाट्टहासनिरता क्वणन्नूपुरधारिणी॥ १६॥
दीर्घदंष्ट्रा दीर्घमुखी दीर्घघोणा च दीर्घिका।
दनुजान्तकरी दुष्टा दुःखदारिद्र्यभञ्जिनी॥ १७॥
दुराचारा च दोषघ्नी दमपत्नी दयापरा।
मनोभवा मनुमयी मनुवंशप्रवर्धिनी॥ १८॥
श्यामा श्यामतनुः शोभा सौम्या शम्भुविलासिनी।
इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १९॥
भैरव्या देवदेवेश्यास्तव प्रीत्यै सुरेश्वरि।
अप्रकाश्यमिदं गोप्यं पठनीयं प्रयत्नतः॥ २०॥

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीत्रिपुरभैरव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीत्रिपुरभैरव्यै नमः ॥

# श्रीत्रिपुरभैरवी-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ भैरव्यै नमः ।
२ ॐ भैरवाराध्यायै नमः ।
३ ॐ भूतिदायै नमः ।
४ ॐ भूतभावनायै नमः ।
५ ॐ आर्यायै नमः ।
६ ॐ ब्राह्म्यै नमः ।
७ ॐ कामधेनवे नमः ।
८ ॐ सर्वसम्पत्प्रदायिन्यै नमः ।
९ ॐ त्रैलोक्यवन्दितायै नमः ।
१० ॐ देव्यै नमः ।
११ ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः ।
१२ ॐ मोहघ्न्यै नमः ।
१३ ॐ मालत्यै नमः ।
१४ ॐ मालायै नमः ।
१५ ॐ महापातकनाशिन्यै नमः ।
१६ ॐ क्रोधिन्यै नमः ।
१७ ॐ क्रोधनिलयायै नमः ।
१८ ॐ क्रोधरक्तेक्षणायै नमः ।
१९ ॐ कुह्वै नमः ।
२० ॐ त्रिपुरायै नमः ।
२१ ॐ त्रिपुराधारायै नमः ।
२२ ॐ त्रिनेत्रायै नमः ।
२३ ॐ भीमभैरव्यै नमः ।
२४ ॐ देवक्यै नमः ।
२५ ॐ देवमात्रे नमः ।
२६ ॐ देवदुष्टविनाशिन्यै नमः ।
२७ ॐ दामोदरप्रियायै नमः ।
२८ ॐ दीर्घायै नमः ।
२९ ॐ दुर्गायै नमः ।
३० ॐ दुर्गतिनाशिन्यै नमः ।
३१ ॐ लम्बोदर्यै नमः ।
३२ ॐ लम्बकर्णायै नमः ।
३३ ॐ प्रलम्बितपयोधरायै नमः ।
३४ ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः ।
३५ ॐ प्रतिपदायै नमः ।
३६ ॐ प्रणतक्लेशनाशिन्यै नमः ।
३७ ॐ प्रभावत्यै नमः ।
३८ ॐ गुणवत्यै नमः ।
३९ ॐ गणमात्रे नमः ।
४० ॐ गुहेश्वर्यै नमः ।
४१ ॐ क्षीराब्धितनयायै नमः ।
४२ ॐ क्षेम्यायै नमः ।
४३ ॐ जगत्त्राणविधायिन्यै नमः ।
४४ ॐ महामार्यै नमः ।
४५ ॐ महामोहायै नमः ।
४६ ॐ महाक्रोधायै नमः ।
४७ ॐ महानद्यै नमः ।
४८ ॐ महापातकसंहन्त्र्यै नमः ।
४९ ॐ महामोहप्रदायिन्यै नमः ।
५० ॐ विकरालायै नमः ।
५१ ॐ महाकालायै नमः ।
५२ ॐ कालरूपायै नमः ।

५३ ॐ कलावत्यै नमः ।
५४ ॐ कपालखट्वाङ्गधरायै नमः ।
५५ ॐ खड्गखर्परधारिण्यै नमः ।
५६ ॐ कुमार्यै नमः ।
५७ ॐ कुङ्कुमप्रीतायै नमः ।
५८ ॐ कुङ्कुमारुणरञ्जितायै नमः ।
५९ ॐ कौमोदक्यै नमः ।
६० ॐ कुमुदिन्यै नमः ।
६१ ॐ कीर्त्यायै नमः ।
६२ ॐ कीर्तिप्रदायिन्यै नमः ।
६३ ॐ नवीनायै नमः ।
६४ ॐ नीरदायै नमः ।
६५ ॐ नित्यायै नमः ।
६६ ॐ नन्दिकेश्वरपालिन्यै नमः ।
६७ ॐ घर्घरायै नमः ।
६८ ॐ घर्घरारावायै नमः ।
६९ ॐ घोरायै नमः ।
७० ॐ घोरस्वरूपिण्यै नमः ।
७१ ॐ कलिघ्न्यै नमः ।
७२ ॐ कलिधर्मघ्न्यै नमः ।
७३ ॐ कलिकौतुकनाशिन्यै नमः ।
७४ ॐ किशोर्यै नमः ।
७५ ॐ केशवप्रीतायै नमः ।
७६ ॐ क्लेशसङ्घनिवारिण्यै नमः ।
७७ ॐ महोन्मत्तायै नमः ।
७८ ॐ महामत्तायै नमः ।
७९ ॐ महाविद्यायै नमः ।
८० ॐ महीमय्यै नमः ।
८१ ॐ महायज्ञायै नमः ।
८२ ॐ महावाण्यै नमः ।
८३ ॐ महामन्दरधारिण्यै नमः ।
८४ ॐ मोक्षदायै नमः ।
८५ ॐ मोहदायै नमः ।
८६ ॐ मोहायै नमः ।
८७ ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदायिन्यै नमः ।
८८ ॐ अट्टाट्टहासनिरतायै नमः ।
८९ ॐ क्वणन्नूपुरधारिण्यै नमः ।
९० ॐ दीर्घदंष्ट्रायै नमः ।
९१ ॐ दीर्घमुख्यै नमः ।
९२ ॐ दीर्घघोणायै नमः ।
९३ ॐ दीर्घिकायै नमः ।
९४ ॐ दनुजान्तकर्यै नमः ।
९५ ॐ दुष्टायै नमः ।
९६ ॐ दुःखदारिद्र्यभञ्जिन्यै नमः ।
९७ ॐ दुराचारायै नमः ।
९८ ॐ दोषघ्न्यै नमः ।
९९ ॐ दमपत्न्यै नमः ।
१०० ॐ दयापरायै नमः ।
१०१ ॐ मनोभवायै नमः ।
१०२ ॐ मनुमय्यै नमः ।
१०३ ॐ मनुवंशप्रवर्धिन्यै नमः ।
१०४ ॐ श्यामायै नमः ।
१०५ ॐ श्यामतनवे नमः ।
१०६ ॐ शोभायै नमः ।
१०७ ॐ सौम्यायै नमः ।
१०८ ॐ शम्भुविलासिन्यै नमः ।

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीत्रिपुरभैरव्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीछिन्नमस्तायै नमः ॥

# श्रीछिन्नमस्ता-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

**प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिकां**
**दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधारां पिबन्तीं मुदा।**
**नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालङ्कृतां**
**रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढां ध्यायेज्जवासंनिभाम् ॥***

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीछिन्नमस्ता देवता मम सकलसिद्धिप्राप्तये जपे विनियोगः।*

*श्रीपार्वत्युवाच*

**नाम्नां सहस्त्रं परमं छिन्नमस्ताप्रियं शुभम्।**
**कथितं भवता शम्भो सद्यः शत्रुनिकृन्तनम् ॥ १ ॥**
**पुनः पृच्छाम्यहं देव कृपां कुरु ममोपरि।**
**सहस्त्रनामपाठे च अशक्तो यः पुमान् भवेत् ॥ २ ॥**
**तेन किं पठ्यते नाथ तन्मे ब्रूहि कृपामय।**

*श्रीसदाशिव उवाच*

**अष्टोत्तरशतनाम्नां पठ्यते तेन सर्वदा ॥ ३ ॥**
**सहस्त्रनामपाठस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम्।**

---

* जो शत्रुओंपर प्रहारहेतु तत्पर चरणोंवाली हैं, जिन्होंने अपने हाथोंमें कटा हुआ सिर तथा खड्ग धारण कर रखा है, दिशाएँ ही जिनके वस्त्र हैं,अपने कबन्धसे प्रवाहित रक्तकी अमृतधाराका जो निरन्तर प्रसन्नतापूर्वक पान करती हैं, अपने शिरोभागमें रत्नके रूपमें जो नाग लपेटे हुई हैं, जो तीन नेत्रोंवाली हैं, जिनका वक्षःस्थल नीलकमलकी मालासे अलंकृत है, रति और कामके मूलमें (मूलाधारचक्रमें) जो विराजमान हैं और जो जपाकुसुमके सदृश आभावाली हैं—उन भगवती छिन्नमस्ताका ध्यान करना चाहिये।

स्तोत्र

ॐ छिन्नमस्ता महाविद्या महाभीमा महोदरी।
चण्डेश्वरी चण्डमाता चण्डमुण्डप्रभञ्जिनी॥ ४ ॥
महाचण्डा चण्डरूपा चण्डिका चण्डखण्डिनी।
क्रोधिनी क्रोधजननी क्रोधरूपा कुहूः कला॥ ५ ॥
कोपातुरा कोपयुता कोपसंहारकारिणी।
वज्रवैरोचनी वज्रा वज्रकल्पा च डाकिनी॥ ६ ॥
डाकिनीकर्मनिरता डाकिनीकर्मपूजिता।
डाकिनीसङ्गनिरता डाकिनीप्रेमपूरिता॥ ७ ॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वा खड्गखप्परधारिणी।
प्रेताशना प्रेतयुता प्रेतसङ्गविहारिणी॥ ८ ॥
छिन्नमुण्डधरा छिन्नचण्डविद्या च चित्रिणी।
घोररूपा घोरदृष्टिर्घोररावा घनोदरी॥ ९ ॥
योगिनी योगनिरता जपयज्ञपरायणा।
योनिचक्रमयी योनिर्योनिचक्रप्रवर्तिनी॥ १० ॥
योनिमुद्रा योनिगम्या योनियन्त्रनिवासिनी।
यन्त्ररूपा यन्त्रमयी यन्त्रेशी यन्त्रपूजिता॥ ११ ॥
कीर्त्या कपर्दिनी काली कङ्काली कलकारिणी।
आरक्ता रक्तनयना रक्तपानपरायणा॥ १२ ॥
भवानी भूतिदा भूतिर्भूतिदात्री च भैरवी।
भैरवाचारनिरता भूतभैरवसेविता॥ १३ ॥

भीमा भीमेश्वरी देवी भीमनादपरायणा।
भवाराध्या भवनुता भवसागरतारिणी॥ १४॥
भद्रकाली भद्रतनुर्भद्ररूपा च भद्रिका।
भद्ररूपा महाभद्रा सुभद्रा भद्रपालिनी॥ १५॥
सुभव्या भव्यवदना सुमुखी सिद्धसेविता।
सिद्धिदा सिद्धिनिवहा सिद्धा सिद्धनिषेविता॥ १६॥
शुभदा शुभगा शुद्धा शुद्धसत्त्वा शुभावहा।
श्रेष्ठा दृष्टिमयी देवी दृष्टिसंहारकारिणी॥ १७॥
शर्वाणी सर्वगा सर्वा सर्वमङ्गलकारिणी।
शिवा शान्ता शान्तिरूपा मृडानी मदनातुरा॥ १८॥
इति ते कथितं देवि स्तोत्रं परमदुर्लभम्।
गुह्याद् गुह्यतरं गोप्यं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ १९॥

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीछिन्नमस्तायै नमः ॥

# श्रीछिन्नमस्ता-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ छिन्नमस्तायै नमः ।
२ ॐ महाविद्यायै नमः ।
३ ॐ महाभीमायै नमः ।
४ ॐ महोदर्यै नमः ।
५ ॐ चण्डेश्वर्यै नमः ।
६ ॐ चण्डमात्रे नमः ।
७ ॐ चण्डमुण्डप्रभञ्जिन्यै नमः ।
८ ॐ महाचण्डायै नमः ।
९ ॐ चण्डरूपायै नमः ।
१० ॐ चण्डिकायै नमः ।
११ ॐ चण्डखण्डिन्यै नमः ।
१२ ॐ क्रोधिन्यै नमः ।
१३ ॐ क्रोधजनन्यै नमः ।
१४ ॐ क्रोधरूपायै नमः ।
१५ ॐ कुह्वै नमः ।
१६ ॐ कलायै नमः ।
१७ ॐ कोपातुरायै नमः ।
१८ ॐ कोपयुतायै नमः ।
१९ ॐ कोपसंहारकारिण्यै नमः ।
२० ॐ वज्रवैरोचन्यै नमः ।
२१ ॐ वज्रायै नमः ।
२२ ॐ वज्रकल्पायै नमः ।
२३ ॐ डाकिन्यै नमः ।
२४ ॐ डाकिनीकर्मनिरतायै नमः ।
२५ ॐ डाकिनीकर्मपूजितायै नमः ।
२६ ॐ डाकिनीसङ्गनिरतायै नमः ।
२७ ॐ डाकिनीप्रेमपूरितायै नमः ।
२८ ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै नमः ।
२९ ॐ खर्वायै नमः ।
३० ॐ खड्गखप्परधारिण्यै नमः ।
३१ ॐ प्रेताशनायै नमः ।
३२ ॐ प्रेतयुतायै नमः ।
३३ ॐ प्रेतसङ्गविहारिण्यै नमः ।
३४ ॐ छिन्नमुण्डधरायै नमः ।
३५ ॐ छिन्नचण्डविद्यायै नमः ।
३६ ॐ चित्रिण्यै नमः ।
३७ ॐ घोररूपायै नमः ।
३८ ॐ घोरदृष्ट्यै नमः ।
३९ ॐ घोररावायै नमः ।
४० ॐ घनोदर्यै नमः ।
४१ ॐ योगिन्यै नमः ।
४२ ॐ योगनिरतायै नमः ।
४३ ॐ जपयज्ञपरायणायै नमः ।
४४ ॐ योनिचक्रमय्यै नमः ।
४५ ॐ योन्यै नमः ।
४६ ॐ योनिचक्रप्रवर्तिन्यै नमः ।
४७ ॐ योनिमुद्रायै नमः ।
४८ ॐ योनिगम्यायै नमः ।
४९ ॐ योनियन्त्रनिवासिन्यै नमः ।
५० ॐ यन्त्ररूपायै नमः ।
५१ ॐ यन्त्रमय्यै नमः ।
५२ ॐ यन्त्रेश्यै नमः ।

५३ ॐ यन्त्रपूजितायै नमः।
५४ ॐ कीर्त्यायै नमः।
५५ ॐ कपर्दिन्यै नमः।
५६ ॐ काल्यै नमः।
५७ ॐ कङ्काल्यै नमः।
५८ ॐ कलकारिण्यै नमः।
५९ ॐ आरक्तायै नमः।
६० ॐ रक्तनयनायै नमः।
६१ ॐ रक्तपानपरायणायै नमः।
६२ ॐ भवान्यै नमः।
६३ ॐ भूतिदायै नमः।
६४ ॐ भूत्यै नमः।
६५ ॐ भूतिदात्र्यै नमः।
६६ ॐ भैरव्यै नमः।
६७ ॐ भैरवाचारनिरतायै नमः।
६८ ॐ भूतभैरवसेवितायै नमः।
६९ ॐ भीमायै नमः।
७० ॐ भीमेश्वर्यै देव्यै नमः।
७१ ॐ भीमनादपरायणायै नमः।
७२ ॐ भवाराध्यायै नमः।
७३ ॐ भवनुतायै नमः।
७४ ॐ भवसागरतारिण्यै नमः।
७५ ॐ भद्रकाल्यै नमः।
७६ ॐ भद्रतनवे नमः।
७७ ॐ भद्ररूपायै नमः।
७८ ॐ भद्रिकायै नमः।
७९ ॐ भद्ररूपायै नमः।
८० ॐ महाभद्रायै नमः।
८१ ॐ सुभद्रायै नमः।
८२ ॐ भद्रपालिन्यै नमः।
८३ ॐ सुभव्यायै नमः।
८४ ॐ भव्यवदनायै नमः।
८५ ॐ सुमुख्यै नमः।
८६ ॐ सिद्धसेवितायै नमः।
८७ ॐ सिद्धिदायै नमः।
८८ ॐ सिद्धिनिवहायै नमः।
८९ ॐ सिद्धायै नमः।
९० ॐ सिद्धनिषेवितायै नमः।
९१ ॐ शुभदायै नमः।
९२ ॐ शुभगायै नमः।
९३ ॐ शुद्धायै नमः।
९४ ॐ शुद्धसत्त्वायै नमः।
९५ ॐ शुभावहायै नमः।
९६ ॐ श्रेष्ठायै नमः।
९७ ॐ दृष्टिमय्यै नमः।
९८ ॐ देव्यै नमः।
९९ ॐ दृष्टिसंहारकारिण्यै नमः।
१०० ॐ शर्वाण्यै नमः।
१०१ ॐ सर्वगायै नमः।
१०२ ॐ सर्वायै नमः।
१०३ ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः।
१०४ ॐ शिवायै नमः।
१०५ ॐ शान्तायै नमः।
१०६ ॐ शान्तिरूपायै नमः।
१०७ ॐ मृडान्यै नमः।
१०८ ॐ मदनातुरायै नमः।

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीछिन्नमस्ताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीधूमावत्यै नमः ॥

# श्रीधूमावती-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥*

*स्तोत्र*

*ईश्वर उवाच*

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा।
धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी॥ १॥
अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता।
अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रपूजिता॥ २॥
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी।
वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा॥ ३॥
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा।
कराली च करालास्या कङ्काली शूर्पधारिणी॥ ४॥
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरी॥ ५॥
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका।
विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी॥ ६॥

---

* धूम्र आभासे युक्त, धूमिल वस्त्र धारण करनेवाली, बाहर दिखायी देनेवाले दाँतोंसे सम्पन्न, बिखरे हुए केशों तथा वस्त्रोंसे युक्त, काकचिह्नसे युक्त ध्वजावाले रथपर आरूढ़, धवल वर्णके दोनों हाथोंवाली, हाथोंमें सूप धारण करनेवाली, रुक्ष शरीरवाली, नित्य भूख-प्याससे आकुल विग्रहवाली, अत्यन्त कुटिल, जलकी इच्छासे व्यग्र चित्तवाली, रोषयुक्त नेत्रयुगलवाली, भय देनेवाली तथा भयंकर मुखमण्डलवाली देवी धूमावतीका ध्यान करना चाहिये।

क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी।
विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी॥ ७ ॥
चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना।
चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी॥ ८ ॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी।
कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णारूपा क्रियावती॥ ९ ॥
कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला।
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी॥ १० ॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी।
दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी॥ ११ ॥
निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता।
कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी॥ १२ ॥
महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता।
महादेवप्रिया मेधा महासङ्कटनाशिनी॥ १३ ॥
भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी।
भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका॥ १४ ॥
भेरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी।
त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः॥ १५ ॥
त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी।
इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम्॥ १६ ॥
मया ते कथितं देवि शत्रुसङ्घविनाशनम्।
कारागारे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये॥ १७ ॥
इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटैः।
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ १८ ॥
चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥ १९ ॥

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीधूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीधूमावत्यै नमः ॥

# श्रीधूमावती-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ धूमावत्यै नमः ।
२ ॐ धूम्रवर्णायै नमः ।
३ ॐ धूम्रपानपरायणायै नमः ।
४ ॐ धूम्राक्षमथिन्यै नमः ।
५ ॐ धन्यायै नमः ।
६ ॐ धन्यस्थाननिवासिन्यै नमः ।
७ ॐ अघोराचारसन्तुष्टायै नमः ।
८ ॐ अघोराचारमण्डितायै नमः ।
९ ॐ अघोरमन्त्रसम्प्रीतायै नमः ।
१० ॐ अघोरमन्त्रपूजितायै नमः ।
११ ॐ अट्टाट्टहासनिरतायै नमः ।
१२ ॐ मलिनाम्बरधारिण्यै नमः ।
१३ ॐ वृद्धायै नमः ।
१४ ॐ विरूपायै नमः ।
१५ ॐ विधवायै नमः ।
१६ ॐ विद्यायै नमः ।
१७ ॐ विरलद्विजायै नमः ।
१८ ॐ प्रवृद्धघोणायै नमः ।
१९ ॐ कुमुख्यै नमः ।
२० ॐ कुटिलायै नमः ।
२१ ॐ कुटिलेक्षणायै नमः ।
२२ ॐ कराल्यै नमः ।
२३ ॐ करालास्यायै नमः ।
२४ ॐ कङ्काल्यै नमः ।
२५ ॐ शूर्पधारिण्यै नमः ।
२६ ॐ काकध्वजरथारूढायै नमः ।
२७ ॐ केवलायै नमः ।
२८ ॐ कठिनायै नमः ।
२९ ॐ कुह्वै नमः ।
३० ॐ क्षुत्पिपासार्दितायै नमः ।
३१ ॐ नित्यायै नमः ।
३२ ॐ ललज्जिह्वायै नमः ।
३३ ॐ दिगम्बर्यै नमः ।
३४ ॐ दीर्घोदर्यै नमः ।
३५ ॐ दीर्घरवायै नमः ।
३६ ॐ दीर्घाङ्ग्यै नमः ।
३७ ॐ दीर्घमस्तकायै नमः ।
३८ ॐ विमुक्तकुन्तलायै नमः ।
३९ ॐ कीर्त्यायै नमः ।
४० ॐ कैलासस्थानवासिन्यै नमः ।
४१ ॐ क्रूरायै नमः ।
४२ ॐ कालस्वरूपायै नमः ।
४३ ॐ कालचक्रप्रवर्तिन्यै नमः ।
४४ ॐ विवर्णायै नमः ।
४५ ॐ चञ्चलायै नमः ।
४६ ॐ दुष्टायै नमः ।
४७ ॐ दुष्टविध्वंसकारिण्यै नमः ।
४८ ॐ चण्ड्यै नमः ।
४९ ॐ चण्डस्वरूपायै नमः ।
५० ॐ चामुण्डायै नमः ।
५१ ॐ चण्डनिःस्वनायै नमः ।
५२ ॐ चण्डवेगायै नमः ।

५३ ॐ चण्डगत्यै नमः ।
५४ ॐ चण्डविनाशिन्यै नमः ।
५५ ॐ मुण्डविनाशिन्यै नमः ।
५६ ॐ चाण्डालिन्यै नमः ।
५७ ॐ चित्ररेखायै नमः ।
५८ ॐ चिंत्राङ्ग्यै नमः ।
५९ ॐ चित्ररूपिण्यै नमः ।
६० ॐ कृष्णायै नमः ।
६१ ॐ कपर्दिन्यै नमः ।
६२ ॐ कुल्लायै नमः ।
६३ ॐ कृष्णारूपायै नमः ।
६४ ॐ क्रियावत्यै नमः ।
६५ ॐ कुम्भस्तन्यै नमः ।
६६ ॐ महोन्मत्तायै नमः ।
६७ ॐ मदिरापानविह्वलायै नमः ।
६८ ॐ चतुर्भुजायै नमः ।
६९ ॐ ललज्जिह्वायै नमः ।
७० ॐ शत्रुसंहारकारिण्यै नमः ।
७१ ॐ शवारूढायै नमः ।
७२ ॐ शवगतायै नमः ।
७३ ॐ श्मशानस्थानवासिन्यै नमः ।
७४ ॐ दुराराध्यायै नमः ।
७५ ॐ दुराचारायै नमः ।
७६ ॐ दुर्जनप्रीतिदायिन्यै नमः ।
७७ ॐ निर्मांसायै नमः ।
७८ ॐ निराकारायै नमः ।
७९ ॐ धूमहस्तायै नमः ।
८० ॐ वरान्वितायै नमः ।
८१ ॐ कलहायै नमः ।
८२ ॐ कलिप्रीतायै नमः ।
८३ ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः ।
८४ ॐ महाकालस्वरूपायै नमः ।
८५ ॐ महाकालप्रपूजितायै नमः ।
८६ ॐ महादेवप्रियायै नमः ।
८७ ॐ मेधायै नमः ।
८८ ॐ महासङ्कटनाशिन्यै नमः ।
८९ ॐ भक्तप्रियायै नमः ।
९० ॐ भक्तगत्यै नमः ।
९१ ॐ भक्तशत्रुविनाशिन्यै नमः ।
९२ ॐ भैरव्यै नमः ।
९३ ॐ भुवनायै नमः ।
९४ ॐ भीमायै नमः ।
९५ ॐ भारत्यै नमः ।
९६ ॐ भुवनात्मिकायै नमः ।
९७ ॐ भेरुण्डायै नमः ।
९८ ॐ भीमनयनायै नमः ।
९९ ॐ त्रिनेत्रायै नमः ।
१०० ॐ बहुरूपिण्यै नमः ।
१०१ ॐ त्रिलोकेश्यै नमः ।
१०२ ॐ त्रिकालज्ञायै नमः ।
१०३ ॐ त्रिस्वरूपायै नमः ।
१०४ ॐ त्रयीतनवे नमः ।
१०५ ॐ त्रिमूर्त्यै नमः ।
१०६ ॐ तन्व्यै नमः ।
१०७ ॐ त्रिशक्त्यै नमः ।
१०८ ॐ त्रिशूलिन्यै नमः ।

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीधूमावत्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीबगलायै नमः ॥

# श्रीबगला-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

**सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं**
**हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम्।**
**हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः**
**व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥ ***

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीपीताम्बर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीपीताम्बरी देवता श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः।*

*नारद उवाच*

**भगवन् देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक।**
**शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाधुना॥ १॥**

*श्रीभगवानुवाच*

**शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।**
**पीताम्बर्या महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम्॥ २॥**
**यस्य प्रपठनात्सद्यो वादी मूको भवेत्क्षणात्।**
**रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥ ३॥**

*स्तोत्र*

**ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशङ्करभामिनी।**
**बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि॥ १॥**

---

* जो स्वर्णके सिंहासनपर विराजमान हैं, तीन नेत्रोंसे सुशोभित हैं, पीतवर्णके परिधानसे मण्डित हैं, स्वर्णकी आभावाले अंगोंसे प्रकाशित हैं, चन्द्रमुकुटसे युक्त हैं, विकसित चम्पा-पुष्पोंकी मालासे सुशोभित हैं, हाथोंमें मुद्गर, पाश, वज्र और जिह्वा धारण की हुई हैं, आभूषणोंसे अलंकृत विग्रहवाली हैं, तीनों लोकोंको आश्रय प्रदान करनेवाली उन भगवती बगलामुखीका चिन्तन करना चाहिये।

महामत्स्या महाकूर्मा महावाराहरूपिणी।
नरसिंहप्रिया रम्या वामना बटुरूपिणी॥ २ ॥
जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता।
कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलकारिणी॥ ३ ॥
बुद्धिरूपा बुद्धभार्या बौद्धपाखण्डखण्डिनी।
कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी॥ ४ ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी।
केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी॥ ५ ॥
केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता।
रुद्ररूपा रुद्रमूर्ती रुद्राणी रुद्रदेवता॥ ६ ॥
नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेशप्रपूजिता।
नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता॥ ७ ॥
नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता।
नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा॥ ८ ॥
नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता।
नवीननीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी॥ ९ ॥
रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी।
सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णभा स्वर्गतिप्रदा॥ १० ॥
रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी।
भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा॥ ११ ॥

रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी।
यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी॥ १२॥
लङ्कापतिध्वंसकरी लङ्केशरिपुवन्दिता।
लङ्कानाथकुलहरा महारावणहारिणी॥ १३॥
देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरी।
पराणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी॥ १४॥
वरदा वरदाराध्या वरदानपरायणा।
वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषणभूषिता॥ १५॥
वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना।
बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता॥ १६॥
पीतपुष्पप्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी।
इति ते कथितं विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १७॥
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणुयाद्वा समाहितः।
तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति नैवात्र संशयः॥ १८॥

प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः
पठेत्सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम्।
द्रुतं भवेत्तस्य समस्तवृद्धि-
र्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः॥ १९॥

*॥ इति विष्णुयामले नारदविष्णुसंवादे श्रीबगलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीबगलायै नमः ॥

# श्रीबगला-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ बगलायै नमः ।
२ ॐ विष्णुवनितायै नमः ।
३ ॐ विष्णुशङ्करभामिन्यै नमः ।
४ ॐ बहुलायै नमः ।
५ ॐ वेदमात्रे नमः ।
६ ॐ महाविष्णुप्रस्वै नमः ।
७ ॐ महामत्स्यायै नमः ।
८ ॐ महाकूर्मायै नमः ।
९ ॐ महावाराहरूपिण्यै नमः ।
१० ॐ नरसिंहप्रियायै नमः ।
११ ॐ रम्यायै नमः ।
१२ ॐ वामनायै नमः ।
१३ ॐ बटुरूपिण्यै नमः ।
१४ ॐ जामदग्न्यस्वरूपायै नमः ।
१५ ॐ रामायै नमः ।
१६ ॐ रामप्रपूजितायै नमः ।
१७ ॐ कृष्णायै नमः ।
१८ ॐ कपर्दिन्यै नमः ।
१९ ॐ कृत्यायै नमः ।
२० ॐ कलहायै नमः ।
२१ ॐ कलकारिण्यै नमः ।
२२ ॐ बुद्धिरूपायै नमः ।
२३ ॐ बुद्धभार्यायै नमः ।
२४ ॐ बौद्धपाखण्डखण्डिन्यै नमः ।
२५ ॐ कल्किरूपायै नमः ।
२६ ॐ कलिहरायै नमः ।
२७ ॐ कलिदुर्गतिनाशिन्यै नमः ।
२८ ॐ कोटिसूर्यप्रतीकाशायै नमः ।
२९ ॐ कोटिकन्दर्पमोहिन्यै नमः ।
३० ॐ केवलायै नमः ।
३१ ॐ कठिनायै नमः ।
३२ ॐ काल्यै नमः ।
३३ ॐ कलायै नमः ।
३४ ॐ कैवल्यदायिन्यै नमः ।
३५ ॐ केशव्यै नमः ।
३६ ॐ केशवाराध्यायै नमः ।
३७ ॐ किशोर्यै नमः ।
३८ ॐ केशवस्तुतायै नमः ।
३९ ॐ रुद्ररूपायै नमः ।
४० ॐ रुद्रमूर्त्यै नमः ।
४१ ॐ रुद्राण्यै नमः ।
४२ ॐ रुद्रदेवतायै नमः ।
४३ ॐ नक्षत्ररूपायै नमः ।
४४ ॐ नक्षत्रायै नमः ।
४५ ॐ नक्षत्रेशप्रपूजितायै नमः ।
४६ ॐ नक्षत्रेशप्रियायै नमः ।
४७ ॐ नित्यायै नमः ।
४८ ॐ नक्षत्रपतिवन्दितायै नमः ।
४९ ॐ नागिन्यै नमः ।
५० ॐ नागजनन्यै नमः ।
५१ ॐ नागराजप्रवन्दितायै नमः ।
५२ ॐ नागेश्वर्यै नमः ।
५३ ॐ नागकन्यायै नमः ।
५४ ॐ नागर्यै नमः ।
५५ ॐ नगात्मजायै नमः ।
५६ ॐ नगाधिराजतनयायै नमः ।

५७ ॐ नगराजप्रपूजितायै नमः।
५८ ॐ नवीननीरदायै नमः।
५९ ॐ पीतायै नमः।
६० ॐ श्यामायै नमः।
६१ ॐ सौन्दर्यकारिण्यै नमः।
६२ ॐ रक्तायै नमः।
६३ ॐ नीलायै नमः।
६४ ॐ घनायै नमः।
६५ ॐ शुभ्रायै नमः।
६६ ॐ श्वेतायै नमः।
६७ ॐ सौभाग्यदायिन्यै नमः।
६८ ॐ सुन्दर्यै नमः।
६९ ॐ सौभगायै नमः।
७० ॐ सौम्यायै नमः।
७१ ॐ स्वर्णभायै नमः।
७२ ॐ स्वर्गतिप्रदायै नमः।
७३ ॐ रिपुत्रासकर्यै नमः।
७४ ॐ रेखायै नमः।
७५ ॐ शत्रुसंहारकारिण्यै नमः।
७६ ॐ भामिन्यै नमः।
७७ ॐ मायायै नमः।
७८ ॐ स्तम्भिन्यै नमः।
७९ ॐ मोहिन्यै नमः।
८० ॐ शुभायै नमः।
८१ ॐ रागद्वेषकर्यै नमः।
८२ ॐ रात्र्यै नमः।
८३ ॐ रौरवध्वंसकारिण्यै नमः।
८४ ॐ यक्षिण्यै नमः।
८५ ॐ सिद्धनिवहायै नमः।
८६ ॐ सिद्धेशायै नमः।
८७ ॐ सिद्धिरूपिण्यै नमः।
८८ ॐ लङ्कापतिध्वंसकर्यै नमः।
८९ ॐ लङ्केशरिपुवन्दितायै नमः।
९० ॐ लङ्कानाथकुलहरायै नमः।
९१ ॐ महारावणहारिण्यै नमः।
९२ ॐ देवदानवसिद्धौघ-
पूजितायै नमः।
९३ ॐ परमेश्वर्यै नमः।
९४ ॐ पराणुरूपायै नमः।
९५ ॐ परमायै नमः।
९६ ॐ परतन्त्रविनाशिन्यै नमः।
९७ ॐ वरदायै नमः।
९८ ॐ वरदाराध्यायै नमः।
९९ ॐ वरदानपरायणायै नमः।
१०० ॐ वरदेशप्रियायै नमः।
१०१ ॐ वीरायै नमः।
१०२ ॐ वीरभूषणभूषितायै नमः।
१०३ ॐ वसुदायै नमः।
१०४ ॐ बहुदायै नमः।
१०५ ॐ वाण्यै नमः।
१०६ ॐ ब्रह्मरूपायै नमः।
१०७ ॐ वराननायै नमः।
१०८ ॐ बलदायै नमः।
१०९ ॐ पीतवसनायै नमः।
११० ॐ पीतभूषणभूषितायै नमः।
१११ ॐ पीतपुष्पप्रियायै नमः।
११२ ॐ पीतहारायै नमः।
११३ ॐ पीतस्वरूपिण्यै नमः।

*॥ इति विष्णुयामले नारदविष्णुसंवादे श्रीबगलाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीमातङ्ग्यै नमः ॥

# श्रीमातङ्गी-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम्॥*

*विनियोग*

*ॐ अस्य श्रीमातङ्गीशतनाम्नां भगवान् मतङ्ग ऋषिरनुष्टुप्छन्दो मातङ्गी देवता मातङ्गीप्रीतये जपे विनियोगः।*

*श्रीभैरव्युवाच*

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि मातङ्ग्याः शतनामकम्।
यद् गुह्यं सर्वतन्त्रेषु केनापि न प्रकाशितम्॥ १॥

*श्रीभैरव उवाच*

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यातिरहस्यकम्।
नाख्येयं यत्र कुत्रापि पठनीयं परात्परम्॥ २॥
यस्यैकवारपठनात्सर्वे विघ्ना उपद्रवाः।
नश्यन्ति तत्क्षणाद्देवि वह्निना तूलराशिवत्॥ ३॥
प्रसन्ना जायते देवी मातङ्गी चास्य पाठतः।
सहस्रनामपठने यत्फलं परिकीर्तितम्।
तत्कोटिगुणितं देवीनामाष्टशतकं शुभम्॥ ४॥

---

* मैं मातंगीदेवीका ध्यान करता हूँ। वे रत्नमय सिंहासनपर बैठकर पढ़ते हुए तोतेका मधुर शब्द सुन रही हैं। उनके शरीरका वर्ण श्याम है। वे अपना एक पैर कमलपर रखे हुए हैं और मस्तकपर अर्धचन्द्र धारण करती हैं तथा कह्लार पुष्पोंकी माला धारण किये वीणा बजाती हैं। उनके अंगमें कसी हुई चोली शोभा पा रही है। वे लाल रंगकी साड़ी पहने हाथमें शंखमय पात्र लिये हुए हैं। उनके वदनपर मधुका हलका-हलका प्रभाव जान पड़ता है और ललाटमें बेंदी शोभा दे रही है।

स्तोत्र

महामत्तमातङ्गिनी सिद्धिरूपा
तथा योगिनी भद्रकाली रमा च।
भवानी भयप्रीतिदा भूतियुक्ता
भवाराधिता भूतिसम्पत्करी च॥ १॥
जनाधीशमाता धनागारदृष्टि-
र्धनेशार्चिता धीरवापी वराङ्गी।
प्रकृष्टा प्रभारूपिणी कामरूपा
प्रहृष्टा महाकीर्तिदा कर्णनाली॥ २॥
काली भगा घोररूपा भगाङ्गी
भगाह्वा भगप्रीतिदा भीमरूपा।
भवानी महाकौशिकी कोशपूर्णा
किशोरी किशोरप्रिया नन्दईहा॥ ३॥
महाकारणाकारणा कर्मशीला
कपाली प्रसिद्धा महासिद्धखण्डा।
मकारप्रिया मानरूपा महेशी
महोल्लासिनी लास्यलीलालयाङ्गी॥ ४॥
क्षमा क्षेमशीला क्षपाकारिणी चा-
क्षयप्रीतिदा भूतियुक्ता भवानी।
भवाराधिता भूतिसत्यात्मिका च
प्रभोद्भासिता भानुभास्वत्करा च॥ ५॥
धराधीशमाता धनागारदृष्टि-
र्धनेशार्चिता धीवरा धीवराङ्गी।

प्रकृष्टा प्रभारूपिणी प्राणरूपा
प्रकृष्टस्वरूपा स्वरूपप्रिया च॥ ६ ॥
चलत्कुण्डला कामिनी कान्तयुक्ता
कपालाचला कालकोद्धारिणी च।
कदम्बप्रिया कोटरी कोटदेहा
क्रमा कीर्तिदा कर्णरूपा च काक्ष्मी॥ ७ ॥
क्षमाङ्गी क्षयप्रेमरूपा क्षपा च
क्षयाक्षा क्षयाह्वा क्षयप्रान्तरा च।
क्षवत्कामिनी क्षारिणी क्षीरपूषा
शिवाङ्गी च शाकम्भरी शाकदेहा॥ ८ ॥
महाशाकयज्ञा फलप्राशका च
शकाह्वाशकाह्वा शकाख्याशका च।
शकाक्षान्तरोषा सुरोषा सुरेखा
महाशेषयज्ञोपवीतप्रिया च॥ ९ ॥
जयन्ती जया जाग्रती योग्यरूपा
जयाङ्गा जपध्यानसन्तुष्टसंज्ञा।
जयप्राणरूपा जयस्वर्णदेहा
जयज्वालिनी यामिनी याम्यरूपा ॥१०॥
जगन्मातृरूपा जगद्रक्षणा च
स्वधावौषडन्ता विलम्बाविलम्बा।
षडङ्गा महालम्बरूपासिहस्ता
पदाहारिणी हारिणी हारिणी च॥११॥

महामङ्गला मङ्गलप्रेमकीर्ति-
निशुम्भक्षिदा शुम्भदर्पत्वहा च।
तथानन्दबीजादिमुक्तस्वरूपा
तथा चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डा॥ १२॥
प्रचण्डाप्रचण्डा महाचण्डवेगा
चलच्चामरा चामरा चन्द्रकीर्तिः।
सुचामीकरा चित्रभूषोज्ज्वलाङ्गी
सुसङ्गीतगीतं च पायादपायात्॥ १३॥
इति ते कथितं देवि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
गोप्यं च सर्वतन्त्रेषु गोपनीयं च सर्वदा॥ १४॥
एतस्य सतताभ्यासात्साक्षाद्देवो महेश्वरः।
त्रिसन्ध्यं च महाभक्त्या पठनीयं सुखोदयम्॥ १५॥
न तस्य दुष्करं किञ्चिज्जायते स्पर्शतः क्षणात्।
स्वकृतं यत्तदेवाप्तं तस्मादावर्तयेत्सदा॥ १६॥
सदैव सन्निधौ तस्य देवी वसति सादरम्।
अयोगा ये तव एवाग्रे सुयोगाश्च भवन्ति वै॥ १७॥
त एव मित्रभूताश्च भवन्ति तत्प्रसादतः।
विषाणि नोपसर्पन्ति व्याधयो न स्पृशन्ति तान्॥ १८॥
लूता विस्फोटकाः सर्वे शमं यान्ति च तत्क्षणात्।
जरापलितनिर्मुक्तः कल्पजीवी भवेन्नरः॥ १९॥
अपि किं बहुनोक्तेन सान्निध्यं फलमाप्नुयात्।
यावन्मया पुरा प्रोक्तं फलं साहस्रनामकम्।
तत्सर्वं लभते मर्त्यो महामायाप्रसादतः॥ २०॥

*॥ इति श्रीरुद्रयामले श्रीमातङ्ग्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीमातङ्ग्यै नमः ॥

# श्रीमातङ्गी-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ महामत्तमातङ्गिन्यै नमः।
२ ॐ सिद्धिरूपायै नमः।
३ ॐ योगिन्यै नमः।
४ ॐ भद्रकाल्यै नमः।
५ ॐ रमायै नमः।
६ ॐ भवान्यै नमः।
७ ॐ भयप्रीतिदायै नमः।
८ ॐ भूतियुक्तायै नमः।
९ ॐ भवाराधितायै नमः।
१० ॐ भूतिसम्पत्कर्यै नमः।
११ ॐ जनाधीशमात्रे नमः।
१२ ॐ धनागारदृष्ट्यै नमः।
१३ ॐ धनेशार्चितायै नमः।
१४ ॐ धीरवाप्यै नमः।
१५ ॐ वराङ्ग्यै नमः।
१६ ॐ प्रकृष्टायै नमः।
१७ ॐ प्रभारूपिण्यै नमः।
१८ ॐ कामरूपायै नमः।
१९ ॐ प्रहृष्टायै नमः।
२० ॐ महाकीर्तिदायै नमः।
२१ ॐ कर्णनाल्यै नमः।
२२ ॐ काल्यै नमः।
२३ ॐ भगायै नमः।
२४ ॐ घोररूपायै नमः।
२५ ॐ भगाङ्ग्यै नमः।
२६ ॐ भगाह्वायै नमः।
२७ ॐ भगप्रीतिदायै नमः।
२८ ॐ भीमरूपायै नमः।
२९ ॐ भवान्यै नमः।
३० ॐ महाकौशिक्यै नमः।
३१ ॐ कोशपूर्णायै नमः।
३२ ॐ किशोर्यै नमः।
३३ ॐ किशोरप्रियायै नमः।
३४ ॐ नन्दईहायै नमः।
३५ ॐ महाकारणायै नमः।
३६ ॐ अकारणायै नमः।
३७ ॐ कर्मशीलायै नमः।
३८ ॐ कपाल्यै नमः।
३९ ॐ प्रसिद्धायै नमः।
४० ॐ महासिद्धखण्डायै नमः।
४१ ॐ मकारप्रियायै नमः।
४२ ॐ मानरूपायै नमः।
४३ ॐ महेश्यै नमः।
४४ ॐ महोल्लासिन्यै नमः।
४५ ॐ लास्यलीलालयाङ्ग्यै नमः।
४६ ॐ क्षमायै नमः।
४७ ॐ क्षेमशीलायै नमः।
४८ ॐ क्षपाकारिण्यै नमः।
४९ ॐ अक्षयप्रीतिदायै नमः।
५० ॐ भूतियुक्तायै नमः।

५१ ॐ भवान्यै नमः।
५२ ॐ भवाराधितायै नमः।
५३ ॐ भूतिसत्यात्मिकायै नमः।
५४ ॐ प्रभोद्भासितायै नमः।
५५ ॐ भानुभास्वत्करायै नमः।
५६ ॐ धराधीशमात्रे नमः।
५७ ॐ धनागारदृष्ट्यै नमः।
५८ ॐ धनेशार्चितायै नमः।
५९ ॐ धीवरायै नमः।
६० ॐ धीवराङ्ग्यै नमः।
६१ ॐ प्रकृष्टायै नमः।
६२ ॐ प्रभारूपिण्यै नमः।
६३ ॐ प्राणरूपायै नमः।
६४ ॐ प्रकृष्टस्वरूपायै नमः।
६५ ॐ स्वरूपप्रियायै नमः।
६६ ॐ चलत्कुण्डलायै नमः।
६७ ॐ कामिन्यै नमः।
६८ ॐ कान्तयुक्तायै नमः।
६९ ॐ कपालायै नमः।
७० ॐ अचलायै नमः।
७१ ॐ कालकोद्धारिण्यै नमः।
७२ ॐ कदम्बप्रियायै नमः।
७३ ॐ कोटर्यै नमः।
७४ ॐ कोटदेहायै नमः।
७५ ॐ क्रमायै नमः।
७६ ॐ कीर्तिदायै नमः।
७७ ॐ कर्णरूपायै नमः।
७८ ॐ काक्ष्म्यै नमः।
७९ ॐ क्षमाङ्ग्यै नमः।
८० ॐ क्षयप्रेमरूपायै नमः।
८१ ॐ क्षपायै नमः।
८२ ॐ क्षयाक्षायै नमः।
८३ ॐ क्षयाह्वायै नमः।
८४ ॐ क्षयप्रान्तरायै नमः।
८५ ॐ क्षवत्कामिन्यै नमः।
८६ ॐ क्षारिण्यै नमः।
८७ ॐ क्षीरपूषायै नमः।
८८ ॐ शिवाङ्ग्यै नमः।
८९ ॐ शाकम्भर्यै नमः।
९० ॐ शाकदेहायै नमः।
९१ ॐ महाशाकयज्ञायै नमः।
९२ ॐ फलप्राशकायै नमः।
९३ ॐ शकाह्वायै नमः।
९४ ॐ अशकाह्वायै नमः।
९५ ॐ शकाख्यायै नमः।
९६ ॐ अशकायै नमः।
९७ ॐ शकाक्षान्तरोषायै नमः।
९८ ॐ सुरोषायै नमः।
९९ ॐ सुरेखायै नमः।
१०० ॐ महाशेषयज्ञोपवीत-
प्रियायै नमः।
१०१ ॐ जयन्त्यै नमः।
१०२ ॐ जयायै नमः।
१०३ ॐ जाग्रत्यै नमः।
१०४ ॐ योग्यरूपायै नमः।
१०५ ॐ जयाङ्गायै नमः।

१०६ ॐ जपध्यानसन्तुष्टसंज्ञायै नमः।
१०७ ॐ जयप्राणरूपायै नमः।
१०८ ॐ जयस्वर्णदेहायै नमः।
१०९ ॐ जयज्वालिन्यै नमः।
११० ॐ यामिन्यै नमः।
१११ ॐ याम्यरूपायै नमः।
११२ ॐ जगन्मातृरूपायै नमः।
११३ ॐ जगद्रक्षणायै नमः।
११४ ॐ स्वधावौषडन्तायै नमः।
११५ ॐ विलम्बाविलम्बायै नमः।
११६ ॐ षडङ्गायै नमः।
११७ ॐ महालम्बरूपायै नमः।
११८ ॐ असिहस्तायै नमः।
११९ ॐ पदाहारिण्यै नमः।
१२० ॐ हारिण्यै नमः।
१२१ ॐ हारिण्यै नमः।
१२२ ॐ महामङ्गलायै नमः।
१२३ ॐ मङ्गलप्रेमकीर्त्यै नमः।
१२४ ॐ निशुम्भक्षिदायै नमः।
१२५ ॐ शुम्भदर्पत्वहायै नमः।
१२६ ॐ आनन्दबीजादिमुक्त-
स्वरूपायै नमः।
१२७ ॐ चण्डमुण्डापदायै नमः।
१२८ ॐ मुख्यचण्डायै नमः।
१२९ ॐ प्रचण्डाप्रचण्डायै नमः।
१३० ॐ महाचण्डवेगायै नमः।
१३१ ॐ चलच्चामरायै नमः।
१३२ ॐ चामरायै नमः।
१३३ ॐ चन्द्रकीर्त्यै नमः।
१३४ ॐ सुचामीकरायै नमः।
१३५ ॐ चित्रभूषोज्ज्वलाङ्ग्यै
नमः।

*॥ इति श्रीरुद्रयामले श्रीमातङ्ग्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीकमलायै नमः ॥

# श्रीकमला-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दशतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥*

*स्तोत्र*

*श्रीशिव उवाच*

शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने।
प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत्॥ १॥
महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी।
महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्दिनी॥ २॥
कालरात्रिः कुहूः पूर्णानन्दाद्या भद्रिका निशा।
जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी॥ ३॥
शचीन्द्राणी शक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा।
महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही॥ ४॥
वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षःस्थलस्थिता।
विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाभयदा शिवा॥ ५॥
शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शङ्खधारिणी।
गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया॥ ६॥
पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णुप्रियङ्करी।
गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता॥ ७॥

---

* मैं कमलके आसनपर बैठी हुई प्रसन्न मुखवाली महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मीका भजन करता हूँ, जो अपने हाथोंमें अक्षमाला, फरसा, गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

गया गङ्गा च यमुना गोमती गरुडासना।
गण्डकी सरयू तापी रेवा चैव पयस्विनी॥ ८ ॥
नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी।
किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता॥ ९ ॥
ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी वेदपूजिता।
कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी॥ १० ॥
श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा।
इन्दिरा सिन्धुतनया मातङ्गी लोकमातृका॥ ११ ॥
त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी।
तरुणी च तमोहन्त्री मङ्गला मङ्गलायना॥ १२ ॥
मधुकैटभमथनी शुम्भासुरविनाशिनी।
निशुम्भादिहरा माता हरिशङ्करपूजिता॥ १३ ॥
सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी।
शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी॥ १४ ॥
गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा।
त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता॥ १५ ॥
चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता।
चन्द्रा शशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा॥ १६ ॥
सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी।
इति ते कथितं देवि रमानामशताष्टकम्॥ १७ ॥
त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः।
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोत्यसंशयः॥ १८ ॥
इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो वैकुण्ठपत्न्याः परमादरेण।
धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात् प्रयास्यति श्रीपदमन्तकाले॥ १९ ॥

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीकमलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीकमलायै नमः ॥

# श्रीकमला-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ महामायायै नमः ।
२ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
३ ॐ महावाण्यै नमः ।
४ ॐ महेश्वर्यै नमः ।
५ ॐ महादेव्यै नमः ।
६ ॐ महारात्र्यै नमः ।
७ ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः ।
८ ॐ कालरात्र्यै नमः ।
९ ॐ कुह्वै नमः ।
१० ॐ पूर्णायै नमः ।
११ ॐ आनन्दायै नमः ।
१२ ॐ आद्यायै नमः ।
१३ ॐ भद्रिकायै नमः ।
१४ ॐ निशायै नमः ।
१५ ॐ जयायै नमः ।
१६ ॐ रिक्तायै नमः ।
१७ ॐ महाशक्त्यै नमः ।
१८ ॐ देवमात्रे नमः ।
१९ ॐ कृशोदर्यै नमः ।
२० ॐ शच्यै नमः ।
२१ ॐ इन्द्राण्यै नमः ।
२२ ॐ शक्रनुतायै नमः ।
२३ ॐ शङ्करप्रियवल्लभायै नमः ।
२४ ॐ महावराहजनन्यै नमः ।
२५ ॐ मदनोन्मथिन्यै नमः ।
२६ ॐ मह्यै नमः ।
२७ ॐ वैकुण्ठनाथरमण्यै नमः ।
२८ ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः ।
२९ ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ।
३० ॐ विश्वमात्रे नमः ।
३१ ॐ वरदायै नमः ।
३२ ॐ अभयदायै नमः ।
३३ ॐ शिवायै नमः ।
३४ ॐ शूलिन्यै नमः ।
३५ ॐ चक्रिण्यै नमः ।
३६ ॐ मायै नमः ।
३७ ॐ पाशिन्यै नमः ।
३८ ॐ शङ्खधारिण्यै नमः ।
३९ ॐ गदिन्यै नमः ।
४० ॐ मुण्डमालायै नमः ।
४१ ॐ कमलायै नमः ।
४२ ॐ करुणालयायै नमः ।
४३ ॐ पद्माक्षधारिण्यै नमः ।
४४ ॐ अम्बायै नमः ।
४५ ॐ महाविष्णुप्रियङ्कर्यै नमः ।
४६ ॐ गोलोकनाथरमण्यै नमः ।
४७ ॐ गोलोकेश्वरपूजितायै नमः ।
४८ ॐ गयायै नमः ।
४९ ॐ गङ्गायै नमः ।
५० ॐ यमुनायै नमः ।
५१ ॐ गोमत्यै नमः ।
५२ ॐ गरुडासनायै नमः ।

५३ ॐ गण्डक्यै नमः।
५४ ॐ सरय्वै नमः।
५५ ॐ ताप्यै नमः।
५६ ॐ रेवायै नमः।
५७ ॐ पयस्विन्यै नमः।
५८ ॐ नर्मदायै नमः।
५९ ॐ कावेर्यै नमः।
६० ॐ केदारस्थलवासिन्यै नमः।
६१ ॐ किशोर्यै नमः।
६२ ॐ केशवनुतायै नमः।
६३ ॐ महेन्द्रपरिवन्दितायै नमः।
६४ ॐ ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिण्यै नमः।
६५ ॐ वेदपूजितायै नमः।
६६ ॐ कोटिब्रह्माण्डमध्यस्थायै नमः।
६७ ॐ कोटिब्रह्माण्डकारिण्यै नमः।
६८ ॐ श्रुतिरूपायै नमः।
६९ ॐ श्रुतिकर्यै नमः।
७० ॐ श्रुतिस्मृतिपरायणायै नमः।
७१ ॐ इन्दिरायै नमः।
७२ ॐ सिन्धुतनयायै नमः।
७३ ॐ मातङ्ग्यै नमः।
७४ ॐ लोकमातृकायै नमः।
७५ ॐ त्रिलोकजनन्यै नमः।
७६ ॐ तन्त्रायै नमः।
७७ ॐ तन्त्रमन्त्रस्वरूपिण्यै नमः।
७८ ॐ तरुण्यै नमः।
७९ ॐ तमोहन्त्र्यै नमः।
८० ॐ मङ्गलायै नमः।
८१ ॐ मङ्गलायनायै नमः।
८२ ॐ मधुकैटभमथन्यै नमः।
८३ ॐ शुम्भासुरविनाशिन्यै नमः।
८४ ॐ निशुम्भादिहरायै नमः।
८५ ॐ मात्रे नमः।
८६ ॐ हरिशङ्करपूजितायै नमः।
८७ ॐ सर्वदेवमय्यै नमः।
८८ ॐ सर्वायै नमः।
८९ ॐ शरणागतपालिन्यै नमः।
९० ॐ शरण्यायै नमः।
९१ ॐ शम्भुवनितायै नमः।
९२ ॐ सिन्धुतीरनिवासिन्यै नमः।
९३ ॐ गन्धर्वगानरसिकायै नमः।
९४ ॐ गीतायै नमः।
९५ ॐ गोविन्दवल्लभायै नमः।
९६ ॐ त्रैलोक्यपालिन्यै नमः।
९७ ॐ तत्त्वरूपायै नमः।
९८ ॐ तारुण्यपूरितायै नमः।
९९ ॐ चन्द्रावल्यै नमः।
१०० ॐ चन्द्रमुख्यै नमः।
१०१ ॐ चन्द्रिकायै नमः।
१०२ ॐ चन्द्रपूजितायै नमः।
१०३ ॐ चन्द्रायै नमः।
१०४ ॐ शशाङ्कभगिन्यै नमः।
१०५ ॐ गीतवाद्यपरायणायै नमः।
१०६ ॐ सृष्टिरूपायै नमः।
१०७ ॐ सृष्टिकर्यै नमः।
१०८ ॐ सृष्टिसंहारकारिण्यै नमः।

*॥ इति शाक्तप्रमोदे श्रीकमलाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

# श्रीदुर्गा-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥*

*स्तोत्र*

*ईश्वर उवाच*

**शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने।**
**यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती॥ १॥**
**ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी।**
**आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी॥ २॥**
**पिनाकधारिणी चित्रा चण्डघण्टा महातपाः।**
**मनो बुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिता चितिः॥ ३॥**
**सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी।**
**अनन्ता भाविनी भाव्या भव्याभव्या सदागतिः॥ ४॥**
**शाम्भवी देवमाता च चिन्ता रत्नप्रिया सदा।**
**सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी॥ ५॥**

---

* मैं तीन नेत्रोंवाली दुर्गादेवीका ध्यान करता हूँ, उनके श्रीअंगोंकी प्रभा बिजलीके समान है। वे सिंहके कन्धेपर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती हैं। हाथोंमें तलवार और ढाल लिये अनेक कन्याएँ उनकी सेवामें खड़ी हैं। वे अपने हाथोंमें चक्र, गदा, तलवार, ढाल, बाण, धनुष, पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुए हैं। उनका स्वरूप अग्निमय है तथा वे माथेपर चन्द्रमाका मुकुट धारण करती हैं।

अपर्णानेकवर्णा च पाटला पाटलावती।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी॥ ६ ॥
अमेयविक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी।
वनदुर्गा च मातङ्गी मतङ्गमुनिपूजिता॥ ७ ॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः॥ ८ ॥
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा।
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहनवाहना॥ ९ ॥
निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी।
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी॥ १० ॥
सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवघातिनी।
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा॥ ११ ॥
अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी।
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः॥ १२ ॥
अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला॥ १३ ॥
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी।
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी॥ १४ ॥
शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी॥ १५ ॥

य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति॥ १६॥
धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्॥ १७॥
कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम्॥ १८॥
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि सर्वैः सुरवरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात्॥ १९॥
गोरोचनालक्तककुङ्कुमेन
सिन्दूरकर्पूरमधुत्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धारयते पुरारिः॥ २०॥
भौमावास्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठेत् स्तोत्रं स भवेत् सम्पदां पदम्॥ २१॥

*॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

# श्रीदुर्गा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ सत्यै नमः।
२ ॐ साध्व्यै नमः।
३ ॐ भवप्रीतायै नमः।
४ ॐ भवान्यै नमः।
५ ॐ भवमोचन्यै नमः।
६ ॐ आर्यायै नमः।
७ ॐ दुर्गायै नमः।
८ ॐ जयायै नमः।
९ ॐ आद्यायै नमः।
१० ॐ त्रिनेत्रायै नमः।
११ ॐ शूलधारिण्यै नमः।
१२ ॐ पिनाकधारिण्यै नमः।
१३ ॐ चित्रायै नमः।
१४ ॐ चण्डघण्टायै नमः।
१५ ॐ महातपसे नमः।
१६ ॐ मनसे नमः।
१७ ॐ बुद्ध्यै नमः।
१८ ॐ अहङ्कारायै नमः।
१९ ॐ चित्तरूपायै नमः।
२० ॐ चितायै नमः।
२१ ॐ चित्यै नमः।
२२ ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः।
२३ ॐ सत्तायै नमः।
२४ ॐ सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः।
२५ ॐ अनन्तायै नमः।
२६ ॐ भाविन्यै नमः।
२७ ॐ भाव्यायै नमः।
२८ ॐ भव्यायै नमः।
२९ ॐ अभव्यायै नमः।
३० ॐ सदागत्यै नमः।
३१ ॐ शाम्भव्यै नमः।
३२ ॐ देवमात्रे नमः।
३३ ॐ चिन्तायै नमः।
३४ ॐ रत्नप्रियायै नमः।
३५ ॐ सर्वविद्यायै नमः।
३६ ॐ दक्षकन्यायै नमः।
३७ ॐ दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः।
३८ ॐ अपर्णायै नमः।
३९ ॐ अनेकवर्णायै नमः।
४० ॐ पाटलायै नमः।
४१ ॐ पाटलावत्यै नमः।
४२ ॐ पट्टाम्बरपरीधानायै नमः।
४३ ॐ कलमञ्जीररञ्जिन्यै नमः।
४४ ॐ अमेयविक्रमायै नमः।
४५ ॐ क्रूरायै नमः।
४६ ॐ सुन्दर्यै नमः।
४७ ॐ सुरसुन्दर्यै नमः।
४८ ॐ वनदुर्गायै नमः।
४९ ॐ मातङ्ग्यै नमः।
५० ॐ मतङ्गमुनिपूजितायै नमः।
५१ ॐ ब्राह्म्यै नमः।
५२ ॐ माहेश्वर्यै नमः।

५३ ॐ ऐन्द्र्यै नमः।
५४ ॐ कौमार्यै नमः।
५५ ॐ वैष्णव्यै नमः।
५६ ॐ चामुण्डायै नमः।
५७ ॐ वाराह्यै नमः।
५८ ॐ लक्ष्म्यै नमः।
५९ ॐ पुरुषाकृत्यै नमः।
६० ॐ विमलायै नमः।
६१ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः।
६२ ॐ ज्ञानायै नमः।
६३ ॐ क्रियायै नमः।
६४ ॐ नित्यायै नमः।
६५ ॐ बुद्धिदायै नमः।
६६ ॐ बहुलायै नमः।
६७ ॐ बहुलप्रेमायै नमः।
६८ ॐ सर्ववाहनवाहनायै नमः।
६९ ॐ निशुम्भशुम्भहनन्यै नमः।
७० ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः।
७१ ॐ मधुकैटभहन्त्र्यै नमः।
७२ ॐ चण्डमुण्डविनाशिन्यै नमः।
७३ ॐ सर्वासुरविनाशायै नमः।
७४ ॐ सर्वदानवघातिन्यै नमः।
७५ ॐ सर्वशास्त्रमय्यै नमः।
७६ ॐ सत्यायै नमः।
७७ ॐ सर्वास्त्रधारिण्यै नमः।
७८ ॐ अनेकशस्त्रहस्तायै नमः।
७९ ॐ अनेकास्त्रधारिण्यै नमः।
८० ॐ कुमार्यै नमः।
८१ ॐ एककन्यायै नमः।
८२ ॐ कैशोर्यै नमः।
८३ ॐ युवत्यै नमः।
८४ ॐ यत्यै नमः।
८५ ॐ अप्रौढायै नमः।
८६ ॐ प्रौढायै नमः।
८७ ॐ वृद्धमात्रे नमः।
८८ ॐ बलप्रदायै नमः।
८९ ॐ महोदर्यै नमः।
९० ॐ मुक्तकेश्यै नमः।
९१ ॐ घोररूपायै नमः।
९२ ॐ महाबलायै नमः।
९३ ॐ अग्निज्वालायै नमः।
९४ ॐ रौद्रमुख्यै नमः।
९५ ॐ कालरात्र्यै नमः।
९६ ॐ तपस्विन्यै नमः।
९७ ॐ नारायण्यै नमः।
९८ ॐ भद्रकाल्यै नमः।
९९ ॐ विष्णुमायायै नमः।
१०० ॐ जलोदर्यै नमः।
१०१ ॐ शिवदूत्यै नमः।
१०२ ॐ कराल्यै नमः।
१०३ ॐ अनन्तायै नमः।
१०४ ॐ परमेश्वर्यै नमः।
१०५ ॐ कात्यायन्यै नमः।
१०६ ॐ सावित्र्यै नमः।
१०७ ॐ प्रत्यक्षायै नमः।
१०८ ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः।

*॥ इति श्रीविश्वसारतन्त्रे श्रीदुर्गाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

# श्रीसरस्वती-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥*

*स्तोत्र*

**सरस्वती महाभद्रा महामाया वरप्रदा।**
**श्रीप्रदा पद्मनिलया पद्माक्षी पद्मवक्त्रका॥ १॥**
**शिवानुजा पुस्तकभृत् ज्ञानमुद्रा रमा परा।**
**कामरूपा महाविद्या महापातकनाशिनी॥ २॥**
**महाश्रया मालिनी च महाभोगा महाभुजा।**
**महाभागा महोत्साहा दिव्याङ्गा सुरवन्दिता॥ ३॥**
**महाकाली महापाशा महाकारा महाङ्कुशा।**
**पीता च विमला विश्वा विद्युन्माला च वैष्णवी॥ ४॥**
**चन्द्रिका चन्द्रवदना चन्द्रलेखाविभूषिता।**
**सावित्री सुरसा देवी दिव्यालङ्कारभूषिता॥ ५॥**
**वाग्देवी वसुदा तीव्रा महाभद्रा महाबला।**
**भोगदा भारती भामा गोविन्दा गोमती शिवा॥ ६॥**

---

* जो कुन्दके फूल, चन्द्रमा, बर्फ और हारके समान श्वेत हैं, जो शुभ्र कपड़े पहनती हैं, जिनके हाथ उत्तम वीणासे सुशोभित हैं, जो श्वेत कमलासनपर बैठती हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देव जिनकी सदा स्तुति करते हैं और जो सब प्रकारकी जड़ता हर लेती हैं, वे भगवती सरस्वती मेरा पालन करें।

जटिला विन्ध्यवासा च विन्ध्याचलविराजिता।
चण्डिका वैष्णवी ब्राह्मी ब्रह्मज्ञानैकसाधना॥ ७ ॥
सौदामिनी सुधामूर्तिः सुभद्रा सुरपूजिता।
सुवासिनी सुनासा च विनिद्रा पद्मलोचना॥ ८ ॥
विद्यारूपा विशालाक्षी ब्रह्मजाया महाफला।
त्रयीमूर्तिः त्रिकालज्ञा त्रिगुणा शास्त्ररूपिणी॥ ९ ॥
शुम्भासुरप्रमथिनी शुभदा च स्वरात्मिका।
रक्तबीजनिहन्त्री च चामुण्डा चाम्बिका तथा॥ १० ॥
मुण्डकायप्रहरणा धूम्रलोचनमर्दना।
सर्वदेवस्तुता सौम्या सुरासुरनमस्कृता॥ ११ ॥
कालरात्रिः कलाधारा रूपसौभाग्यदायिनी।
वाग्देवी च वरारोहा वाराही वारिजासना॥ १२ ॥
चित्राम्बरा चित्रगन्धा चित्रमाल्यविभूषिता।
कान्ता कामप्रदा वन्द्या विद्याधरसुपूजिता॥ १३ ॥
श्वेतानना नीलभुजा चतुर्वर्गफलप्रदा।
चतुराननसाम्राज्या रक्तमध्या निरञ्जना॥ १४ ॥
हंसासना नीलजङ्घा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका।
एवं सरस्वतीदेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १५ ॥

*॥ इति श्रीसरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

# श्रीसरस्वती-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ सरस्वत्यै नमः।
२ ॐ महाभद्रायै नमः।
३ ॐ महामायायै नमः।
४ ॐ वरप्रदायै नमः।
५ ॐ श्रीप्रदायै नमः।
६ ॐ पद्मनिलयायै नमः।
७ ॐ पद्माक्ष्यै नमः।
८ ॐ पद्मवक्त्रकायै नमः।
९ ॐ शिवानुजायै नमः।
१० ॐ पुस्तकभृते नमः।
११ ॐ ज्ञानमुद्रायै नमः।
१२ ॐ रमायै नमः।
१३ ॐ परायै नमः।
१४ ॐ कामरूपायै नमः।
१५ ॐ महाविद्यायै नमः।
१६ ॐ महापातकनाशिन्यै नमः।
१७ ॐ महाश्रयायै नमः।
१८ ॐ मालिन्यै नमः।
१९ ॐ महाभोगायै नमः।
२० ॐ महाभुजायै नमः।
२१ ॐ महाभागायै नमः।
२२ ॐ महोत्साहायै नमः।
२३ ॐ दिव्याङ्गायै नमः।
२४ ॐ सुरवन्दितायै नमः।
२५ ॐ महाकाल्यै नमः।
२६ ॐ महापाशायै नमः।
२७ ॐ महाकारायै नमः।
२८ ॐ महाङ्कुशायै नमः।
२९ ॐ पीतायै नमः।
३० ॐ विमलायै नमः।
३१ ॐ विश्वायै नमः।
३२ ॐ विद्युन्मालायै नमः।
३३ ॐ वैष्णव्यै नमः।
३४ ॐ चन्द्रिकायै नमः।
३५ ॐ चन्द्रवदनायै नमः।
३६ ॐ चन्द्रलेखाविभूषितायै नमः।
३७ ॐ सावित्र्यै नमः।
३८ ॐ सुरसायै नमः।
३९ ॐ देव्यै नमः।
४० ॐ दिव्यालङ्कारभूषितायै नमः।
४१ ॐ वाग्देव्यै नमः।
४२ ॐ वसुधायै नमः।
४३ ॐ तीव्रायै नमः।
४४ ॐ महाभद्रायै नमः।
४५ ॐ महाबलायै नमः।
४६ ॐ भोगदायै नमः।
४७ ॐ भारत्यै नमः।
४८ ॐ भामायै नमः।
४९ ॐ गोविन्दायै नमः।
५० ॐ गोमत्यै नमः।
५१ ॐ शिवायै नमः।
५२ ॐ जटिलायै नमः।

५३ ॐ विन्ध्यवासायै नमः।
५४ ॐ विन्ध्याचलविराजितायै नमः।
५५ ॐ चण्डिकायै नमः।
५६ ॐ वैष्णव्यै नमः।
५७ ॐ ब्राह्मयै नमः।
५८ ॐ ब्रह्मज्ञानैकसाधनायै नमः।
५९ ॐ सौदामिन्यै नमः।
६० ॐ सुधामूर्त्यै नमः।
६१ ॐ सुभद्रायै नमः।
६२ ॐ सुरपूजितायै नमः।
६३ ॐ सुवासिन्यै नमः।
६४ ॐ सुनासायै नमः।
६५ ॐ विनिद्रायै नमः।
६६ ॐ पद्मलोचनायै नमः।
६७ ॐ विद्यारूपायै नमः।
६८ ॐ विशालाक्ष्यै नमः।
६९ ॐ ब्रह्मजायायै नमः।
७० ॐ महाफलायै नमः।
७१ ॐ त्रयीमूर्त्यै नमः।
७२ ॐ त्रिकालज्ञायै नमः।
७३ ॐ त्रिगुणायै नमः।
७४ ॐ शास्त्ररूपिण्यै नमः।
७५ ॐ शुम्भासुरप्रमथिन्यै नमः।
७६ ॐ शुभदायै नमः।
७७ ॐ स्वरात्मिकायै नमः।
७८ ॐ रक्तबीजनिहन्त्र्यै नमः।
७९ ॐ चामुण्डायै नमः।
८० ॐ अम्बिकायै नमः।
८१ ॐ मुण्डकायप्रहरणायै नमः।
८२ ॐ धूम्रलोचनमर्दनायै नमः।
८३ ॐ सर्वदेवस्तुतायै नमः।
८४ ॐ सौम्यायै नमः।
८५ ॐ सुरासुरनमस्कृतायै नमः।
८६ ॐ कालरात्र्यै नमः।
८७ ॐ कलाधारायै नमः।
८८ ॐ रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः।
८९ ॐ वाग्देव्यै नमः।
९० ॐ वरारोहायै नमः।
९१ ॐ वाराह्यै नमः।
९२ ॐ वारिजासनायै नमः।
९३ ॐ चित्राम्बरायै नमः।
९४ ॐ चित्रगन्धायै नमः।
९५ ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै नमः।
९६ ॐ कान्तायै नमः।
९७ ॐ कामप्रदायै नमः।
९८ ॐ वन्द्यायै नमः।
९९ ॐ विद्याधरसुपूजितायै नमः।
१०० ॐ श्वेताननायै नमः।
१०१ ॐ नीलभुजायै नमः।
१०२ ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः।
१०३ ॐ चतुराननसाम्राज्यायै नमः।
१०४ ॐ रक्तमध्यायै नमः।
१०५ ॐ निरञ्जनायै नमः।
१०६ ॐ हंसासनायै नमः।
१०७ ॐ नीलजङ्घायै नमः।
१०८ ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः।

*॥ इति श्रीसरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीअन्नपूर्णायै नमः ॥

# श्रीअन्नपूर्णा-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*विनियोग*

*अस्य श्रीअन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीअन्नपूर्णेत्यधिदेवता, स्वधा बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ओं कीलकम्, मम सर्वाभीष्टप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।*

*ध्यान*

**सिन्दूराभां त्रिनेत्राममृतशशिकलां खेचरीं रक्तवस्त्रां**
**पीनोत्तुङ्गस्तनाढ्यामभिनवविलसद्यौवनारम्भरम्याम्।**
**नानालङ्कारयुक्तां सरसिजनयनामिन्दुसंक्रान्तमूर्तिं**
**देवीं पाशाङ्कुशाढ्यामभयवरकरामन्नपूर्णां नमामि ॥ ***

*स्तोत्र*

**ॐ अन्नपूर्णा शिवा देवी भीमा पुष्टिः सरस्वती।**
**सर्वज्ञा पार्वती दुर्गा शर्वाणी शिववल्लभा ॥ १ ॥**
**वेदविद्या महाविद्या विद्यादात्री विशारदा।**
**कुमारी त्रिपुरा बाला लक्ष्मीश्श्रीर्भयहारिणी ॥ २ ॥**
**भवानी विष्णुजननी ब्रह्मादिजननी तथा।**
**गणेशजननी शक्तिः कुमारजननी शुभा ॥ ३ ॥**
**भोगप्रदा भगवती भक्ताभीष्टप्रदायिनी।**
**भवरोगहरा भव्या शुभ्रा परममङ्गला ॥ ४ ॥**
**भवानी चञ्चला गौरी चारुचन्द्रकलाधरा।**
**विशालाक्षी विश्वमाता विश्ववन्द्या विलासिनी ॥ ५ ॥**

---

* जिनकी अंग-कान्ति सिन्दूर-सरीखी है, जो तीन नेत्रोंसे युक्त, अमृतपूर्ण शशिकला-सदृश, आकाशमें गमन करनेवाली, लाल वस्त्रसे सुशोभित, स्थूल एवं ऊँचे स्तनोंसे युक्त, नवीन उल्लसित यौवनारम्भसे रमणीय तथा विविध अलंकारोंसे युक्त हैं, जिनके नेत्र कमल-सदृश हैं, जिनकी मूर्ति चन्द्रमाको संक्रान्त करनेवाली है, जिनके हाथ पाश, अंकुश, अभय और वरद मुद्रासे सुशोभित हैं, उन अन्नपूर्णादेवीको मैं नमस्कार करता हूँ।

आर्या कल्याणनिलया रुद्राणी कमलासना।
शुभप्रदा शुभावर्ता वृत्तपीनपयोधरा॥ ६ ॥
अम्बा संहारमथनी मृडानी सर्वमङ्गला।
विष्णुसंसेविता सिद्धा ब्रह्माणी सुरसेविता॥ ७ ॥
परमानन्ददा शान्तिः परमानन्दरूपिणी।
परमानन्दजननी परानन्दप्रदायिनी॥ ८ ॥
परोपकारनिरता परमा भक्तवत्सला।
पूर्णचन्द्राभवदना पूर्णचन्द्रनिभांशुका॥ ९ ॥
शुभलक्षणसम्पन्ना शुभानन्दगुणार्णवा।
शुभसौभाग्यनिलया शुभदा च रतिप्रिया॥ १० ॥
चण्डिका चण्डमथनी चण्डदर्पनिवारिणी।
मार्तण्डनयना साध्वी चन्द्राग्निनयना सती॥ ११ ॥
पुण्डरीकहरा पूर्णा पुण्यदा पुण्यरूपिणी।
मायातीता श्रेष्ठमाया श्रेष्ठधर्मात्मवन्दिता॥ १२ ॥
असृष्टिः सङ्गरहिता सृष्टिहेतुः कपर्दिनी।
वृषारूढा शूलहस्ता स्थितिसंहारकारिणी॥ १३ ॥
मन्दस्मिता स्कन्दमाता शुद्धचित्ता मुनिस्तुता।
महाभगवती दक्षा दक्षाध्वरविनाशिनी॥ १४ ॥
सर्वार्थदात्री सावित्री सदाशिवकुटुम्बिनी।
नित्यसुन्दरसर्वाङ्गी सच्चिदानन्दलक्षणा॥ १५ ॥
नाम्नामष्टोत्तरशतमम्बायाः पुण्यकारणम्।
सर्वसौभाग्यसिद्ध्यर्थं जपनीयं प्रयत्नतः॥ १६ ॥
एतानि दिव्यनामानि श्रुत्वा ध्यात्वा निरन्तरम्।
स्तुत्वा देवीं च सततं सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥ १७ ॥

*॥ इति श्रीशिवरहस्ये श्रीअन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीअन्नपूर्णायै नमः ॥

# श्रीअन्नपूर्णा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ अन्नपूर्णायै नमः।
२ ॐ शिवायै नमः।
३ ॐ देव्यै नमः।
४ ॐ भीमायै नमः।
५ ॐ पुष्ट्यै नमः।
६ ॐ सरस्वत्यै नमः।
७ ॐ सर्वज्ञायै नमः।
८ ॐ पार्वत्यै नमः।
९ ॐ दुर्गायै नमः।
१० ॐ शर्वाण्यै नमः।
११ ॐ शिववल्लभायै नमः।
१२ ॐ वेदविद्यायै नमः।
१३ ॐ महाविद्यायै नमः।
१४ ॐ विद्यादात्र्यै नमः।
१५ ॐ विशारदायै नमः।
१६ ॐ कुमार्यै नमः।
१७ ॐ त्रिपुरायै नमः।
१८ ॐ बालायै नमः।
१९ ॐ लक्ष्म्यै नमः।
२० ॐ श्रियै नमः।
२१ ॐ भयहारिण्यै नमः।
२२ ॐ भवान्यै नमः।
२३ ॐ विष्णुजनन्यै नमः।
२४ ॐ ब्रह्मादिजनन्यै नमः।
२५ ॐ गणेशजनन्यै नमः।
२६ ॐ शक्त्यै नमः।
२७ ॐ कुमारजनन्यै नमः।
२८ ॐ शुभायै नमः।
२९ ॐ भोगप्रदायै नमः।
३० ॐ भगवत्यै नमः।
३१ ॐ भक्ताभीष्टप्रदायिन्यै नमः।
३२ ॐ भवरोगहरायै नमः।
३३ ॐ भव्यायै नमः।
३४ ॐ शुभ्रायै नमः।
३५ ॐ परममङ्गलायै नमः।
३६ ॐ भवान्यै नमः।
३७ ॐ चञ्चलायै नमः।
३८ ॐ गौर्यै नमः।
३९ ॐ चारुचन्द्रकलाधरायै नमः।
४० ॐ विशालाक्ष्यै नमः।
४१ ॐ विश्वमात्रे नमः।
४२ ॐ विश्ववन्द्यायै नमः।
४३ ॐ विलासिन्यै नमः।
४४ ॐ आर्यायै नमः।
४५ ॐ कल्याणनिलयायै नमः।
४६ ॐ रुद्राण्यै नमः।
४७ ॐ कमलासनायै नमः।
४८ ॐ शुभप्रदायै नमः।
४९ ॐ शुभावर्तायै नमः।
५० ॐ वृत्तपीनपयोधरायै नमः।
५१ ॐ अम्बायै नमः।
५२ ॐ संहारमथन्यै नमः।

५३ ॐ मृडान्यै नमः।
५४ ॐ सर्वमङ्गलायै नमः।
५५ ॐ विष्णुसंसेवितायै नमः।
५६ ॐ सिद्धायै नमः।
५७ ॐ ब्रह्माण्यै नमः।
५८ ॐ सुरसेवितायै नमः।
५९ ॐ परमानन्ददायै नमः।
६० ॐ शान्त्यै नमः।
६१ ॐ परमानन्दरूपिण्यै नमः।
६२ ॐ परमानन्दजनन्यै नमः।
६३ ॐ परानन्दप्रदायिन्यै नमः।
६४ ॐ परोपकारनिरतायै नमः।
६५ ॐ परमायै नमः।
६६ ॐ भक्तवत्सलायै नमः।
६७ ॐ पूर्णचन्द्राभवदनायै नमः।
६८ ॐ पूर्णचन्द्रनिभांशुकायै नमः।
६९ ॐ शुभलक्षणसम्पन्नायै नमः।
७० ॐ शुभानन्दगुणार्णवायै नमः।
७१ ॐ शुभसौभाग्यनिलयायै नमः।
७२ ॐ शुभदायै नमः।
७३ ॐ रतिप्रियायै नमः।
७४ ॐ चण्डिकायै नमः।
७५ ॐ चण्डमथन्यै नमः।
७६ ॐ चण्डदर्पनिवारिण्यै नमः।
७७ ॐ मार्तण्डनयनायै नमः।
७८ ॐ साध्व्यै नमः।
७९ ॐ चन्द्राग्निनयनायै नमः।
८० ॐ सत्यै नमः।
८१ ॐ पुण्डरीकहरायै नमः।
८२ ॐ पूर्णायै नमः।
८३ ॐ पुण्यदायै नमः।
८४ ॐ पुण्यरूपिण्यै नमः।
८५ ॐ मायातीतायै नमः।
८६ ॐ श्रेष्ठमायायै नमः।
८७ ॐ श्रेष्ठधर्मायै नमः।
८८ ॐ आत्मवन्दितायै नमः।
८९ ॐ असृष्ट्यै नमः।
९० ॐ सङ्गरहितायै नमः।
९१ ॐ सृष्टिहेतवे नमः।
९२ ॐ कपर्दिन्यै नमः।
९३ ॐ वृषारूढायै नमः।
९४ ॐ शूलहस्तायै नमः।
९५ ॐ स्थितिकारिण्यै नमः।
९६ ॐ संहारकारिण्यै नमः।
९७ ॐ मन्दस्मितायै नमः।
९८ ॐ स्कन्दमात्रे नमः।
९९ ॐ शुद्धचित्तायै नमः।
१०० ॐ मुनिस्तुतायै नमः।
१०१ ॐ महाभगवत्यै नमः।
१०२ ॐ दक्षायै नमः।
१०३ ॐ दक्षाध्वरविनाशिन्यै नमः।
१०४ ॐ सर्वार्थदात्र्यै नमः।
१०५ ॐ सावित्र्यै नमः।
१०६ ॐ सदाशिवकुटुम्बिन्यै नमः।
१०७ ॐ नित्यसुन्दरसर्वाङ्ग्यै नमः।
१०८ ॐ सच्चिदानन्दलक्षणायै नमः।

*॥ इति श्रीशिवरहस्ये श्रीअन्नपूर्णाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीगङ्गायै नमः ॥

# श्रीगङ्गा-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम्।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥*

*स्तोत्र*

*श्रीनारद उवाच*

गङ्गा नाम परं पुण्यं कथितं परमेश्वर।
नामानि कति शस्तानि गङ्गायाः प्रणिशंस मे॥ १॥

*श्रीमहादेव उवाच*

नाम्नां सहस्रमध्ये तु नामाष्टशतमुत्तमम्।
जाह्नव्या मुनिशार्दूल तानि मे शृणु तत्त्वतः॥ २॥
ॐ गङ्गा त्रिपथगा देवी शम्भुमौलिविहारिणी।
जाह्नवी पापहन्त्री च महापातकनाशिनी॥ ३॥
पतितोद्धारिणी स्रोतस्वती परमवेगिनी।
विष्णुपादाब्जसम्भूता विष्णुदेहकृतालया॥ ४॥
स्वर्गाब्धिनिलया साध्वी स्वर्णदी सुरनिम्नगा।
मन्दाकिनी महावेगा स्वर्णशृङ्गप्रभेदिनी॥ ५॥
देवपूज्यतमा दिव्या दिव्यस्थाननिवासिनी।
सुचारुनीररुचिरा महापर्वतभेदिनी॥ ६॥

---

* श्वेत मकरपर विराजित, शुभ्रवर्णवाली, तीन नेत्रोंवाली, दो हाथोंमें भरे हुए कलश तथा दो हाथोंमें सुन्दर कमल धारण किये हुए, भक्तोंके लिये परम इष्ट; ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश तीनोंका रूप अर्थात् तीनोंके कार्य करनेवाली, मस्तकपर सुशोभित चन्द्रजटित मुकुटवाली तथा सुन्दर श्वेत वस्त्रोंसे विभूषित माँ गंगाको मैं प्रणाम करता हूँ।

भागीरथी भगवती महामोक्षप्रदायिनी।
सिन्धुसङ्गगता शुद्धा रसातलनिवासिनी॥ ७ ॥
महाभोगा भोगवती सुभगानन्ददायिनी।
महापापहरा पुण्या परमाह्लाददायिनी॥ ८ ॥
पार्वती शिवपत्नी च शिवशीर्षगतालया।
शम्भोर्जटामध्यगता निर्मला निर्मलानना॥ ९ ॥
महाकलुषहन्त्री च जह्नुपुत्री जगत्प्रिया।
त्रैलोक्यपावनी पूर्णा पूर्णब्रह्मस्वरूपिणी॥ १० ॥
जगत्पूज्यतमा चारुरूपिणी जगदम्बिका।
लोकानुग्रहकर्त्री च सर्वलोकदयापरा॥ ११ ॥
याम्यभीतिहरा तारा पारा संसारतारिणी।
ब्रह्माण्डभेदिनी ब्रह्मकमण्डलुकृतालया॥ १२ ॥
सौभाग्यदायिनी पुंसां निर्वाणपददायिनी।
अचिन्त्यचरिता चारुरुचिरातिमनोहरा॥ १३ ॥
मर्त्यस्था मृत्युभयहा स्वर्गमोक्षप्रदायिनी।
पापापहारिणी दूरचारिणी वीचिधारिणी॥ १४ ॥
कारुण्यपूर्णा करुणामयी दुरितनाशिनी।
गिरिराजसुता गौरीभगिनी गिरिशप्रिया॥ १५ ॥
मेनकागर्भसम्भूता मैनाकभगिनीप्रिया।
आद्या त्रिलोकजननी त्रैलोक्यपरिपालिनी॥ १६ ॥
तीर्थश्रेष्ठतमा श्रेष्ठा सर्वतीर्थमयी शुभा।
चतुर्वेदमयी सर्वा पितृसंतृप्तिदायिनी॥ १७ ॥
शिवदा शिवसायुज्यदायिनी शिववल्लभा।
तेजस्विनी त्रिनयना त्रिलोचनमनोरमा॥ १८ ॥

सप्तधारा शतमुखी सगरान्वयतारिणी।
मुनिसेव्या मुनिसुता जह्नुजानुप्रभेदिनी॥ १९॥
मकरस्था सर्वगता सर्वाशुभनिवारिणी।
सुदृश्या चाक्षुषीतृप्तिदायिनी मकरालया॥ २०॥
सदानन्दमयी नित्यानन्ददा नगपूजिता।
सर्वदेवाधिदेवैश्च परिपूज्यपदाम्बुजा॥ २१॥
एतानि मुनिशार्दूल नामानि कथितानि ते।
शस्तानि जाह्नवीदेव्याः सर्वपापहराणि च॥ २२॥
य इदं पठते भक्त्या प्रातरुत्थाय नारद।
गङ्गायाः परमं पुण्यं नामाष्टशतमेव हि॥ २३॥
तस्य पापानि नश्यन्ति ब्रह्महत्यादिकान्यपि।
आरोग्यमतुलं सौख्यं लभते नात्र संशयः॥ २४॥
यत्र कुत्रापि संस्नायात्पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम्।
तत्रैव गङ्गास्नानस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम्॥ २५॥
प्रत्यहं प्रपठेदेतद् गङ्गानामशताष्टकम्।
सोऽन्ते गङ्गामनुप्राप्य प्रयाति परमं पदम्॥ २६॥
गङ्गायां स्नानसमये यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
सोऽश्वमेधसहस्राणां फलमाप्नोति मानवः॥ २७॥
गवामयुतदानस्य यत्फलं समुदीरितम्।
तत्फलं समवाप्नोति पञ्चम्यां प्रपठन्नरः॥ २८॥
कार्तिक्यां पौर्णमास्यां तु स्नात्वा सागरसङ्गमे।
यः पठेत्स महेशत्वं याति सत्यं न संशयः॥ २९॥

*॥ इति श्रीमहाभागवते महापुराणे श्रीगङ्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीगङ्गायै नमः ॥

# श्रीगङ्गा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ गङ्गायै नमः ।
२ ॐ त्रिपथगादेव्यै नमः ।
३ ॐ शम्भुमौलिविहारिण्यै नमः ।
४ ॐ जाह्नव्यै नमः ।
५ ॐ पापहन्त्र्यै नमः ।
६ ॐ महापातकनाशिन्यै नमः ।
७ ॐ पतितोद्धारिण्यै नमः ।
८ ॐ स्त्रोतस्वत्यै नमः ।
९ ॐ परमवेगिन्यै नमः ।
१० ॐ विष्णुपादाब्जसम्भूतायै नमः ।
११ ॐ विष्णुदेहकृतालयायै नमः ।
१२ ॐ स्वर्गाब्धिनिलयायै नमः ।
१३ ॐ साध्व्यै नमः ।
१४ ॐ स्वर्णद्यै नमः ।
१५ ॐ सुरनिम्नगायै नमः ।
१६ ॐ मन्दाकिन्यै नमः ।
१७ ॐ महावेगायै नमः ।
१८ ॐ स्वर्णशृङ्गप्रभेदिन्यै नमः ।
१९ ॐ देवपूज्यतमायै नमः ।
२० ॐ दिव्यायै नमः ।
२१ ॐ दिव्यस्थाननिवासिन्यै नमः ।
२२ ॐ सुचारुनीररुचिरायै नमः ।
२३ ॐ महापर्वतभेदिन्यै नमः ।
२४ ॐ भागीरथ्यै नमः ।
२५ ॐ भगवत्यै नमः ।
२६ ॐ महामोक्षप्रदायिन्यै नमः ।
२७ ॐ सिन्धुसङ्गतायै नमः ।
२८ ॐ शुद्धायै नमः ।
२९ ॐ रसातलनिवासिन्यै नमः ।
३० ॐ महाभोगायै नमः ।
३१ ॐ भोगवत्यै नमः ।
३२ ॐ सुभगानन्ददायिन्यै नमः ।
३३ ॐ महापापहरायै नमः ।
३४ ॐ पुण्यायै नमः ।
३५ ॐ परमाह्लाददायिन्यै नमः ।
३६ ॐ पार्वत्यै नमः ।
३७ ॐ शिवपत्न्यै नमः ।
३८ ॐ शिवशीर्षगतालयायै नमः ।
३९ ॐ शम्भोर्जटामध्यगतायै नमः ।
४० ॐ निर्मलायै नमः ।
४१ ॐ निर्मलाननायै नमः ।
४२ ॐ महाकलुषहन्त्र्यै नमः ।
४३ ॐ जह्नुपुत्र्यै नमः ।
४४ ॐ जगत्प्रियायै नमः ।
४५ ॐ त्रैलोक्यपावन्यै नमः ।
४६ ॐ पूर्णायै नमः ।
४७ ॐ पूर्णब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः ।
४८ ॐ जगत्पूज्यतमायै नमः ।
४९ ॐ चारुरूपिण्यै नमः ।
५० ॐ जगदम्बिकायै नमः ।
५१ ॐ लोकानुग्रहकर्त्र्यै नमः ।
५२ ॐ सर्वलोकदयापरायै नमः ।
५३ ॐ याम्यभीतिहरायै नमः ।
५४ ॐ तारायै नमः ।

५५ ॐ पारायै नमः।
५६ ॐ संसारतारिण्यै नमः।
५७ ॐ ब्रह्माण्डभेदिन्यै नमः।
५८ ॐ ब्रह्मकमण्डलुकृता-
लयायै नमः।
५९ ॐ सौभाग्यदायिन्यै नमः।
६० ॐ पुंसां निर्वाणपददायिन्यै नमः।
६१ ॐ अचिन्त्यचरितायै नमः।
६२ ॐ चारुरुचिरातिमनोहरायै नमः।
६३ ॐ मर्त्यस्थायै नमः।
६४ ॐ मृत्युभयहायै नमः।
६५ ॐ स्वर्गमोक्षप्रदायिन्यै नमः।
६६ ॐ पापापहारिण्यै नमः।
६७ ॐ दूरचारिण्यै नमः।
६८ ॐ वीचिधारिण्यै नमः।
६९ ॐ कारुण्यपूर्णायै नमः।
७० ॐ करुणामय्यै नमः।
७१ ॐ दुरितनाशिन्यै नमः।
७२ ॐ गिरिराजसुतायै नमः।
७३ ॐ गौरीभगिन्यै नमः।
७४ ॐ गिरिशप्रियायै नमः।
७५ ॐ मेनकागर्भसम्भूतायै नमः।
७६ ॐ मैनाकभगिनीप्रियायै नमः।
७७ ॐ आद्यायै नमः।
७८ ॐ त्रिलोकजनन्यै नमः।
७९ ॐ त्रैलोक्यपरिपालिन्यै नमः।
८० ॐ तीर्थश्रेष्ठतमायै नमः।
८१ ॐ श्रेष्ठायै नमः।
८२ ॐ सर्वतीर्थमय्यै नमः।
८३ ॐ शुभायै नमः।
८४ ॐ चतुर्वेदमय्यै नमः।
८५ ॐ सर्वायै नमः।
८६ ॐ पितृसन्तृप्तिदायिन्यै नमः।
८७ ॐ शिवदायै नमः।
८८ ॐ शिवसायुज्यदायिन्यै नमः।
८९ ॐ शिववल्लभायै नमः।
९० ॐ तेजस्विन्यै नमः।
९१ ॐ त्रिनयनायै नमः।
९२ ॐ त्रिलोचनमनोरमायै नमः।
९३ ॐ सप्तधारायै नमः।
९४ ॐ शतमुख्यै नमः।
९५ ॐ सगरान्वयतारिण्यै नमः।
९६ ॐ मुनिसेव्यायै नमः।
९७ ॐ मुनिसुतायै नमः।
९८ ॐ जह्नुजानुप्रभेदिन्यै नमः।
९९ ॐ मकरस्थायै नमः।
१०० ॐ सर्वगतायै नमः।
१०१ ॐ सर्वाशुभनिवारिण्यै नमः।
१०२ ॐ सुदृश्यायै नमः।
१०३ ॐ चाक्षुषीतृप्तिदायिन्यै नमः।
१०४ ॐ मकरालयायै नमः।
१०५ ॐ सदानन्दमय्यै नमः।
१०६ ॐ नित्यानन्ददायै नमः।
१०७ ॐ नगपूजितायै नमः।
१०८ ॐ सर्वदेवाधिदेवैः परि-
पूज्यपदाम्बुजायै नमः।

*॥ इति श्रीमहाभागवते महापुराणे श्रीगङ्गाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीसीतायै नमः ॥

# श्रीसीता-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*विनियोग*

*अस्य श्रीसीतानामाष्टोत्तरमन्त्रस्य अगस्तिऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। रमेति बीजम्। मातुलुङ्गीति शक्तिः। पद्माक्षजेति कीलकम्। अवनिजेत्यस्त्रम्। जनकजेति कवचम्। मूलकासुरमर्दिनीति परमो मन्त्रः। श्रीसीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।*

*करन्यास*

*ॐ सीतायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रमायै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मातुलुङ्ग्यै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ पद्माक्षजायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ अवनिजायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ जनकजायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।*

*हृदयादिन्यास*

*ॐ सीतायै हृदयाय नमः। ॐ रमायै शिरसे स्वाहा। ॐ मातुलुङ्ग्यै शिखायै वषट्। ॐ पद्माक्षजायै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ जनकात्मजायै अस्त्राय फट्। ॐ मूलकासुरमर्दिन्यै इति दिग्बन्धः।*

*ध्यान*

**वामाङ्गे रघुनायकस्य रुचिरे या संस्थिता शोभना**
**या विप्राधिपयानरम्यनयना या विप्रपालानना।**
**विद्युत्पुञ्जविराजमानवसना भक्तार्तिसंखण्डना**
**श्रीमद्राघवपादपद्मयुगलन्यस्तेक्षणा सावतु॥***

*स्तोत्र*

**श्रीसीता जानकी देवी वैदेही राघवप्रिया।**
**रमावनिसुता रामा राक्षसान्तप्रकारिणी॥ १॥**

---

* जो एक सुन्दर सिंहासनपर श्रीरामजीके वामांगमें आसीन (विराजित) हैं, मृगके नेत्रोंकी तरह जिनके सुन्दर नेत्र हैं, जो चन्द्रमाके तुल्य मुखवाली हैं, जो बिजलीके समूहकी तरह दमकनेवाले वस्त्र पहने हुए हैं, जो अपने भक्तोंकी पीड़ा दूर करनेमें कुछ उठा नहीं रखतीं, जिनके नेत्र श्रीरामचन्द्रजीके युगल चरण-कमलोंमें लगे हैं, वे सीताजी हमारी रक्षा करें।

रत्नगुप्ता मातुलुङ्गी मैथिली भक्ततोषदा।
पद्माक्षजा कञ्जनेत्रा स्मितास्या नूपुरस्वना॥ २ ॥
वैकुण्ठनिलया मा श्रीर्मुक्तिदा कामपूरणी।
नृपात्मजा हेमवर्णा मृदुलाङ्गी सुभाषिणी॥ ३ ॥
कुशाम्बिका दिव्यदा च लवमाता मनोहरा।
हनुमद्वन्दितपदा मुग्धा केयूरधारिणी॥ ४ ॥
अशोकवनमध्यस्था रावणादिकमोहिनी।
विमानसंस्थिता सुभ्रूः सुकेशी रशनान्विता॥ ५ ॥
रजोरूपा सत्त्वरूपा तामसी वह्निवासिनी।
हेममृगासक्तचित्ता वाल्मीक्याश्रमवासिनी॥ ६ ॥
पतिव्रता महामाया पीतकौशेयवासिनी।
मृगनेत्रा च बिम्बोष्ठी धनुर्विद्याविशारदा॥ ७ ॥
सौम्यरूपा दशरथस्नुषा चामरवीजिता।
सुमेधादुहिता दिव्यरूपा त्रैलोक्यपालिनी॥ ८ ॥
अन्नपूर्णा महालक्ष्मीर्धीर्लज्जा च सरस्वती।
शान्तिः पुष्टिः क्षमा गौरी प्रभायोध्यानिवासिनी॥ ९ ॥
वसन्तशीतला गौरी स्नानसन्तुष्टमानसा।
रमानामभद्रसंस्था हेमकुम्भपयोधरा॥ १० ॥
सुरार्चिता धृतिः कान्तिः स्मृतिर्मेधा विभावरी।
लघूदरा वरारोहा हेमकङ्कणमण्डिता॥ ११ ॥
द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषा राघवतोषिणी।
श्रीरामसेवनरता रत्नताटङ्कधारिणी॥ १२ ॥

रामवामाङ्गसंस्था च रामचन्द्रैकरञ्जनी।
सरयूजलसंक्रीडाकारिणी राममोहिनी॥ १३॥
सुवर्णतुलिता पुण्या पुण्यकीर्तिः कलावती।
कलकण्ठा कम्बुकण्ठा रम्भोरुर्गजगामिनी॥ १४॥
रामार्पितमना रामवन्दिता रामवल्लभा।
श्रीरामपदचिह्नाङ्का रामरामेतिभाषिणी॥ १५॥
रामपर्यङ्कशयना रामाङ्घ्रिक्षालिनी वरा।
कामधेन्वन्नसन्तुष्टा मातुलुङ्गकरे धृता॥ १६॥
दिव्यचन्दनसंस्था श्रीर्मूलकासुरमर्दिनी।
एवमष्टोत्तरशतं सीतानाम्नां सुपुण्यदम्॥ १७॥
ये पठन्ति नरा भूम्यां ते धन्याः स्वर्गगामिनः।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां सीतायाः स्तोत्रमुत्तमम्॥ १८॥
जपनीयं प्रयत्नेन सर्वदा भक्तिपूर्वकम्।
सति स्तोत्राण्यनेकानि पुण्यदानि महान्ति च॥ १९॥
नानेन सदृशानीह तानि सर्वाणि भूसुर।
स्तोत्राणामुत्तमं चेदं भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणाम्॥ २०॥
एवं सुतीक्ष्ण ते प्रोक्तमष्टोत्तरशतं शुभम्।
सीतानाम्नां पुण्यदं च श्रवणान्मङ्गलप्रदम्॥ २१॥
नरैः प्रातः समुत्थाय पठितव्यं प्रयत्नतः।
सीतापूजनकालेऽपि सर्ववाञ्छितदायकम्॥ २२॥

*॥ इति श्रीआनन्दरामायणे श्रीसीताष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीसीतायै नमः ॥

# श्रीसीता-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ श्रीसीतायै नमः ।
२ ॐ जानक्यै नमः ।
३ ॐ देव्यै नमः ।
४ ॐ वैदेह्यै नमः ।
५ ॐ राघवप्रियायै नमः ।
६ ॐ रमायै नमः ।
७ ॐ अवनिसुतायै नमः ।
८ ॐ रामायै नमः ।
९ ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै नमः ।
१० ॐ रत्नगुप्तायै नमः ।
११ ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः ।
१२ ॐ मैथिल्यै नमः ।
१३ ॐ भक्ततोषदायै नमः ।
१४ ॐ पद्माक्षजायै नमः ।
१५ ॐ कञ्जनेत्रायै नमः ।
१६ ॐ स्मितास्यायै नमः ।
१७ ॐ नूपुरस्वनायै नमः ।
१८ ॐ वैकुण्ठनिलयायै नमः ।
१९ ॐ मायै नमः ।
२० ॐ श्रियै नमः ।
२१ ॐ मुक्तिदायै नमः ।
२२ ॐ कामपूरण्यै नमः ।
२३ ॐ नृपात्मजायै नमः ।
२४ ॐ हेमवर्णायै नमः ।
२५ ॐ मृदुलाङ्ग्यै नमः ।
२६ ॐ सुभाषिण्यै नमः ।
२७ ॐ कुशाम्बिकायै नमः ।
२८ ॐ दिव्यदायै नमः ।
२९ ॐ लवमात्रे नमः ।
३० ॐ मनोहरायै नमः ।
३१ ॐ हनुमद्वन्दितपदायै नमः ।
३२ ॐ मुग्धायै नमः ।
३३ ॐ केयूरधारिण्यै नमः ।
३४ ॐ अशोकवनमध्यस्थायै नमः ।
३५ ॐ रावणादिकमोहिन्यै नमः ।
३६ ॐ विमानसंस्थितायै नमः ।
३७ ॐ सुभ्रुवे नमः ।
३८ ॐ सुकेश्यै नमः ।
३९ ॐ रशनान्वितायै नमः ।
४० ॐ रजोरूपायै नमः ।
४१ ॐ सत्त्वरूपायै नमः ।
४२ ॐ तामस्यै नमः ।
४३ ॐ वह्निवासिन्यै नमः ।
४४ ॐ हेममृगासक्तचित्तायै नमः ।
४५ ॐ वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः ।
४६ ॐ पतिव्रतायै नमः ।
४७ ॐ महामायायै नमः ।
४८ ॐ पीतकौशेयवासिन्यै नमः ।
४९ ॐ मृगनेत्रायै नमः ।
५० ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः ।
५१ ॐ धनुर्विद्याविशारदायै नमः ।
५२ ॐ सौम्यरूपायै नमः ।
५३ ॐ दशरथस्नुषायै नमः ।
५४ ॐ चामरवीजितायै नमः ।

५५ ॐ सुमेधादुहित्रे नमः।
५६ ॐ दिव्यरूपायै नमः।
५७ ॐ त्रैलोक्यपालिन्यै नमः।
५८ ॐ अन्नपूर्णायै नमः।
५९ ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
६० ॐ धियै नमः।
६१ ॐ लज्जायै नमः।
६२ ॐ सरस्वत्यै नमः।
६३ ॐ शान्त्यै नमः।
६४ ॐ पुष्ट्यै नमः।
६५ ॐ क्षमायै नमः।
६६ ॐ गौर्यै नमः।
६७ ॐ प्रभायै नमः।
६८ ॐ अयोध्यानिवासिन्यै नमः।
६९ ॐ वसन्तशीतलायै नमः।
७० ॐ गौर्यै नमः।
७१ ॐ स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः।
७२ ॐ रमानामभद्रसंस्थायै नमः।
७३ ॐ हेमकुम्भपयोधरायै नमः।
७४ ॐ सुरार्चितायै नमः।
७५ ॐ धृत्यै नमः।
७६ ॐ कान्त्यै नमः।
७७ ॐ स्मृत्यै नमः।
७८ ॐ मेधायै नमः।
७९ ॐ विभावर्यै नमः।
८० ॐ लघूदरायै नमः।
८१ ॐ वरारोहायै नमः।
८२ ॐ हेमकङ्कणमण्डितायै नमः।
८३ ॐ द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषायै नमः।
८४ ॐ राघवतोषिण्यै नमः।
८५ ॐ श्रीरामसेवनरतायै नमः।
८६ ॐ रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः।
८७ ॐ रामवामाङ्गसंस्थायै नमः।
८८ ॐ रामचन्द्रैकरञ्जिन्यै नमः।
८९ ॐ सरयूजलसंक्रीडा-
कारिण्यै नमः।
९० ॐ राममोहिन्यै नमः।
९१ ॐ सुवर्णतुलितायै नमः।
९२ ॐ पुण्यायै नमः।
९३ ॐ पुण्यकीर्त्यै नमः।
९४ ॐ कलावत्यै नमः।
९५ ॐ कलकण्ठायै नमः।
९६ ॐ कम्बुकण्ठायै नमः।
९७ ॐ रम्भोर्वै नमः।
९८ ॐ गजगामिन्यै नमः।
९९ ॐ रामार्पितमनायै नमः।
१०० ॐ रामवन्दितायै नमः।
१०१ ॐ रामवल्लभायै नमः।
१०२ ॐ श्रीरामपदचिह्नाङ्कायै नमः।
१०३ ॐ रामरामेतिभाषिण्यै नमः।
१०४ ॐ रामपर्यङ्कशयनायै नमः।
१०५ ॐ रामाङ्घ्रिक्षालिन्यै नमः।
१०६ ॐ वरायै नमः।
१०७ ॐ कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः।
१०८ ॐ मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः।
१०९ ॐ दिव्यचन्दनसंस्थायै नमः।
११० ॐ श्रियै नमः।
१११ ॐ मूलकासुरमर्दिन्यै नमः।

*॥ इति श्रीआनन्दरामायणे श्रीसीताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीराधायै नमः ॥

# श्रीराधा-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

हेमाभां द्विभुजां वराभयकरां नीलाम्बरेणावृतां
श्यामक्रोडविलासिनीं भगवतीं सिन्दूरपुञ्जोज्ज्वलाम्।
लोलाक्षीं नवयौवनां स्मितमुखीं बिम्बाधरां राधिकां
नित्यानन्दमयीं विलासनिलयां दिव्याङ्गभूषां भजे॥*

*स्तोत्र*

**अथास्याः सम्प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।**
**यस्य सङ्कीर्तनादेव श्रीकृष्णं वशयेद् ध्रुवम्॥ १॥**
**राधिका सुन्दरी गोपी कृष्णसङ्गमकारिणी।**
**चञ्चलाक्षी कुरङ्गाक्षी गान्धर्वी वृषभानुजा॥ २॥**
**वीणापाणिः स्मितमुखी रक्ताशोकलतालया।**
**गोवर्धनचरी गोपी गोपीवेषमनोहरा॥ ३॥**
**चन्द्रावलीसपत्नी च दर्पणास्या कलावती।**
**कृपावती सुप्रतीका तरुणी हृदयङ्गमा॥ ४॥**
**कृष्णप्रिया कृष्णसखी विपरीतरतिप्रिया।**
**प्रवीणा सुरतप्रीता चन्द्रास्या चारुविग्रहा॥ ५॥**
**केकराक्षी हरेः कान्ता महालक्ष्मी सुकेलिनी।**
**सङ्केतवटसंस्थाना कमनीया च कामिनी॥ ६॥**

---

* जिनके गोरे-गोरे अङ्गोंकी हेममयी आभा है, जो दो भुजाओंसे युक्त हैं और दोनों हाथोंमें क्रमशः वर एवं अभयकी मुद्रा धारण करती हैं, नीले रंगकी रेशमी साड़ी जिनके श्रीअङ्गोंका आवरण बनी हुई है, जो श्यामसुन्दरके अङ्कमें विलास करती हैं, सीमन्तगत सिन्दूरपुञ्जसे जिनकी सौन्दर्यश्री और भी उद्भासित हो उठी है; चपल नयन, नित्य नूतन यौवन, मुखपर मन्दहासकी छटा तथा बिम्बफलकी अरुणिमाको भी तिरस्कृत करनेवाला अधर-राग जिनका अनन्यसाधारण वैशिष्ट्य है, जो नित्य आनन्दमयी तथा विलासकी आवासभूमि हैं, जिनके अङ्गोंके आभूषण दिव्य (अलौकिक) हैं, उन भगवती श्रीराधिकाका मैं चिन्तन करता हूँ।

वृषभानुसुता राधा किशोरी ललिता लता।
विद्युद्वल्ली काञ्चनाभा कुमारी मुग्धवेशिनी॥ ७ ॥
केशिनी केशवसखी नवनीतैकविक्रया।
षोडशाब्दा कलापूर्णा जारिणी जारसङ्गिनी॥ ८ ॥
हर्षिणी वर्षिणी वीरा धीरा धारा धरा धृतिः।
यौवनस्था वनस्था च मधुरा मधुराकृतिः॥ ९ ॥
वृषभानुपुरावासा मानलीलाविशारदा।
दानलीला दानदात्री दण्डहस्ता भ्रुवोन्नता॥ १० ॥
सुस्तनी मधुरास्या च बिम्बोष्ठी पञ्चमस्वरा।
सङ्गीतकुशला सेव्या कृष्णवश्यत्वकारिणी॥ ११ ॥
तारिणी हारिणी ह्रीला शीला लीला ललामिका।
गोपाली दधिविक्रेत्री प्रौढा मुग्धा च मध्यका॥ १२ ॥
स्वाधीनपतिका चोक्ता खण्डिता याभिसारिका।
रसिका रसिना रस्या रसशास्त्रैकशेवधिः॥ १३ ॥
पालिका लालिका लज्जा लालसा ललनामणिः।
बहुरूपा सुरूपा च सुप्रसन्ना महामतिः॥ १४ ॥
मरालगमना मत्ता मन्त्रिणी मन्त्रनायिका।
मन्त्रराजैकसंसेव्या मन्त्रराजैकसिद्धिदा॥ १५ ॥
अष्टादशाक्षरफला अष्टाक्षरनिषेविता।
इत्येतद्राधिकादेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १६ ॥
कीर्तयेत्प्रातरुत्थाय कृष्णवश्यत्वसिद्धये।
एकैकनामोच्चारेण वशीभवति केशवः॥ १७ ॥

*॥ इत्यूर्ध्वाम्नाये श्रीराधाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीराधायै नमः ॥

# श्रीराधा-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ राधिकायै नमः ।
२ ॐ सुन्दर्यै नमः ।
३ ॐ गोप्यै नमः ।
४ ॐ कृष्णसङ्गमकारिण्यै नमः ।
५ ॐ चञ्चलाक्ष्यै नमः ।
६ ॐ कुरङ्गाक्ष्यै नमः ।
७ ॐ गान्धर्व्यै नमः ।
८ ॐ वृषभानुजायै नमः ।
९ ॐ वीणापाण्यै नमः ।
१० ॐ स्मितमुख्यै नमः ।
११ ॐ रक्ताशोकलतालयायै नमः ।
१२ ॐ गोवर्धनचर्यै नमः ।
१३ ॐ गोप्यै नमः ।
१४ ॐ गोपीवेषमनोहरायै नमः ।
१५ ॐ चन्द्रावलीसपत्न्यै नमः ।
१६ ॐ दर्पणास्यायै नमः ।
१७ ॐ कलावत्यै नमः ।
१८ ॐ कृपावत्यै नमः ।
१९ ॐ सुप्रतीकायै नमः ।
२० ॐ तरुण्यै नमः ।
२१ ॐ हृदयङ्गमायै नमः ।
२२ ॐ कृष्णप्रियायै नमः ।
२३ ॐ कृष्णसख्यै नमः ।
२४ ॐ विपरीतरतिप्रियायै नमः ।
२५ ॐ प्रवीणायै नमः ।
२६ ॐ सुरतप्रीतायै नमः ।
२७ ॐ चन्द्रास्यायै नमः ।
२८ ॐ चारुविग्रहायै नमः ।
२९ ॐ केकराक्ष्यै नमः ।
३० ॐ हरेः कान्तायै नमः ।
३१ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
३२ ॐ सुकेलिन्यै नमः ।
३३ ॐ सङ्केतवटसंस्थानायै नमः ।
३४ ॐ कमनीयायै नमः ।
३५ ॐ कामिन्यै नमः ।
३६ ॐ वृषभानुसुतायै नमः ।
३७ ॐ राधायै नमः ।
३८ ॐ किशोर्यै नमः ।
३९ ॐ ललितायै नमः ।
४० ॐ लतायै नमः ।
४१ ॐ विद्युद्वल्ल्यै नमः ।
४२ ॐ काञ्चनाभायै नमः ।
४३ ॐ कुमार्यै नमः ।
४४ ॐ मुग्धवेशिन्यै नमः ।
४५ ॐ केशिन्यै नमः ।
४६ ॐ केशवसख्यै नमः ।
४७ ॐ नवनीतैकविक्रयायै नमः ।
४८ ॐ षोडशाब्दायै नमः ।
४९ ॐ कलापूर्णायै नमः ।
५० ॐ जारिण्यै नमः ।
५१ ॐ जारसङ्गिन्यै नमः ।
५२ ॐ हर्षिण्यै नमः ।

५३ ॐ वर्षिण्यै नमः।
५४ ॐ वीरायै नमः।
५५ ॐ धीरायै नमः।
५६ ॐ धारायै नमः।
५७ ॐ धरायै नमः।
५८ ॐ धृत्यै नमः।
५९ ॐ यौवनस्थायै नमः।
६० ॐ वनस्थायै नमः।
६१ ॐ मधुरायै नमः।
६२ ॐ मधुराकृत्यै नमः।
६३ ॐ वृषभानुपुरावासायै नमः।
६४ ॐ मानलीलाविशारदायै नमः।
६५ ॐ दानलीलायै नमः।
६६ ॐ दानदात्र्यै नमः।
६७ ॐ दण्डहस्तायै नमः।
६८ ॐ भ्रुवोन्नतायै नमः।
६९ ॐ सुस्तन्यै नमः।
७० ॐ मधुरास्यायै नमः।
७१ ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः।
७२ ॐ पञ्चमस्वरायै नमः।
७३ ॐ सङ्गीतकुशलायै नमः।
७४ ॐ सेव्यायै नमः।
७५ ॐ कृष्णवश्यत्वकारिण्यै नमः।
७६ ॐ तारिण्यै नमः।
७७ ॐ हारिण्यै नमः।
७८ ॐ ह्रीलायै नमः।
७९ ॐ शीलायै नमः।
८० ॐ लीलायै नमः।
८१ ॐ ललामिकायै नमः।
८२ ॐ गोपाल्यै नमः।
८३ ॐ दधिविक्रेत्र्यै नमः।
८४ ॐ प्रौढायै नमः।
८५ ॐ मुग्धायै नमः।
८६ ॐ मध्यकायै नमः।
८७ ॐ स्वाधीनपतिकायै नमः।
८८ ॐ खण्डितायै नमः।
८९ ॐ अभिसारिकायै नमः।
९० ॐ रसिकायै नमः।
९१ ॐ रसिनायै नमः।
९२ ॐ रस्यायै नमः।
९३ ॐ रसशास्त्रैकशेवध्यै नमः।
९४ ॐ पालिकायै नमः।
९५ ॐ लालिकायै नमः।
९६ ॐ लज्जायै नमः।
९७ ॐ लालसायै नमः।
९८ ॐ ललनामण्यै नमः।
९९ ॐ बहुरूपायै नमः।
१०० ॐ सुरूपायै नमः।
१०१ ॐ सुप्रसन्नायै नमः।
१०२ ॐ महामत्यै नमः।
१०३ ॐ मरालगमनायै नमः।
१०४ ॐ मत्तायै नमः।
१०५ ॐ मन्त्रिण्यै नमः।
१०६ ॐ मन्त्रनायिकायै नमः।
१०७ ॐ मन्त्रराजैकसंसेव्यायै नमः।
१०८ ॐ मन्त्रराजैकसिद्धिदायै नमः।
१०९ ॐ अष्टादशाक्षरफलायै नमः।
११० ॐ अष्टाक्षरनिषेवितायै नमः।

*॥ इत्यूर्ध्वाम्नाये श्रीराधाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीरेणुकायै नमः ॥

# श्रीरेणुका-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*विनियोग*

*अस्य श्रीरेणुकादेव्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य शाण्डिल्य ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीजगदम्बा रेणुकादेवता ॐ बीजं नमः शक्तिः ॐ महादेवीति कीलकं श्रीजगदम्बारेणुकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सर्वपापक्षयद्वारा श्रीजगदम्बारेणुका-प्रीत्यर्थं सर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थं च जपे विनियोगः।*

*करन्यास*

*ॐ ह्रां रेणुकायै नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं राममात्रे नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं महापुरुषवासिन्यै नमः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं एकवीरायै नमः अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कालरात्र्यै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः एककाल्यै नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।*

*हृदयादिन्यास*

*ॐ ह्रां रेणुकायै नमः हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं राममात्रे नमः शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं महापुरुषवासिन्यै नमः शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं एकवीरायै नमः कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं कालरात्र्यै नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः एककाल्यै नमः अस्त्राय फट्।*

*देहन्यास*

*ॐ ह्रां रेणुकायै नमः शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रीं राममात्रे नमः मुखे। ॐ ह्रूं महापुरुषवासिन्यै नमः हृदये। ॐ ह्रैं एकवीरायै नमः गुह्ये। ॐ ह्रौं कालरात्र्यै नमः पादयोः। ॐ ह्रः एककाल्यै नमः सर्वाङ्गे। ॐ भूर्भुवः स्वः इति दिग्बन्धः।*

*ध्यान*

**ध्यायेन्नित्यमपूर्ववेशललितां कन्दर्पलावण्यदां**
**देवीं देवगणैरुपास्यचरणां कारुण्यरत्नाकराम्।**
**लीलाविग्रहणीं विराजितभुजां सच्चन्द्रहासादिभिः**
**भक्तानन्दविधायिनीं प्रमुदितां नित्योत्सवां रेणुकाम्॥***

---

* अपूर्व वेशसे मनोहर प्रतीत होनेवाली, कामदेवको सौन्दर्य प्रदान करनेवाली, देवगणोंसे उपासित चरणोंवाली, करुणारूपी रत्नकी खानस्वरूपा, लीलाविग्रह धारण करनेवाली, उत्तम खड्ग आदिसे सुशोभित भुजावाली, भक्तोंको आनन्दित करनेवाली, प्रसन्नचित्तवाली तथा नित्य उत्सवस्वरूपिणी भगवती रेणुकाका सदा ध्यान करना चाहिये।

स्तोत्र

ॐ जगदम्बा जगद्वन्द्या महाशक्तिर्महेश्वरी।
महादेवी महाकाली महालक्ष्मीः सरस्वती॥ १ ॥
महावीरा महारात्रिः कालरात्रिश्च कालिका।
सिद्धविद्या राममाता शिवा शान्ता ऋषिप्रिया॥ २ ॥
नारायणी जगन्माता जगद्बीजा जगत्प्रभा।
चन्द्रिका चन्द्रचूडा च चन्द्रायुधधरा शुभा॥ ३ ॥
भ्रमराम्बा तथानन्दा रेणुका मृत्युनाशिनी।
दुर्गमा दुर्लभा गौरी दुर्गा भर्गकुटुम्बिनी॥ ४ ॥
कात्यायनी महामाता रुद्राणी चाम्बिका सती।
कल्पवृक्षा कामधेनुः चिन्तामणिरूपधारिणी॥ ५ ॥
सिद्धाचलवासिनी च सिद्धवृन्दसुशोभिनी।
ज्वालामुखी ज्वलत्कान्ता ज्वालाप्रज्वलरूपिणी॥ ६ ॥
अजा पिनाकिनी भद्रा विजया विजयोत्सवा।
कुष्ठरोगहरा दीप्ता दुष्टासुरगर्वमर्दिनी॥ ७ ॥
सिद्धिदा बुद्धिदा शुद्धा नित्यानित्यतपःक्रिया।
निराधारा निराकारा निर्माया च शुभप्रदा॥ ८ ॥
अपर्णा चान्नपूर्णा च पूर्णचन्द्रनिभानना।
कृपाकरा खड्गहस्ता छिन्नहस्ता चिदम्बरा॥ ९ ॥
चामुण्डी चण्डिकानन्ता रत्नाभरणभूषिता।
विशालाक्षी च कामाक्षी मीनाक्षी मोक्षदायिनी॥ १० ॥

सावित्री चैव सौमित्री सुधा सद्भक्तरक्षिणी।
शान्तिश्च शान्त्यतीता च शान्तातीततरा तथा॥ ११॥
शाकम्भरी तथा सूक्ष्मा शाङ्करी परमेश्वरी।
ईशानी नैर्ऋती सौम्या माहेन्द्री वारुणी तथा॥ १२॥
जमदग्नितमोहन्त्री धर्मार्थकाममोक्षदा।
कामदा कामजननी मातृका सूर्यकान्तिनी॥ १३॥
मन्त्रसिद्धिर्महातेजा मातृमण्डलवल्लभा।
लोकप्रिया रेणुतनया भवानी रौद्ररूपिणी॥ १४॥
तुष्टिदा पुष्टिदा चैव शाम्भवी सर्वमङ्गला।
एतदष्टोत्तरशतं नामस्तोत्रं पठेत् सदा॥ १५॥
सर्वसम्पत्करं दिव्यं सर्वाभीष्टफलप्रदम्।
अष्टसिद्धियुतं चैव सर्वपापनिवारणम्॥ १६॥

*॥ इति श्रीशाण्डिल्यमहर्षिविरचितं श्रीरेणुकाष्टोत्तर-
शतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीरेणुकायै नमः ॥

# श्रीरेणुका-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ जगदम्बायै नमः।
२ ॐ जगद्वन्द्यायै नमः।
३ ॐ महाशक्त्यै नमः।
४ ॐ महेश्वर्यै नमः।
५ ॐ महादेव्यै नमः।
६ ॐ महाकाल्यै नमः।
७ ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
८ ॐ सरस्वत्यै नमः।
९ ॐ महावीरायै नमः।
१० ॐ महारात्र्यै नमः।
११ ॐ कालरात्र्यै नमः।
१२ ॐ कालिकायै नमः।
१३ ॐ सिद्धविद्यायै नमः।
१४ ॐ राममात्रे नमः।
१५ ॐ शिवायै नमः।
१६ ॐ शान्तायै नमः।
१७ ॐ ऋषिप्रियायै नमः।
१८ ॐ नारायण्यै नमः।
१९ ॐ जगन्मात्रे नमः।
२० ॐ जगद्बीजायै नमः।
२१ ॐ जगत्प्रभायै नमः।
२२ ॐ चन्द्रिकायै नमः।
२३ ॐ चन्द्रचूडायै नमः।
२४ ॐ चन्द्रायुधधरायै नमः।
२५ ॐ शुभायै नमः।
२६ ॐ भ्रमराम्बायै नमः।
२७ ॐ आनन्दायै नमः।
२८ ॐ रेणुकायै नमः।
२९ ॐ मृत्युनाशिन्यै नमः।
३० ॐ दुर्गमायै नमः।
३१ ॐ दुर्लभायै नमः।
३२ ॐ गौर्यै नमः।
३३ ॐ दुर्गायै नमः।
३४ ॐ भर्गकुटुम्बिन्यै नमः।
३५ ॐ कात्यायन्यै नमः।
३६ ॐ महामात्रे नमः।
३७ ॐ रुद्राण्यै नमः।
३८ ॐ अम्बिकायै नमः।
३९ ॐ सत्यै नमः।
४० ॐ कल्पवृक्षायै नमः।
४१ ॐ कामधेनवे नमः।
४२ ॐ चिन्तामणिरूप-
धारिण्यै नमः।
४३ ॐ सिद्धाचलवासिन्यै नमः।
४४ ॐ सिद्धवृन्दसुशोभिन्यै नमः।
४५ ॐ ज्वालामुख्यै नमः।
४६ ॐ ज्वलत्कान्तायै नमः।
४७ ॐ ज्वालाप्रज्वलरूपिण्यै नमः।
४८ ॐ अजायै नमः।
४९ ॐ पिनाकिन्यै नमः।
५० ॐ भद्रायै नमः।
५१ ॐ विजयायै नमः।
५२ ॐ विजयोत्सवायै नमः।
५३ ॐ कुष्ठरोगहरायै नमः।

५४ ॐ दीप्तायै नमः।
५५ ॐ दुष्टासुरगर्वमर्दिन्यै नमः।
५६ ॐ सिद्धिदायै नमः।
५७ ॐ बुद्धिदायै नमः।
५८ ॐ शुद्धायै नमः।
५९ ॐ नित्यानित्यतपःक्रियायै नमः।
६० ॐ निराधारायै नमः।
६१ ॐ निराकारायै नमः।
६२ ॐ निर्मायै नमः।
६३ ॐ शुभप्रदायै नमः।
६४ ॐ अपर्णायै नमः।
६५ ॐ अन्नपूर्णायै नमः।
६६ ॐ पूर्णचन्द्रनिभाननायै नमः।
६७ ॐ कृपाकरायै नमः।
६८ ॐ खड्गहस्तायै नमः।
६९ ॐ छिन्नहस्तायै नमः।
७० ॐ चिदम्बरायै नमः।
७१ ॐ चामुण्डयै नमः।
७२ ॐ चण्डिकायै नमः।
७३ ॐ अनन्तायै नमः।
७४ ॐ रत्नाभरणभूषितायै नमः।
७५ ॐ विशालाक्ष्यै नमः।
७६ ॐ कामाक्ष्यै नमः।
७७ ॐ मीनाक्ष्यै नमः।
७८ ॐ मोक्षदायिन्यै नमः।
७९ ॐ सावित्र्यै नमः।
८० ॐ सौमित्र्यै नमः।
८१ ॐ सुधायै नमः।
८२ ॐ सद्भक्तरक्षिण्यै नमः।
८३ ॐ शान्त्यै नमः।
८४ ॐ शान्त्यतीतायै नमः।
८५ ॐ शान्तातीततरायै नमः।
८६ ॐ शाकम्भर्यै नमः।
८७ ॐ सूक्ष्मायै नमः।
८८ ॐ शाङ्कर्यै नमः।
८९ ॐ परमेश्वर्यै नमः।
९० ॐ ईशान्यै नमः।
९१ ॐ नैर्ऋत्यै नमः।
९२ ॐ सौम्यायै नमः।
९३ ॐ माहेन्द्र्यै नमः।
९४ ॐ वारुण्यै नमः।
९५ ॐ जमदग्नितमोहन्त्र्यै नमः।
९६ ॐ धर्मार्थकाममोक्षदायै नमः।
९७ ॐ कामदायै नमः।
९८ ॐ कामजनन्यै नमः।
९९ ॐ मातृकायै नमः।
१०० ॐ सूर्यकान्तिन्यै नमः।
१०१ ॐ मन्त्रसिद्ध्यै नमः।
१०२ ॐ महातेजसे नमः।
१०३ ॐ मातृमण्डलवल्लभायै नमः।
१०४ ॐ लोकप्रियायै नमः।
१०५ ॐ रेणुतनयायै नमः।
१०६ ॐ भवान्यै नमः।
१०७ ॐ रौद्ररूपिण्यै नमः।
१०८ ॐ तुष्टिदायै नमः।
१०९ ॐ पुष्टिदायै नमः।
११० ॐ शाम्भव्यै नमः।
१११ ॐ सर्वमङ्गलायै नमः।

*॥ इति श्रीशाण्डिल्यमहर्षिविरचिता श्रीरेणुकाष्टोत्तर-शतनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीसौभाग्यायै नमः ॥

# श्रीसौभाग्या-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

*ध्यान*

ध्यायेत्पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं
हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम्।
सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीं
श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम्॥*

*स्तोत्र*

निशम्यैतज्जामदग्न्यो माहात्म्यं सर्वतोऽधिकम्।
स्तोत्रस्य भूयः पप्रच्छ दत्तात्रेयं गुरूत्तमम्॥ १॥
भगवंस्त्वन्मुखाम्भोजनिर्गमद्वाक्सुधारसम्।
पिबतः श्रोत्रमुखतो वर्धतेऽनुक्षणं तृषा॥ २॥
अष्टोत्तरशतं नाम्नां श्रीदेव्या यत्प्रसादतः।
कामः सम्प्राप्तवाँल्लोके सौभाग्यं सर्वमोहनम्॥ ३॥
सौभाग्यविद्यावर्णानामुद्धारो यत्र संस्थितः।
तत्समाचक्ष्व भगवन् कृपया मयि सेवके॥ ४॥

---

* कमलके आसनपर विराजमान, प्रसन्न मुखमण्डलवाली, कमल-दलके सदृश विशाल नेत्रोंवाली, स्वर्णके समान अभावाली, पीतवर्णके वस्त्र धारण करनेवाली, अपने कोमल हाथमें स्वर्णिम कमल धारण करनेवाली, सुन्दर शरीरावयवसे सुशोभित, सभी प्रकारके आभूषणोंसे अलंकृत, निरन्तर अभय प्रदान करनेवाली, भक्तोंके प्रति कोमल स्वभाववाली, शान्त मूर्ति, सभी देवताओंसे नमस्कृत तथा सम्पूर्ण सम्पदा प्रदान करनेवाली भवानी श्रीविद्याका ध्यान करना चाहिये।

निशम्यैवं भार्गवोक्तिं दत्तात्रेयो दयानिधिः।
प्रोवाच भार्गवं रामं मधुराक्षरपूर्वकम्॥ ५ ॥
शृणु भार्गव यत्पृष्टं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
श्रीविद्यावर्णरत्नानां निधानमिव संस्थितम्॥ ६ ॥
श्रीदेव्या बहुधा सन्ति नामानि शृणु भार्गव।
सहस्रशतसंख्यानि पुराणेष्वागमेषु च॥ ७ ॥
तेषु सारतरं ह्येतत् सौभाग्याष्टोत्तरात्मकम्।
यदुवाच शिवः पूर्वं भवान्यै बहुधार्थितः॥ ८ ॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य भार्गव।
ऋषिरुक्तः शिवश्छन्दोऽनुष्टुप् श्रीललिताम्बिका॥ ९ ॥
देवता विन्यसेत् कूटत्रयेणावर्त्य सर्वतः।
ध्यात्वा सम्पूज्य मनसा स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥ १० ॥
ॐ कामेश्वरी कामशक्तिः कामसौभाग्यदायिनी।
कामरूपा कामकला कामिनी कमलासना॥ ११ ॥
कमला कल्पनाहीना कमनीयकलावती।
कमलाभारतीसेव्या कल्पिताशेषसंसृतिः॥ १२ ॥
अनुत्तरानघानन्ताद्भुतरूपानलोद्भवा।
एकरूपैकवीरैकनाथैकान्तार्चनप्रिया॥ १३ ॥
एकैकभावतुष्टैकरसैकान्तजनप्रिया।
एधमानप्रभावैधद्भक्तपातकनाशिनी॥ १४ ॥
एलामोदमुखैनोऽद्रिशक्रायुधसमस्थितिः।
ईहाशून्येप्सितेशादिसेव्येशानवराङ्गना॥ १५ ॥

ईश्वराज्ञापिकेकारभाव्येप्सितफलप्रदा ।
ईशानेतिहरेक्षेषदरुणाक्षीश्वरेश्वरी ॥ १६ ॥
ललिता ललनारूपा लयहीना लसत्तनुः ।
लयसर्वा लयक्षोणिर्लयकर्त्री लयात्मिका ॥ १७ ॥
लघिमा लघुमध्याढ्या ललमाना लघुद्रुता ।
हयारूढा हतामित्रा हरकान्ता हरिस्तुता ॥ १८ ॥
हयग्रीवेष्टदा हालाप्रिया हर्षसमुद्धता ।
हर्षणा हल्लकाभाङ्गी हस्त्यन्तैश्वर्यदायिनी ॥ १९ ॥
हलहस्तार्चितपदा हविर्दानप्रसादिनी ।
रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रवमयी रतिः ॥ २० ॥
रक्षिणी रमणी राका रमणीमण्डलप्रिया ।
रक्षिताखिललोकेशा रक्षोगणनिषूदिनी ॥ २१ ॥
अम्बान्तकारिण्यम्भोजप्रियान्तकभयङ्करी ।
अम्बुरूपाम्बुजकराम्बुजजातवरप्रदा ॥ २२ ॥
अन्तःपूजाप्रियान्तःस्थरूपिण्यन्तर्वचोमयी ।
अन्तकारातिवामाङ्कस्थितान्तःसुखरूपिणी ॥ २३ ॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा समसुखा सती ।
सन्ततिः सन्तता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ॐ ॥ २४ ॥
एतत्ते कथितं राम नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
अतिगोप्यमिदं नाम्नां सर्वतः सारमुद्धृतम् ॥ २५ ॥

एतस्य सदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवताद्विषाम्॥ २६॥
एतत् सदाशिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः।
एतत्प्रभावात् कन्दर्पस्त्रैलोक्यं जयति क्षणात्॥ २७॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं मनोहरम्।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम्॥ २८॥
श्रीविद्योपासनवतामेतदावश्यकं मतम्।
सकृदेतत् प्रपठतां नान्यत् कर्म विलुप्यते॥ २९॥
अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमित्तिकं कृतम्।
व्यर्थीभवति नग्नेन कृतं कर्म यथा तथा॥ ३०॥
सहस्रनामपाठादावशक्तस्त्वेतदीरयेत्।
सहस्रनामपाठस्य फलं शतगुणं भवेत्॥ ३१॥

*॥ इति श्रीत्रिपुरारहस्ये श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीसौभाग्यायै नमः ॥

# श्रीसौभाग्या-अष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ कामेश्वर्यै नमः ।
२ ॐ कामशक्त्यै नमः ।
३ ॐ कामसौभाग्यदायिन्यै नमः ।
४ ॐ कामरूपायै नमः ।
५ ॐ कामकलायै नमः ।
६ ॐ कामिन्यै नमः ।
७ ॐ कमलासनायै नमः ।
८ ॐ कमलायै नमः ।
९ ॐ कल्पनाहीनायै नमः ।
१० ॐ कमनीयकलावत्यै नमः ।
११ ॐ कमलाभारतीसेव्यायै नमः ।
१२ ॐ कल्पिताशेषसंसृत्यै नमः ।
१३ ॐ अनुत्तरायै नमः ।
१४ ॐ अनघायै नमः ।
१५ ॐ अनन्तायै नमः ।
१६ ॐ अद्भुतरूपायै नमः ।
१७ ॐ अनलोद्भवायै नमः ।
१८ ॐ एकरूपायै नमः ।
१९ ॐ एकवीरायै नमः ।
२० ॐ एकनाथायै नमः ।
२१ ॐ एकान्तार्चनप्रियायै नमः ।
२२ ॐ एकैकभावतुष्टायै नमः ।
२३ ॐ एकरसायै नमः ।
२४ ॐ एकान्तजनप्रियायै नमः ।
२५ ॐ एधमानप्रभावायै नमः ।
२६ ॐ एधद्भक्तपातकनाशिन्यै नमः ।
२७ ॐ एलामोदमुखायै नमः ।
२८ ॐ एनोऽद्रिशक्रायुध-
समस्थित्यै नमः ।
२९ ॐ ईहाशून्यायै नमः ।
३० ॐ ईप्सितायै नमः ।
३१ ॐ ईशादिसेव्यायै नमः ।
३२ ॐ ईशानवराङ्गनायै नमः ।
३३ ॐ ईश्वराज्ञापिकायै नमः ।
३४ ॐ ईकारभाव्यायै नमः ।
३५ ॐ ईप्सितफलप्रदायै नमः ।
३६ ॐ ईशानायै नमः ।
३७ ॐ ईतिहरायै नमः ।
३८ ॐ ईक्षायै नमः ।
३९ ॐ ईषदरुणाक्ष्यै नमः ।
४० ॐ ईश्वरेश्वर्यै नमः ।
४१ ॐ ललितायै नमः ।
४२ ॐ ललनारूपायै नमः ।
४३ ॐ लयहीनायै नमः ।
४४ ॐ लसत्तनवे नमः ।
४५ ॐ लयसर्वायै नमः ।
४६ ॐ लयक्षोण्यै नमः ।
४७ ॐ लयकर्त्र्यै नमः ।

४८ ॐ लयात्मिकायै नमः।
४९ ॐ लघिम्ने नमः।
५० ॐ लघुमध्याढ्यायै नमः।
५१ ॐ ललमानायै नमः।
५२ ॐ लघुद्रुतायै नमः।
५३ ॐ हयारूढायै नमः।
५४ ॐ हतामित्रायै नमः।
५५ ॐ हरकान्तायै नमः।
५६ ॐ हरिस्तुतायै नमः।
५७ ॐ हयग्रीवेष्टदायै नमः।
५८ ॐ हालाप्रियायै नमः।
५९ ॐ हर्षसमुद्धतायै नमः।
६० ॐ हर्षणायै नमः।
६१ ॐ हल्लकाभाङ्ग्यै नमः।
६२ ॐ हस्त्यन्तैश्वर्यदायिन्यै नमः।
६३ ॐ हलहस्तार्चितपदायै नमः।
६४ ॐ हविर्दानप्रसादिन्यै नमः।
६५ ॐ रामायै नमः।
६६ ॐ रामार्चितायै नमः।
६७ ॐ राज्ञ्यै नमः।
६८ ॐ रम्यायै नमः।
६९ ॐ रवमय्यै नमः।
७० ॐ रत्यै नमः।
७१ ॐ रक्षिण्यै नमः।
७२ ॐ रमण्यै नमः।
७३ ॐ राकायै नमः।
७४ ॐ रमणीमण्डलप्रियायै नमः।
७५ ॐ रक्षिताखिललोकेशायै नमः।
७६ ॐ रक्षोगणनिषूदिन्यै नमः।
७७ ॐ अम्बायै नमः।
७८ ॐ अन्तकारिण्यै नमः।
७९ ॐ अम्भोजप्रियायै नमः।
८० ॐ अन्तकभयङ्कर्यै नमः।
८१ ॐ अम्बुरूपायै नमः।
८२ ॐ अम्बुजकरायै नमः।
८३ ॐ अम्बुजजातवरप्रदायै नमः।
८४ ॐ अन्तःपूजाप्रियायै नमः।
८५ ॐ अन्तःस्थरूपिण्यै नमः।
८६ ॐ अन्तर्वचोमय्यै नमः।
८७ ॐ अन्तकारातिवामाङ्क-
स्थितायै नमः।
८८ ॐ अन्तःसुखरूपिण्यै नमः।
८९ ॐ सर्वज्ञायै नमः।
९० ॐ सर्वगायै नमः।
९१ ॐ सारायै नमः।
९२ ॐ समायै नमः।
९३ ॐ समसुखायै नमः।
९४ ॐ सत्यै नमः।
९५ ॐ सन्तत्यै नमः।
९६ ॐ सन्ततायै नमः।
९७ ॐ सोमायै नमः।
९८ ॐ सर्वायै नमः।
९९ ॐ साङ्ख्यायै नमः।
१०० ॐ सनातन्यै नमः।

*॥ इति श्रीत्रिपुरारहस्ये श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीशिवाय नमः ॥

# श्रीशिव-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्

अष्टोत्तरशतं भूमौ स्थितं क्षेत्रं वदाम्यहम्।
कैवल्यशैले श्रीकण्ठः केदारो हिमवत्यपि॥ १ ॥
काशीपुर्यां विश्वनाथः श्रीशैले मल्लिकार्जुनः।
प्रयागे नीलकण्ठेशो गयायां रुद्रनामकः॥ २ ॥
नीलकण्ठेश्वरः साक्षात् कालञ्जरपुरे शिवः।
द्राक्षारामे तु भीमेशो मायूरे चाम्बिकेश्वरः॥ ३ ॥
ब्रह्मावर्ते देवलिङ्गं प्रभासे शशिभूषणः।
वृषध्वजाभिधः श्रीमाञ्श्वेतहस्तिपुरेश्वरः॥ ४ ॥
गोकर्णेशस्तु गोकर्णे सोमेशः सोमनाथके।
श्रीरूपाख्ये त्यागराजो वेदे वेदपुरीश्वरः॥ ५ ॥
भीमारामे तु भीमेशो मन्थने कालिकेश्वरः।
मधुरायां चोक्कनाथो मानसे माधवेश्वरः॥ ६ ॥
श्रीवाञ्छके चम्पकेशः पञ्चवट्यां वटेश्वरः।
गजारण्ये तु वैद्येशस्तीर्थाद्रौ तीर्थकेश्वरः॥ ७ ॥
कुम्भकोणे तु कुम्भेशो लेपाक्ष्यां पापनाशनः।
कण्वपुर्यां तु कण्वेशो मध्ये मध्यार्जुनेश्वरः॥ ८ ॥
हरिहरपुरे श्रीशङ्करनारायणेश्वरः।
विरञ्चिपुर्यां मार्गेशः पञ्चनद्यां गिरीश्वरः॥ ९ ॥
पम्पापुर्यां विरूपाक्षः सोमाद्रौ मल्लिकार्जुनः।
त्रिमकूटे त्वगस्त्येशः सुब्रह्मण्येऽहिपेश्वरः॥ १० ॥

महाबलेश्वरः साक्षान्महाबलशिलोच्चये।
रविणा पूजितो दक्षिणावर्तेऽर्केश्वरः स्वयम्॥ ११॥
वेदारण्ये महापुण्ये वेदारण्येश्वराभिधः।
मूर्तित्रयात्मकः सोमपुर्यां सोमेश्वराभिधः॥ १२॥
अवन्त्यां रामलिङ्गेशः काश्मीरे विजयेश्वरः।
महानन्दिपुरे साक्षान्महानन्दिपुरेश्वरः॥ १३॥
कोटितीर्थे तु कोटीशो वृद्धे वृद्धाचलेश्वरः।
महापुण्ये तत्र ककुद्गिरौ गङ्गाधरेश्वरः॥ १४॥
चामराज्याख्यनगरे चामराजेश्वरः स्वयम्।
नन्दीश्वरो नन्दिगिरौ चण्डेशो बधिराचले॥ १५॥
नञ्जुण्डेशो गरपुरे शतशृङ्गेऽधिपेश्वरः।
घनानन्दाचले सोमो नल्लूरे विमलेश्वरः॥ १६॥
नीडानाथपुरे साक्षान्नीडानाथेश्वरः स्वयम्।
एकान्ते रामलिङ्गेशः श्रीनागे कुण्डलीश्वरः॥ १७॥
श्रीकन्यायां त्रिभङ्गीश उत्सङ्गे राघवेश्वरः।
मत्स्यतीर्थे तु तीर्थेशस्त्रिकूटे ताण्डवेश्वरः॥ १८॥
प्रसन्नाख्यपुरे मार्गसहायेशो वरप्रदः।
गण्डक्यां शिवनाभस्तु श्रीपतौ श्रीपतीश्वरः॥ १९॥
धर्मपुर्यां धर्मलिङ्गं कन्याकुब्जे कलाधरः।
वाणिग्रामे विरिञ्चेशो नेपाले नकुलेश्वरः॥ २०॥

मार्कण्डेयो जगन्नाथे स्वयम्भूर्नर्मदातटे।
धर्मस्थले मञ्जुनाथो व्यासेशस्तु त्रिरूपके॥ २१॥
स्वर्णावत्यां कलिङ्गेशो निर्मले पन्नगेश्वरः।
पुण्डरीके जैमिनीशोऽयोध्यायां मधुरेश्वरः॥ २२॥
सिद्धवट्यां तु सिद्धेशः श्रीकूर्मे त्रिपुरान्तकः।
मणिकुण्डलतीर्थे तु मणिमुक्तानदीश्वरः॥ २३॥
वटाटव्यां कृत्तिवासास्त्रिवेण्यां सङ्गमेश्वरः।
स्तनिताख्ये तु मल्लेश इन्द्रकीलेऽर्जुनेश्वरः॥ २४॥
शेषाद्रौ कपिलेशस्तु पुष्पे पुष्पगिरीश्वरः।
भुवनेशश्चित्रकूटे तूज्जिन्यां कालिकेश्वरः॥ २५॥
ज्वालामुख्यां शूलटङ्को मङ्गल्यां सङ्गमेश्वरः।
बृहतीशस्तञ्जापुर्यां रामेशो वह्निपुष्करे॥ २६॥
लङ्काद्वीपे तु मत्स्येशः कूर्मेशो गन्धमादने।
विन्ध्याचले वराहेशो नृसिंहः स्यादहोबिले॥ २७॥
कुरुक्षेत्रे वामनेशस्ततः कपिलतीर्थके।
तथा परशुरामेशः सेतौ रामेश्वराभिधः॥ २८॥
साकेते बलरामेशो बौद्धेशो वारणावते।
तत्त्वक्षेत्रे च कल्कीशः कृष्णेशः स्यान्महेन्द्रके॥ २९॥

*॥ इति ललितागमे ज्ञानपादे शिवलिङ्गप्रादुर्भावपटलान्तर्गते श्रीशिवाष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

॥ श्रीशिवाय नमः ॥

# श्रीशिव-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः

१ ॐ कैवल्यशैले श्रीकण्ठाय नमः ।
२ ॐ हिमवति केदाराय नमः ।
३ ॐ काशीपुर्यां विश्वनाथाय नमः ।
४ ॐ श्रीशैले मल्लिकार्जुनाय नमः ।
५ ॐ प्रयागे नीलकण्ठेशाय नमः ।
६ ॐ गयायां रुद्राय नमः ।
७ ॐ कालञ्जरपुरे नीलकण्ठेश्वराय नमः ।
८ ॐ द्राक्षारामे भीमेशाय नमः ।
९ ॐ मायूरे अम्बिकेश्वराय नमः ।
१० ॐ ब्रह्मावर्ते देवलिङ्गाय नमः ।
११ ॐ प्रभासे शशिभूषणाय नमः ।
१२ ॐ श्वेतहस्तिपुरे श्रीमते वृष-
ध्वजाय नमः ।
१३ ॐ गोकर्णे गोकर्णेशाय नमः ।
१४ ॐ सोमनाथके सोमेशाय नमः ।
१५ ॐ श्रीरूपे त्यागराजाय नमः ।
१६ ॐ वेदे वेदपुरीश्वराय नमः ।
१७ ॐ भीमारामे भीमेशाय नमः ।
१८ ॐ मन्थने कालिकेश्वराय नमः ।
१९ ॐ मधुरायां चोक्कनाथाय नमः ।
२० ॐ मानसे माधवेश्वराय नमः ।
२१ ॐ श्रीवाञ्छके चम्पकेशाय नमः ।
२२ ॐ पञ्चवट्यां वटेश्वराय नमः ।
२३ ॐ गजारण्ये वैद्येशाय नमः ।
२४ ॐ तीर्थाद्रौ तीर्थकेश्वराय नमः ।
२५ ॐ कुम्भकोणे कुम्भेशाय नमः ।
२६ ॐ लेपाक्ष्यां पापनाशनाय नमः ।
२७ ॐ कण्वपुर्यां कण्वेशाय नमः ।
२८ ॐ मध्ये मध्यार्जुनेश्वराय नमः ।
२९ ॐ हरिहरपुरे श्रीशङ्कर-
नारायणेश्वराय नमः ।
३० ॐ विरिञ्चिपुर्यां मार्गेशाय नमः ।
३१ ॐ पञ्चनद्यां गिरीश्वराय नमः ।
३२ ॐ पम्पापुर्यां विरूपाक्षाय नमः ।
३३ ॐ सोमाद्रौ मल्लिकार्जुनाय नमः ।
३४ ॐ त्रिमकूटे अगस्त्येशाय नमः ।
३५ ॐ सुब्रह्मण्ये अहिपेश्वराय नमः ।
३६ ॐ महाबलशिलोच्चये महा-
बलेश्वराय नमः ।
३७ ॐ दक्षिणावर्ते अर्केश्वराय नमः ।
३८ ॐ महापुण्ये वेदारण्ये वेदारण्ये-
श्वराय नमः ।
३९ ॐ सोमपुर्यां मूर्तित्रयात्मकाय
सोमेश्वराय नमः ।
४० ॐ अवन्त्यां रामलिङ्गेशाय नमः ।
४१ ॐ काश्मीरे विजयेश्वराय नमः ।
४२ ॐ महानन्दिपुरे महानन्दिपुरेश्वराय नमः ।
४३ ॐ कोटितीर्थे कोटीशाय नमः ।
४४ ॐ वृद्धे वृद्धाचलेश्वराय नमः ।
४५ ॐ महापुण्ये ककुद्गिरौ
गङ्गाधरेश्वराय नमः ।
४६ ॐ चामराज्यनगरे चामराजेश्व-
राय नमः ।
४७ ॐ नन्दिगिरौ नन्दीश्वराय नमः ।

४८ ॐ बधिराचले चण्डेशाय नमः।
४९ ॐ गरपुरे नञ्जुण्डेशाय नमः।
५० ॐ शतशृङ्गे अधिपेश्वराय नमः।
५१ ॐ घनानन्दाचले सोमाय नमः।
५२ ॐ नल्लूरे विमलेश्वराय नमः।
५३ ॐ नीडानाथपुरे नीडानाथेश्वराय नमः।
५४ ॐ एकान्ते रामलिङ्गेशाय नमः।
५५ ॐ श्रीनागे कुण्डलीश्वराय नमः।
५६ ॐ श्रीकन्यायां त्रिभङ्गीशाय नमः।
५७ ॐ उत्सङ्गे राघवेश्वराय नमः।
५८ ॐ मत्स्यतीर्थे तीर्थेशाय नमः।
५९ ॐ त्रिकूटे ताण्डवेश्वराय नमः।
६० ॐ प्रसन्नपुरे मार्गसहायेशाय नमः।
६१ ॐ गण्डक्यां शिवनाभाय नमः।
६२ ॐ श्रीपतौ श्रीपतीश्वराय नमः।
६३ ॐ धर्मपुर्यां धर्मलिङ्गाय नमः।
६४ ॐ कन्याकुब्जे कलाधराय नमः।
६५ ॐ वाणिग्रामे विरिञ्चेशाय नमः।
६६ ॐ नेपाले नकुलेश्वराय नमः।
६७ ॐ जगन्नाथे मार्कण्डेयाय नमः।
६८ ॐ नर्मदातटे स्वयम्भुवे नमः।
६९ ॐ धर्मस्थले मञ्जुनाथाय नमः।
७० ॐ त्रिरूपके व्यासेशाय नमः।
७१ ॐ स्वर्णावत्यां कलिङ्गेशाय नमः।
७२ ॐ निर्मले पन्नगेश्वराय नमः।
७३ ॐ पुण्डरीके जैमिनीशाय नमः।
७४ ॐ अयोध्यायां मधुरेश्वराय नमः।
७५ ॐ सिद्धवट्यां सिद्धेशाय नमः।
७६ ॐ श्रीकूर्मे त्रिपुरान्तकाय नमः।
७७ ॐ मणिकुण्डलतीर्थे मणि-
मुक्तानदीश्वराय नमः।
७८ ॐ वटाटव्यां कृत्तिवाससे नमः।
७९ ॐ त्रिवेण्यां सङ्गमेश्वराय नमः।
८० ॐ स्तनितायां मल्लेशाय नमः।
८१ ॐ इन्द्रकीले अर्जुनेश्वराय नमः।
८२ ॐ शेषाद्रौ कपिलेशाय नमः।
८३ ॐ पुष्पे पुष्पगिरीश्वराय नमः।
८४ ॐ चित्रकूटे भुवनेशाय नमः।
८५ ॐ उज्जिन्यां कालिकेश्वराय नमः।
८६ ॐ ज्वालामुख्यां शूलटङ्काय नमः।
८७ ॐ मङ्गल्यां सङ्गमेश्वराय नमः।
८८ ॐ तञ्जापुर्यां बृहतीशाय नमः।
८९ ॐ वह्निपुष्करे रामेशाय नमः।
९० ॐ लङ्काद्वीपे मत्स्येशाय नमः।
९१ ॐ गन्धमादने कूर्मेशाय नमः।
९२ ॐ विन्ध्याचले वराहेशाय नमः।
९३ ॐ अहोबिले नृसिंहाय नमः।
९४ ॐ कुरुक्षेत्रे वामनेशाय नमः।
९५ ॐ कपिलतीर्थके परशुरामेशाय नमः।
९६ ॐ सेतौ रामेश्वराय नमः।
९७ ॐ साकेते बलरामेशाय नमः।
९८ ॐ वारणावते बौद्धेशाय नमः।
९९ ॐ तत्त्वक्षेत्रे कल्कीशाय नमः।
१०० ॐ महेन्द्रके कृष्णेशाय नमः।

*॥ इति ललितागमे ज्ञानपादे शिवलिङ्गप्रादुर्भावपटलान्तर्गते श्रीशिवाष्टोत्तरदिव्यस्थानीयनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीशक्त्यै नमः ॥

# श्रीशक्ति-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्

वाराणस्यां विशालाक्षी नैमिषे लिङ्गधारिणी।
प्रयागे ललिता देवी कामाक्षी गन्धमादने॥ १ ॥
मानसे कुमुदा नाम विश्वकाया तथाम्बरे।
गोमन्ते गोमती नाम मन्दरे कामचारिणी॥ २ ॥
मदोत्कटा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे।
कान्यकुब्जे तथा गौरी रम्भा मलयपर्वते॥ ३ ॥
एकाम्रके कीर्तिमती विश्वे विश्वेश्वरीं विदुः।
पुष्करे पुरुहूतेति केदारे मार्गदायिनी॥ ४ ॥
नन्दा हिमवतः पृष्ठे गोकर्णे भद्रकर्णिका।
स्थानेश्वरे भवानी तु बिल्वके बिल्वपत्रिका॥ ५ ॥
श्रीशैले माधवी नाम भद्रा भद्रेश्वरे तथा।
जया वराहशैले तु कमला कमलालये॥ ६ ॥
रुद्रकोट्यां च रुद्राणी काली कालञ्जरे गिरौ।
महालिङ्गे तु कपिला मर्कोटे मुकुटेश्वरी॥ ७ ॥
शालग्रामे महादेवी शिवलिङ्गे जलप्रिया।
मायापुर्यां कुमारी तु संताने ललिता तथा॥ ८ ॥
उत्पलाक्षी सहस्राक्षे कमलाक्षे महोत्पला।
गङ्गायां मङ्गला नाम विमला पुरुषोत्तमे॥ ९ ॥
विपाशायाममोघाक्षी पाटला पुण्ड्रवर्धने।
नारायणी सुपार्श्वे तु विकूटे भद्रसुन्दरी॥ १० ॥

विपुले विपुला नाम कल्याणी मलयाचले।
कोटवी कोटितीर्थे तु सुगन्धा माधवे वने॥ ११॥
कुब्जाम्रके त्रिसन्ध्या तु गङ्गाद्वारे रतिप्रिया।
शिवकुण्डे सुनन्दा तु नन्दिनी देविकातटे॥ १२॥
रुक्मिणी द्वारवत्यां तु राधा वृन्दावने वने।
देविका मथुरायां तु पाताले परमेश्वरी॥ १३॥
चित्रकूटे तथा सीता विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिनी।
सह्याद्रावेकवीरा तु हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका॥ १४॥
रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती।
करवीरे महालक्ष्मीरुमादेवी विनायके॥ १५॥
अरोगा वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी।
अभयेत्युष्णतीर्थेषु चामृता विन्ध्यकन्दरे॥ १६॥
माण्डव्ये माण्डवी नाम स्वाहा माहेश्वरे पुरे।
छागलाण्डे प्रचण्डा तु चण्डिका मकरन्दके॥ १७॥
सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती।
देवमाता सरस्वत्यां पारावारतटे मता॥ १८॥
महालये महाभागा पयोष्ण्यां पिङ्गलेश्वरी।
सिंहिका कृतशौचे तु कार्तिकेये यशस्करी॥ १९॥
उत्पलावर्तके लोला सुभद्रा शोणसङ्गमे।
माता सिद्धपुरे लक्ष्मीरङ्गना भरताश्रमे॥ २०॥

जालन्धरे विश्वमुखी तारा किष्किन्धपर्वते।
देवदारुवने पुष्टिर्मेधा काश्मीरमण्डले॥ २१॥
भीमा देवी हिमाद्रौ तु पुष्टिर्विश्वेश्वरे तथा।
कपालमोचने शुद्धिर्माता कायावरोहणे॥ २२॥
शङ्खोद्धारे ध्वनिर्नाम धृतिः पिण्डारके तथा।
काला तु चन्द्रभागायामच्छोदे शिवकारिणी॥ २३॥
वेणायाममृता नाम बदर्यामुर्वशी तथा।
औषधी चोत्तरकुरौ कुशद्वीपे कुशोदका॥ २४॥
मन्मथा हेमकूटे तु मुकुटे सत्यवादिनी।
अश्वत्थे वन्दनीया तु निधिर्वैश्रवणालये॥ २५॥
गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसन्निधौ।
देवलोके तथेन्द्राणी ब्रह्मास्येषु सरस्वती॥ २६॥
सूर्यबिम्बे प्रभा नाम मातॄणां वैष्णवी मता।
अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा॥ २७॥
चित्ते ब्रह्मकला नाम शक्तिः सर्वशरीरिणाम्।
एतदुद्देशतः प्रोक्तं नामाष्टशतमुत्तमम्॥ २८॥
अष्टोत्तरं च तीर्थानां शतमेतदुदाहृतम्।
यः पठेच्छृणुयाद् वापि सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ २९॥
एषु तीर्थेषु यः कृत्वा स्नानं पश्यति मां नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः कल्पं शिवपुरे वसेत्॥ ३०॥

*॥ इति श्रीमत्स्यमहापुराणे श्रीशक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीशक्त्यै नमः ॥

# श्रीशक्ति-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः

१ ॐ वाराणस्यां विशालाक्ष्यै नमः ।
२ ॐ नैमिषे लिङ्गधारिण्यै नमः ।
३ ॐ प्रयागे ललितादेव्यै नमः ।
४ ॐ गन्धमादने कामाक्ष्यै नमः ।
५ ॐ मानसे कुमुदायै नमः ।
६ ॐ अम्बरे विश्वकायायै नमः ।
७ ॐ गोमन्ते गोमत्यै नमः ।
८ ॐ मन्दरे कामचारिण्यै नमः ।
९ ॐ चैत्ररथे मदोत्कटायै नमः ।
१० ॐ हस्तिनापुरे जयन्त्यै नमः ।
११ ॐ कान्यकुब्जे गौर्यै नमः ।
१२ ॐ मलयपर्वते रम्भायै नमः ।
१३ ॐ एकाम्रके कीर्तिमत्यै नमः ।
१४ ॐ विश्वे विश्वेश्वर्यै नमः ।
१५ ॐ पुष्करे पुरुहूतायै नमः ।
१६ ॐ केदारे मार्गदायिन्यै नमः ।
१७ ॐ हिमवतःपृष्ठे नन्दायै नमः ।
१८ ॐ गोकर्णे भद्रकर्णिकायै नमः ।
१९ ॐ स्थानेश्वरे भवान्यै नमः ।
२० ॐ बिल्वके बिल्वपत्रिकायै नमः ।
२१ ॐ श्रीशैले माधव्यै नमः ।
२२ ॐ भद्रेश्वरे भद्रायै नमः ।
२३ ॐ वराहशैले जयायै नमः ।
२४ ॐ कमलालये कमलायै नमः ।
२५ ॐ रुद्रकोट्यां रुद्राण्यै नमः ।
२६ ॐ कालञ्जरे गिरौ काल्यै नमः ।
२७ ॐ महालिङ्गे कपिलायै नमः ।
२८ ॐ मर्कोटे मुकुटेश्वर्यै नमः ।
२९ ॐ शालग्रामे महादेव्यै नमः ।
३० ॐ शिवलिङ्गे जलप्रियायै नमः ।
३१ ॐ मायापुर्यां कुमार्यै नमः ।
३२ ॐ संताने ललितायै नमः ।
३३ ॐ सहस्राक्षे उत्पलाक्ष्यै नमः ।
३४ ॐ कमलाक्षे महोत्पलायै नमः ।
३५ ॐ गङ्गायां मङ्गलायै नमः ।
३६ ॐ पुरुषोत्तमे विमलायै नमः ।
३७ ॐ विपाशायाम् अमोघाक्ष्यै नमः ।
३८ ॐ पुण्ड्रवर्धने पाटलायै नमः ।
३९ ॐ सुपार्श्वे नारायण्यै नमः ।
४० ॐ विकूटे भद्रसुन्दर्यै नमः ।
४१ ॐ विपुले विपुलायै नमः ।
४२ ॐ मलयाचले कल्याण्यै नमः ।
४३ ॐ कोटितीर्थे कोटव्यै नमः ।
४४ ॐ माधवे वने सुगन्धायै नमः ।
४५ ॐ कुब्जाम्रके त्रिसन्ध्यायै नमः ।
४६ ॐ गङ्गाद्वारे रतिप्रियायै नमः ।
४७ ॐ शिवकुण्डे सुनन्दायै नमः ।
४८ ॐ देविकातटे नन्दिन्यै नमः ।
४९ ॐ द्वारवत्यां रुक्मिण्यै नमः ।
५० ॐ वृन्दावने वने राधायै नमः ।
५१ ॐ मथुरायां देविकायै नमः ।
५२ ॐ पाताले परमेश्वर्यै नमः ।
५३ ॐ चित्रकूटे सीतायै नमः ।
५४ ॐ विन्ध्ये विन्ध्याधिवासिन्यै नमः ।
५५ ॐ सह्याद्रौ एकवीरायै नमः ।
५६ ॐ हरिश्चन्द्रे चन्द्रिकायै नमः ।

५७ ॐ रामतीर्थे रमणायै नमः।
५८ ॐ यमुनायां मृगावत्यै नमः।
५९ ॐ करवीरे महालक्ष्म्यै नमः।
६० ॐ विनायके उमादेव्यै नमः।
६१ ॐ वैद्यनाथे अरोगायै नमः।
६२ ॐ महाकाले महेश्वर्यै नमः।
६३ ॐ उष्णतीर्थेषु अभयायै नमः।
६४ ॐ विन्ध्यकन्दरे अमृतायै नमः।
६५ ॐ माण्डव्ये माण्डव्यै नमः।
६६ ॐ माहेश्वरे पुरे स्वाहायै नमः।
६७ ॐ छागलाण्डे प्रचण्डायै नमः।
६८ ॐ मकरन्दके चण्डिकायै नमः।
६९ ॐ सोमेश्वरे वरारोहायै नमः।
७० ॐ प्रभासे पुष्करावत्यै नमः।
७१ ॐ सरस्वत्यां पारावारतटे देवमात्रे नमः।
७२ ॐ महालये महाभागायै नमः।
७३ ॐ पयोष्ण्यां पिङ्गलेश्वर्यै नमः।
७४ ॐ कृतशौचे सिंहिकायै नमः।
७५ ॐ कार्तिकेये यशस्कर्यै नमः।
७६ ॐ उत्पलावर्तके लोलायै नमः।
७७ ॐ शोणसङ्गमे सुभद्रायै नमः।
७८ ॐ सिद्धपुरे मात्रे लक्ष्म्यै नमः।
७९ ॐ भरताश्रमे अङ्गनायै नमः।
८० ॐ जालन्धरे विश्वमुख्यै नमः।
८१ ॐ किष्किन्धपर्वते तारायै नमः।
८२ ॐ देवदारुवने पुष्ट्यै नमः।
८३ ॐ काश्मीरमण्डले मेधायै नमः।
८४ ॐ हिमाद्रौ भीमादेव्यै नमः।
८५ ॐ विश्वेश्वरे पुष्ट्यै नमः।
८६ ॐ कपालमोचने शुद्ध्यै नमः।
८७ ॐ कायावरोहणे मात्रे नमः।
८८ ॐ शङ्खोद्धारे ध्वन्यै नमः।
८९ ॐ पिण्डारके धृत्यै नमः।
९० ॐ चन्द्रभागायां कालायै नमः।
९१ ॐ अच्छोदे शिवकारिण्यै नमः।
९२ ॐ वेणायाम् अमृतायै नमः।
९३ ॐ बदर्याम् उर्वश्यै नमः।
९४ ॐ उत्तरकुरौ औषध्यै नमः।
९५ ॐ कुशद्वीपे कुशोदकायै नमः।
९६ ॐ हेमकूटे मन्मथायै नमः।
९७ ॐ मुकुटे सत्यवादिन्यै नमः।
९८ ॐ अश्वत्थे वन्दनीयायै नमः।
९९ ॐ वैश्रवणालये निधये नमः।
१०० ॐ वेदवदने गायत्र्यै नमः।
१०१ ॐ शिवसन्निधौ पार्वत्यै नमः।
१०२ ॐ देवलोके इन्द्राण्यै नमः।
१०३ ॐ ब्रह्मास्येषु सरस्वत्यै नमः।
१०४ ॐ सूर्यबिम्बे प्रभायै नमः।
१०५ ॐ मातॄणां वैष्णव्यै नमः।
१०६ ॐ सतीनां अरुन्धत्यै नमः।
१०७ ॐ रामासु तिलोत्तमायै नमः।
१०८ ॐ सर्वशरीरिणां चित्ते ब्रह्मकलानामशक्त्यै नमः।

*॥ इति श्रीमत्स्यमहापुराणे श्रीशक्त्यष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीविष्णवे नमः ॥

# श्रीविष्णु-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्

अष्टोत्तरशतस्थानेष्वाविर्भूतं जगत्पतिम्।
नमामि जगतामीशं नारायणमनन्यधीः॥ १ ॥
श्रीवैकुण्ठे वासुदेवमामोदे कर्षणाह्वयम्।
प्रद्युम्नं च प्रमोदाख्ये सम्मोदे चानिरुद्धकम्॥ २ ॥
सत्यलोके तथा विष्णुं पद्माक्षं सूर्यमण्डले।
क्षीराब्धौ शेषशयनं श्वेतद्वीपे तु तारकम्॥ ३ ॥
नारायणं बदर्याख्ये नैमिषे हरिमव्ययम्।
शालग्रामं हरिक्षेत्रे अयोध्यायां रघूत्तमम्॥ ४ ॥
मथुरायां बालकृष्णं मायायां मधुसूदनम्।
काश्यां तु भोगशयनमवन्त्यामवनीपतिम्॥ ५ ॥
द्वारवत्यां यादवेन्द्रं व्रजे गोपीजनप्रियम्।
वृन्दावने नन्दसूनुं गोविन्दं कालियह्रदे॥ ६ ॥
गोवर्धने गोपवेषं भवघ्नं भक्तवत्सलम्।
गोमन्तपर्वते शौरिं हरिद्वारे जगत्पतिम्॥ ७ ॥
प्रयागे माधवं चैव गयायां तु गदाधरम्।
गङ्गासागरगे विष्णुं चित्रकूटे तु राघवम्॥ ८ ॥
नन्दिग्रामे राक्षसघ्नं प्रभासे विश्वरूपिणम्।
श्रीकूर्मे कूर्ममचलं नीलाद्रौ पुरुषोत्तमम्॥ ९ ॥
सिंहाचले महासिंहं गदिनं तुलसीवने।
घृतशैले पापहरं श्वेताद्रौ सिंहरूपिणम्॥ १० ॥

योगानन्दं धर्मपुर्यां काकुले त्वान्ध्रनायकम्।
अहोबिले गारुडाद्रौ हिरण्यासुरमर्दनम्॥ ११॥
विट्ठलं पाण्डुरङ्गे तु वेङ्कटाद्रौ रमासखम्।
नारायणं यादवाद्रौ नृसिंहं घटिकाचले॥ १२॥
वरदं वारणगिरौ काञ्च्यां कमललोचनम्।
यथोक्तकारिणं चैव परमेशपुराश्रयम्॥ १३॥
पाण्डवानां तथा दूतं त्रिविक्रममथोन्नतम्।
कामासिक्यां नृसिंहं च तथाष्टभुजसंज्ञकम्॥ १४॥
मेघाकारं शुभाकारं शेषाकारं तु शोभनम्।
अन्तरा शितिकण्ठस्य कामकोट्यां शुभप्रदम्॥ १५॥
कालमेघं खगारूढं कोटिसूर्यसमप्रभम्।
दिव्यं दीपप्रकाशं च देवानामधिपं मुने॥ १६॥
प्रवालवर्णं दीपाभं काञ्च्यामष्टादशस्थितम्।
श्रीगृध्रसरसस्तीरे भान्तं विजयराघवम्॥ १७॥
वीक्षारण्ये महापुण्ये शयानं वीरराघवम्।
तोताद्रौ तुङ्गशयनं गजार्तिघ्नं गजस्थले॥ १८॥
महाबलं बलिपुरे भक्तिसारे जगत्पतिम्।
महावराहं श्रीमुष्णे महीन्द्रे पद्मलोचनम्॥ १९॥
श्रीरङ्गे तु जगन्नाथं श्रीधामे जानकीप्रियम्।
सारक्षेत्रे सारनाथं खण्डने हरचापहम्॥ २०॥
श्रीनिवासस्थले पूर्णं सुवर्णं स्वर्णमन्दिरे।
व्याघ्रपुर्यां महाविष्णुं भक्तिस्थाने तु भक्तिदम्॥ २१॥

श्वेतह्रदे शान्तमूर्तिमग्निपुर्यां सुरप्रियम्।
भर्गाख्यं भार्गवस्थाने वैकुण्ठाख्ये तु माधवम्॥ २२॥
पुरुषोत्तमे भक्तसखं चक्रतीर्थे सुदर्शनम्।
कुम्भकोणे चक्रपाणिं भूतस्थाने तु शार्ङ्गिणम्॥ २३॥
कपिस्थले गजार्तिघ्नं गोविन्दं चित्रकूटके।
अनुत्तमं चोत्तमायां श्वेताद्रौ पद्मलोचनम्॥ २४॥
पार्थस्थले परब्रह्म कृष्णाकोट्यां मधुद्विषम्।
नन्दपुर्यां महानन्दं वृद्धपुर्यां वृषाश्रयम्॥ २५॥
असङ्गं सङ्गमग्रामे शरण्ये शरणं महत्।
दक्षिणद्वारकायां तु गोपालं जगतां पतिम्॥ २६॥
सिंहक्षेत्रे महासिंहं मल्लारिं मणिमण्डपे।
निबिडे निबिडाकारं धानुष्के जगदीश्वरम्॥ २७॥
मौहूरे कालमेघं तु मधुरायां तु सुन्दरम्।
वृषभाद्रौ महापुण्ये परमस्वामिसंज्ञकम्॥ २८॥
श्रीमद्वरगुणे नाथं कुरुकायां रमासखम्।
गोष्ठीपुरे गोष्ठपतिं शयानं दर्भसंस्तरे॥ २९॥
धन्विमङ्गलके शौरिं बलाढ्यं भ्रमरस्थले।
कुरङ्गे तु तथा पूर्णं कृष्णमेकं वटस्थले॥ ३०॥
अच्युतं क्षुद्रनद्यां तु पद्मनाभमनन्तके।
एतानि विष्णोः स्थानानि पूजितानि महात्मभिः॥ ३१॥
अधिष्ठितानि देवेश तत्रासीनं च माधवम्।
यः स्मरेत्सततं भक्त्या चेतसानन्यगामिना॥ ३२॥

स विधूयातिसंसारबन्धं याति हरेः पदम्।
अष्टोत्तरशतं विष्णोः स्थानानि पठता स्वयम्॥ ३३॥
अधीताः सकला वेदाः कृताश्च विविधा मखाः।
सम्पादिता तथा मुक्तिः परमानन्ददायिनी॥ ३४॥
अवगाढानि तीर्थानि ज्ञातः स भगवान् हरिः।
आद्यमेतत्स्वयं व्यक्तं विमानं रङ्गसंज्ञकम्।
श्रीमुष्णं वेङ्कटाद्रिं च शालग्रामं च नैमिषम्॥ ३५॥
तोताद्रिं पुष्करं चैव नरनारायणाश्रमम्।
अष्टौ मे मूर्तयः सन्ति स्वयं व्यक्ता महीतले॥ ३६॥

*॥ इति श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीविष्णवे नमः ॥

# श्रीविष्णु-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः

१ ॐ श्रीवैकुण्ठे वासुदेवाय नमः।
२ ॐ आमोदे कर्षणाय नमः।
३ ॐ प्रमोदे प्रद्युम्नाय नमः।
४ ॐ सम्मोदे अनिरुद्धाय नमः।
५ ॐ सत्यलोके विष्णवे नमः।
६ ॐ सूर्यमण्डले पद्माक्षाय नमः।
७ ॐ क्षीराब्धौ शेषशयनाय नमः।
८ ॐ श्वेतद्वीपे तारकाय नमः।
९ ॐ बदर्यां नारायणाय नमः।
१० ॐ नैमिषे हरये नमः।
११ ॐ हरिक्षेत्रे शालग्रामाय नमः।
१२ ॐ अयोध्यायां रघूत्तमाय नमः।
१३ ॐ मथुरायां बालकृष्णाय नमः।
१४ ॐ मायायां मधुसूदनाय नमः।
१५ ॐ काश्यां भोगशयनाय नमः।
१६ ॐ अवन्त्याम् अवनीपतये नमः।
१७ ॐ द्वारवत्यां यादवेन्द्राय नमः।
१८ ॐ व्रजे गोपीजनप्रियाय नमः।
१९ ॐ वृन्दावने नन्दसूनवे नमः।
२० ॐ कालियह्रदे गोविन्दाय नमः।
२१ ॐ गोवर्धने गोपवेषाय नमः।
२२ ॐ गोमन्तपर्वते शौरये नमः।
२३ ॐ हरिद्वारे जगत्पतये नमः।
२४ ॐ प्रयागे माधवाय नमः।
२५ ॐ गयायां गदाधराय नमः।
२६ ॐ गङ्गासागरगे विष्णवे नमः।
२७ ॐ चित्रकूटे राघवाय नमः।
२८ ॐ नन्दिग्रामे राक्षसघ्नाय नमः।
२९ ॐ प्रभासे विश्वरूपाय नमः।
३० ॐ श्रीकूर्मे कूर्माचलाय नमः।
३१ ॐ नीलाद्रौ पुरुषोत्तमाय नमः।
३२ ॐ सिंहाचले महासिंहाय नमः।
३३ ॐ तुलसीवने गदिनाय नमः।
३४ ॐ घृतशैले पापहराय नमः।
३५ ॐ श्वेताद्रौ सिंहरूपाय नमः।
३६ ॐ धर्मपुर्यां योगानन्दाय नमः।
३७ ॐ काकुले आन्ध्रनायकाय नमः।
३८ ॐ गारुडाद्रौ अहोबिले हिरण्यासुरमर्दनाय नमः।
३९ ॐ पाण्डुरङ्गे विट्ठलाय नमः।
४० ॐ वेङ्कटाद्रौ रमासखाय नमः।
४१ ॐ यादवाद्रौ नारायणाय नमः।
४२ ॐ घटिकाचले नृसिंहाय नमः।
४३ ॐ काञ्च्यां वारणगिरौ कमललोचनवरदाय नमः।
४४ ॐ काञ्च्यां परमेशपुरे यथोक्तकारिणे नमः।
४५ ॐ काञ्च्यां पाण्डवदूताय नमः।
४६ ॐ काञ्च्यां त्रिविक्रमाय नमः।
४७ ॐ काञ्च्यां कामासिक्यां नृसिंहाय नमः।
४८ ॐ काञ्च्यां कामासिक्यां अष्टभुजाय नमः।
४९ ॐ काञ्च्यां मेघाकाराय नमः।
५० ॐ काञ्च्यां शुभाकाराय नमः।
५१ ॐ काञ्च्यां शेषाकाराय नमः।
५२ ॐ काञ्च्यां शोभनाय नमः।
५३ ॐ काञ्च्यां कामकोट्यां शुभप्रदाय नमः।

५४ ॐ काञ्च्यां कालमेघाय नमः।
५५ ॐ काञ्च्यां खगारूढाय नमः।
५६ ॐ काञ्च्यां कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः।
५७ ॐ काञ्च्यां दिव्याय नमः।
५८ ॐ काञ्च्यां दीपप्रकाशाय नमः।
५९ ॐ काञ्च्यां प्रवालवर्णाय नमः।
६० ॐ काञ्च्यां दीपाभाय नमः।
६१ ॐ श्रीगृध्रसरसस्तीरे विजय-राघवाय नमः।
६२ ॐ महापुण्ये वीक्षारण्ये वीर-राघवाय नमः।
६३ ॐ तोताद्रौ तुङ्गशयनाय नमः।
६४ ॐ गजस्थले गजार्तिघ्नाय नमः।
६५ ॐ बलिपुरे महाबलाय नमः।
६६ ॐ भक्तिसारे जगत्पतये नमः।
६७ ॐ श्रीमुष्णे महावराहाय नमः।
६८ ॐ महीन्द्रे पद्मलोचनाय नमः।
६९ ॐ श्रीरङ्गे जगन्नाथाय नमः।
७० ॐ श्रीधामे जानकीप्रियाय नमः।
७१ ॐ सारक्षेत्रे सारनाथाय नमः।
७२ ॐ खण्डने हरचापहाय नमः।
७३ ॐ श्रीनिवासस्थले पूर्णाय नमः।
७४ ॐ स्वर्णमन्दिरे सुवर्णाय नमः।
७५ ॐ व्याघ्रपुर्यां महाविष्णवे नमः।
७६ ॐ भक्तिस्थाने भक्तिदाय नमः।
७७ ॐ श्वेतह्रदे शान्तमूर्तये नमः।
७८ ॐ अग्निपुर्यां सुरप्रियाय नमः।
७९ ॐ भार्गवस्थाने भर्गाय नमः।
८० ॐ वैकुण्ठे माधवाय नमः।
८१ ॐ पुरुषोत्तमे भक्तसखाय नमः।
८२ ॐ चक्रतीर्थे सुदर्शनाय नमः।
८३ ॐ कुम्भकोणे चक्रपाणये नमः।
८४ ॐ भूतस्थाने शार्ङ्गिणाय नमः।
८५ ॐ कपिस्थले गजार्तिघ्नाय नमः।
८६ ॐ चित्रकूटके गोविन्दाय नमः।
८७ ॐ उत्तमायाम् अनुत्तमाय नमः।
८८ ॐ श्वेताद्रौ पद्मलोचनाय नमः।
८९ ॐ पार्थस्थले परब्रह्मणे नमः।
९० ॐ कृष्णाकोट्यां मधुद्विषे नमः।
९१ ॐ नन्दपुर्यां महानन्दाय नमः।
९२ ॐ वृद्धपुर्यां वृषाश्रयाय नमः।
९३ ॐ सङ्गमग्रामे असङ्गाय नमः।
९४ ॐ शरण्ये शरणाय नमः।
९५ ॐ दक्षिणद्वारकायां गोपालाय नमः।
९६ ॐ सिंहक्षेत्रे महासिंहाय नमः।
९७ ॐ मणिमण्डपे मल्लारये नमः।
९८ ॐ निबिडे निबिडाकाराय नमः।
९९ ॐ धानुष्के जगदीश्वराय नमः।
१०० ॐ मौहूरे कालमेघाय नमः।
१०१ ॐ मधुरायां सुन्दराय नमः।
१०२ ॐ वृषभाद्रौ परमस्वामिने नमः।
१०३ ॐ श्रीमद्वरगुणे नाथाय नमः।
१०४ ॐ कुरुकायां रमासखये नमः।
१०५ ॐ गोष्ठीपुरे गोष्ठपतये नमः।
१०६ ॐ दर्भसंस्तरे शयानाय नमः।
१०७ ॐ धन्विमङ्गलके शौरये नमः।
१०८ ॐ भ्रमरस्थले बलाढ्याय नमः।
१०९ ॐ कुरङ्गे पूर्णाय नमः।
११० ॐ वटस्थले कृष्णाय नमः।
१११ ॐ क्षुद्रनद्यां अच्युताय नमः।
११२ ॐ अनन्तके पद्मनाभाय नमः।

*॥ इति श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥

# श्रीब्रह्मा-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रम्

एवं ते कथितं देवि पूजामाहात्म्यमुत्तमम्।
प्रभासक्षेत्रमाहात्म्यं ब्रह्मणो बालरूपिणः॥ १ ॥
तस्याहं कथयिष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
प्रदत्त्वा च पठित्वा च यज्ञायुतफलं लभेत्॥ २ ॥
गायत्र्या लक्षजाप्येन सम्यग्जप्तेन यत्फलम्।
तत्फलं समवाप्नोति स्तोत्रस्यास्य उदीरणात्॥ ३ ॥
इदं स्तोत्रवरं दिव्यं रहस्यं पापनाशनम्।
न देयं दुष्टबुद्धीनां निन्दकानां तथैव च॥ ४ ॥
ब्राह्मणाय प्रदातव्यं श्रोत्रियाय महात्मने।
विष्णुना हि पुरा पृष्टं ब्रह्मणः स्तोत्रमुत्तमम्॥ ५ ॥
केषु केषु च स्थानेषु देवदेव पितामह।
सञ्चिन्त्यस्तन्ममाचक्ष्व त्वं हि सर्वविदुत्तम॥ ६ ॥

*ब्रह्मोवाच*

पुष्करेऽहं सुरश्रेष्ठो गयायां प्रपितामहः।
कान्यकुब्जे वेदगर्भो भृगुक्षेत्रे चतुर्मुखः॥ ७ ॥
कौबेर्यां सृष्टिकर्ता च नन्दिपुर्यां बृहस्पतिः।
प्रभासे बालरूपी च वाराणस्यां सुरप्रियः॥ ८ ॥
द्वारावत्यां चक्रदेवो वैदिशे भुवनाधिपः।
पौण्ड्रके पुण्डरीकाक्षः पीताक्षो हस्तिनापुरे॥ ९ ॥
जयन्त्यां विजयश्चासौ जयन्तः पुरुषोत्तमे।
वाडेषु पद्महस्तोऽहं तमोलिप्ते तमोनुदः॥ १० ॥

आहिच्छत्र्यां जनानन्दः काञ्चीपुर्यां जनप्रियः।
कर्णाटस्य पुरे ब्रह्मा ऋषिकुण्डे मुनिस्तथा॥ ११॥
श्रीकण्ठे श्रीनिवासश्च कामरूपे शुभङ्करः।
उड्डियाने देवकर्ता स्त्रष्टा जालन्धरे तथा॥ १२॥
मल्लिकाख्ये तथा विष्णुर्महेन्द्रे भार्गवस्तथा।
गोमदे स्थविराकार उज्जयिन्यां पितामहः॥ १३॥
कौशाम्ब्यां तु महादेवो ह्ययोध्यायां तु राघवः।
विरञ्चिश्चित्रकूटे तु वाराहो विन्ध्यपर्वते॥ १४॥
गङ्गाद्वारे सुरश्रेष्ठो हिमवन्ते तु शङ्करः।
देहिकायां स्त्रुचाहस्तः पद्महस्तस्तथार्बुदे॥ १५॥
वृन्दावने पद्मनेत्रः कुशहस्तश्च नैमिषे।
गोपक्षेत्रे च गोविन्दः सुरेन्द्रो यमुनातटे॥ १६॥
भागीरथ्यां पद्मतनुर्जनानन्दो जनस्थले।
कोङ्कणे च स मध्वक्षः काम्पिल्ये कनकप्रभः॥ १७॥
खेटके चान्नदाता च शम्भुश्चैव क्रतुस्थले।
लङ्कायां चैव पौलस्त्यः काश्मीरे हंसवाहनः॥ १८॥
वसिष्ठश्चार्बुदे चैव नारदश्चोत्पलावने।
मेधके श्रुतिदाता च प्रयागे यजुषां पतिः॥ १९॥
शिवलिङ्गे सामवेदो मार्कण्डे च मधुप्रियः।
नारायणश्च गोमन्ते विदर्भायां द्विजप्रियः॥ २०॥
अङ्कुलके ब्रह्मगर्भो ब्रह्मवाहे सुतप्रियः।
इन्द्रप्रस्थे दुराधर्षः पम्पायां च सुदर्शनः॥ २१॥

विरजायां महारूपः सुरूपो राष्ट्रवर्धने।
कदम्बके जनाध्यक्षो देवाध्यक्षः समस्थले॥ २२॥
गङ्गाधरो रुद्रपीठे सुपीठे जलदः स्मृतः।
त्र्यम्बके त्रिपुरारिश्च श्रीशैले च त्रिलोचनः॥ २३॥
महादेवः प्लक्षपुरे कपाले वेधनाशनः।
शृङ्गवेरपुरे शौरिर्निमिषे चक्रधारकः॥ २४॥
नन्दिपुर्यां विरूपाक्षो गौतमः प्लक्षपादपे।
माल्यवान् हस्तिनाथे तु द्विजेन्द्रो वाचिके तथा॥ २५॥
इन्द्रपुर्यां दिवानाथो भूतिकायां पुरन्दरः।
हंसबाहुश्च चन्द्रायां चम्पायां गरुडप्रियः॥ २६॥
महोदये महायक्षः सुयज्ञः पूतके वने।
सिद्धेश्वरे शुक्लवर्णो विभायां पद्मबोधकः॥ २७॥
देवदारुवने लिङ्गी उदकेऽथ उमापतिः।
विनायको मातृस्थाने अलकायां धनाधिपः॥ २८॥
त्रिकूटे चैव गोविन्दः पाताले वासुकिस्तथा।
कोविदारे युगाध्यक्षः स्त्रीराज्ये च सुरप्रियः॥ २९॥
पूर्णगिर्यां सुभोगश्च शाल्मल्यां तक्षकस्तथा।
अमरे पापहा चैव अम्बिकायां सुदर्शनः॥ ३०॥
नरवाप्यां महावीरः कान्तारे दुर्गनाशनः॥ ३१॥
पद्मवत्यां पद्मगृहो गगने मृगलाञ्छनः।
अष्टोत्तरं नामशतं यत्रैतत्परिपठ्यते॥ ३२॥

तत्रैव मम सान्निध्यं त्रिसन्ध्यं मधुसूदन।
एतेषामपि यस्त्वेकं पश्येद् वै बालरूपिणम्।
सर्वेषां लभते पुण्यं पूर्वोक्तानां च वेधसाम्॥ ३३॥
एतैर्यो नामभिः कृष्ण प्रभासे स्तौति मां सदा।
स्थानं मे विजयं लब्ध्वा मोदते शाश्वतीः समाः॥ ३४॥
मानसं वाचिकं चैव कायिकं चैव दुष्कृतम्।
तत्सर्वं नाशमायाति मम स्तोत्रानुकीर्तनात्॥ ३५॥
पुष्पोपहारैर्धूपैश्च ब्राह्मणानां च तर्पणैः।
ध्यानेन च स्थिरेणाशु प्राप्यते यत्फलं नरैः।
तत्फलं समवाप्नोति मम स्तोत्रानुकीर्तनात्॥ ३६॥
ब्रह्महत्यादिपापानि इह लोके कृतान्यपि।
अकामतः कामतो वा तानि नश्यन्ति तत्क्षणात्॥ ३७॥
इदं स्तोत्रं ममाभीष्टं शृणुयाद्वा पठेच्च वा।
स मुक्तः पातकैः सर्वैः प्राप्नुयान्महदीप्सितम्॥ ३८॥

*॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे प्रभासखण्डे महादेवप्रोक्तं*
*श्रीब्रह्माष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥

# श्रीब्रह्मा-अष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः

१ ॐ पुष्करे सुरश्रेष्ठाय नमः।
२ ॐ गयायां प्रपितामहाय नमः।
३ ॐ कान्यकुब्जे वेदगर्भाय नमः।
४ ॐ भृगुक्षेत्रे चतुर्मुखाय नमः।
५ ॐ कौबेर्यां सृष्टिकर्त्रे नमः।
६ ॐ नन्दिपुर्यां बृहस्पतये नमः।
७ ॐ प्रभासे बालरूपिणे नमः।
८ ॐ वाराणस्यां सुरप्रियाय नमः।
९ ॐ द्वारावत्यां चक्रदेवाय नमः।
१० ॐ वैदिशे भुवनाधिपाय नमः।
११ ॐ पौण्ड्रके पुण्डरीकाक्षाय नमः।
१२ ॐ हस्तिनापुरे पीताक्षाय नमः।
१३ ॐ जयन्त्यां विजयाय नमः।
१४ ॐ पुरुषोत्तमे जयन्ताय नमः।
१५ ॐ वाडेषु पद्महस्ताय नमः।
१६ ॐ तमोलिप्ते तमोनुदाय नमः।
१७ ॐ आहिच्छत्र्यां जनानन्दाय नमः।
१८ ॐ काञ्चीपुर्यां जनप्रियाय नमः।
१९ ॐ कर्णाटस्य पुरे ब्रह्मणे नमः।
२० ॐ ऋषिकुण्डे मुनये नमः।
२१ ॐ श्रीकण्ठे श्रीनिवासाय नमः।
२२ ॐ कामरूपे शुभङ्कराय नमः।
२३ ॐ उड्डियाने देवकर्त्रे नमः।
२४ ॐ जालन्धरे स्त्रष्ट्रे नमः।
२५ ॐ मल्लिकायां विष्णवे नमः।
२६ ॐ महेन्द्रे भार्गवाय नमः।
२७ ॐ गोमदे स्थविराकाराय नमः।
२८ ॐ उज्जयिन्यां पितामहाय नमः।
२९ ॐ कौशाम्ब्यां महादेवाय नमः।
३० ॐ अयोध्यायां राघवाय नमः।
३१ ॐ चित्रकूटे विरञ्चये नमः।
३२ ॐ विन्ध्यपर्वते वाराहाय नमः।
३३ ॐ गङ्गाद्वारे सुरश्रेष्ठाय नमः।
३४ ॐ हिमवन्ते शङ्कराय नमः।
३५ ॐ देहिकायां स्त्रुचाहस्ताय नमः।
३६ ॐ अर्बुदे पद्महस्ताय नमः।
३७ ॐ वृन्दावने पद्मनेत्राय नमः।
३८ ॐ नैमिषे कुशहस्ताय नमः।
३९ ॐ गोपक्षेत्रे गोविन्दाय नमः।
४० ॐ यमुनातटे सुरेन्द्राय नमः।
४१ ॐ भागीरथ्यां पद्मतनवे नमः।
४२ ॐ जनस्थले जनानन्दाय नमः।
४३ ॐ कोङ्कणे मध्वक्षाय नमः।
४४ ॐ काम्पिल्ये कनकप्रभाय नमः।
४५ ॐ खेटके अन्नदात्रे नमः।
४६ ॐ क्रतुस्थले शम्भवे नमः।
४७ ॐ लङ्कायां पौलस्त्याय नमः।
४८ ॐ काश्मीरे हंसवाहनाय नमः।
४९ ॐ अर्बुदे वसिष्ठाय नमः।
५० ॐ उत्पलावने नारदाय नमः।
५१ ॐ मेधके श्रुतिदात्रे नमः।
५२ ॐ प्रयागे यजुषां पतये नमः।
५३ ॐ शिवलिङ्गे सामवेदाय नमः।
५४ ॐ मार्कण्डे मधुप्रियाय नमः।
५५ ॐ गोमन्ते नारायणाय नमः।
५६ ॐ विदर्भायां द्विजप्रियाय नमः।

५७ ॐ अङ्कुलके ब्रह्मगर्भाय नमः ।
५८ ॐ ब्रह्मवाहे सुतप्रियाय नमः ।
५९ ॐ इन्द्रप्रस्थे दुराधर्षाय नमः ।
६० ॐ पम्पायां सुदर्शनाय नमः ।
६१ ॐ विरजायां महारूपाय नमः ।
६२ ॐ राष्ट्रवर्धने सुरूपाय नमः ।
६३ ॐ कदम्बके जनाध्यक्षाय नमः ।
६४ ॐ समस्थले देवाध्यक्षाय नमः ।
६५ ॐ रुद्रपीठे गङ्गाधराय नमः ।
६६ ॐ सुपीठे जलदाय नमः ।
६७ ॐ त्र्यम्बके त्रिपुरारये नमः ।
६८ ॐ श्रीशैले त्रिलोचनाय नमः ।
६९ ॐ प्लक्षपुरे महादेवाय नमः ।
७० ॐ कपाले वेधनाशनाय नमः ।
७१ ॐ शृङ्गवेरपुरे शौरये नमः ।
७२ ॐ निमिषे चक्रधारकाय नमः ।
७३ ॐ नन्दिपुर्यां विरूपाक्षाय नमः ।
७४ ॐ प्लक्षपादपे गौतमाय नमः ।
७५ ॐ हस्तिनाथे माल्यवते नमः ।
७६ ॐ वाचिके द्विजेन्द्राय नमः ।
७७ ॐ इन्द्रपुर्यां दिवानाथाय नमः ।
७८ ॐ भूतिकायां पुरन्दराय नमः ।
७९ ॐ चन्द्रायां हंसबाहवे नमः ।
८० ॐ चम्पायां गरुडप्रियाय नमः ।
८१ ॐ महोदये महायक्षाय नमः ।
८२ ॐ पूतके वने सुयज्ञाय नमः ।
८३ ॐ सिद्धेश्वरे शुक्लवर्णाय नमः ।
८४ ॐ विभायां पद्मबोधकाय नमः ।
८५ ॐ देवदारुवने लिङ्गिने नमः ।
८६ ॐ उदके उमापतये नमः ।
८७ ॐ मातृस्थाने विनायकाय नमः ।
८८ ॐ अलकायां धनाधिपाय नमः ।
८९ ॐ त्रिकूटे गोविन्दाय नमः ।
९० ॐ पाताले वासुकये नमः ।
९१ ॐ कोविदारे युगाध्यक्षाय नमः ।
९२ ॐ स्त्रीराज्ये सुरप्रियाय नमः ।
९३ ॐ पूर्णगिर्यां सुभोगाय नमः ।
९४ ॐ शाल्मल्यां तक्षकाय नमः ।
९५ ॐ अमरे पापघ्ने नमः ।
९६ ॐ अम्बिकायां सुदर्शनाय नमः ।
९७ ॐ नरवाप्यां महावीराय नमः ।
९८ ॐ कान्तारे दुर्गनाशनाय नमः ।
९९ ॐ पद्मवत्यां पद्मगृहाय नमः ।
१०० ॐ गगने मृगलाञ्छनाय नमः ।

*॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे प्रभासखण्डे महादेवप्रोक्ता श्रीब्रह्माष्टोत्तरशतदिव्यस्थानीयनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीअर्धनारीश्वराय नमः ॥

# श्रीअर्धनारीश्वर-अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

[ स्तोत्रात्मकनामावलिः ]

महाकैलासशिखरनिलयाय नमो नमः ।
समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै नमो नमः ॥ १ ॥
अपाकृतमहादेवीपुरःस्थाय नमो नमः ।
पुनरावृत्तिरहितपुरःस्थायै नमो नमः ॥ २ ॥
अनन्तानन्दबोधाम्बुनिधिस्थाय नमो नमः ।
रजताचलशृङ्गाग्रगृहस्थाय नमो नमः ॥ ३ ॥
हिमाचलेन्द्रतनयावल्लभाय नमो नमः ।
शशाङ्कशेखरप्राणवल्लभायै नमो नमः ॥ ४ ॥
वामभागकलत्रार्धशरीराय नमो नमः ।
शङ्करार्धाङ्गसौन्दर्यशरीरिण्यै नमो नमः ॥ ५ ॥
विलसद्दिव्यकर्पूरगौराङ्गाय नमो नमः ।
चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै नमो नमः ॥ ६ ॥
अखण्डसच्चिदानन्दविग्रहाय नमो नमः ।
लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै नमो नमः ॥ ७ ॥
षोडशाब्दवयोयुक्तदिव्याङ्गाय नमो नमः ।
सहस्त्ररतिसौन्दर्यशरीरिण्यै नमो नमः ॥ ८ ॥
कोटिकन्दर्पसदृशलावण्याय नमो नमः ।
महातिशयसर्वाङ्गलावण्यायै नमो नमः ॥ ९ ॥
रत्नमौक्तिकवैडूर्यकिरीटाय नमो नमः ।
वज्रमाणिक्यकनककिरीटिन्यै नमो नमः ॥ १० ॥
मन्दाकिनीजलोपेतमूर्धजाय नमो नमः ।
भस्मरेखाङ्कितलसन्मस्तकायै नमो नमः ॥ ११ ॥
चारुशीतांशुशकलशेखराय नमो नमः ।
शशाङ्कखण्डसंयुक्तमुकुटायै नमो नमः ॥ १२ ॥

त्रिपुण्ड्रविलसत्फालफलकाय नमो नमः ।
कस्तूरीतिलकोद्भासिनिटिलायै नमो नमः ॥ १३ ॥
सोमपावकमार्तण्डलोचनाय नमो नमः ।
प्रफुल्लाम्भोरुहदललोचनायै नमो नमः ॥ १४ ॥
नासाग्रन्यस्तनिटिललोचनाय नमो नमः ।
भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै नमो नमः ॥ १५ ॥
वासुकितक्षकलसत्कुण्डलाय नमो नमः ।
लसत्काञ्चनताटङ्कयुगलायै नमो नमः ॥ १६ ॥
चारुप्रसन्नसुस्मेरवदनाय नमो नमः ।
ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै नमो नमः ॥ १७ ॥
हिरण्यज्योतिर्विभ्राजत्सुप्रभाय नमो नमः ।
मणिदर्पणसङ्काशकपोलायै नमो नमः ॥ १८ ॥
समुद्रोद्भूतगरलकन्धराय नमो नमः ।
कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै नमो नमः ॥ १९ ॥
सौदामिनीसमच्छायसुवस्त्राय नमो नमः ।
सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै नमो नमः ॥ २० ॥
अनेकरत्नमाणिक्यसुहाराय नमो नमः ।
स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै नमो नमः ॥ २१ ॥
मौक्तिकस्वर्णरुद्राक्षमालिकाय नमो नमः ।
पद्मकैरवमन्दारमालिकायै नमो नमः ॥ २२ ॥
परश्वधलसद्दिव्यकराब्जाय नमो नमः ।
पद्मपाशाङ्कुशलसत्कराब्जायै नमो नमः ॥ २३ ॥
वराभयप्रदकरयुगलाय नमो नमः ।
वराभीतिप्रदानश्रीहस्ताब्जायै नमो नमः ॥ २४ ॥
कुरङ्गविलसत्पाणिकमलाय नमो नमः ।
रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै नमो नमः ॥ २५ ॥
नागयज्ञोपवीतोपशोभिताय नमो नमः ।
गिरीशबद्धमाङ्गल्यसूत्रिकायै नमो नमः ॥ २६ ॥

मत्तमातङ्गसत्कृत्तिवसनाय नमो नमः ।
विद्युत्सन्निभसौवर्णवसनायै नमो नमः ॥ २७ ॥
महापञ्चाक्षरीमन्त्रस्वरूपाय नमो नमः ।
श्रीपञ्चदशवर्णैकस्वरूपायै नमो नमः ॥ २८ ॥
शिञ्जानमणिमञ्जीरचरणाय नमो नमः ।
सुपद्मरागसङ्काशचरणायै नमो नमः ॥ २९ ॥
सहस्रकोटितपनसङ्काशाय नमो नमः ।
सहस्रकोटिसूर्येन्दुप्रकाशायै नमो नमः ॥ ३० ॥
चक्राब्जध्वजयुक्ताङ्घ्रिसरोजाय नमो नमः ।
राजराजार्चितपदसरोजायै नमो नमः ॥ ३१ ॥
मुरारिनेत्रपूज्याङ्घ्रिपङ्कजाय नमो नमः ।
पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै नमो नमः ॥ ३२ ॥
मन्दारमल्लिकादामभूषणाय नमो नमः ।
कनकाङ्गदकेयूरभूषितायै नमो नमः ॥ ३३ ॥
अज्ञानतिमिरध्वंसभास्कराय नमो नमः ।
श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै नमो नमः ॥ ३४ ॥
कमलाभारतीन्द्राणीसेविताय नमो नमः ।
शचीमुख्यामरवधूसेवितायै नमो नमः ॥ ३५ ॥
अपर्णाकुचकस्तूरीरञ्जिताय नमो नमः ।
दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै नमो नमः ॥ ३६ ॥
गुहमत्तेभवदनजनकाय नमो नमः ।
मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै नमो नमः ॥ ३७ ॥
चराचरस्थूलसूक्ष्मकल्पकाय नमो नमः ।
सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै नमो नमः ॥ ३८ ॥
निगमान्तवचोऽगम्यवैभवाय नमो नमः ।
देवर्षिस्तूयमानात्मवैभवायै नमो नमः ॥ ३९ ॥
विमलप्रणवाकाशमध्यगाय नमो नमः ।
चक्रराजमहामन्त्रमध्यस्थायै नमो नमः ॥ ४० ॥

पृथ्व्यप्तेजोऽनिलाकाशपूरिताय नमो नमः ।
अव्याजकरुणापूरपूरितायै नमो नमः ॥ ४१ ॥
रतिप्रख्यातमाङ्गल्यफलदाय नमो नमः ।
पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै नमो नमः ॥ ४२ ॥
मार्कण्डेयमनोभीष्टदायकाय नमो नमः ।
एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै नमो नमः ॥ ४३ ॥
कृतान्तकमहादर्पनाशनाय नमो नमः ।
कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै नमो नमः ॥ ४४ ॥
बिडौजोविधिवैकुण्ठसन्नुताय नमो नमः ।
कलशोद्भवदुर्वासःसम्पूज्यायै नमो नमः ॥ ४५ ॥
कैवल्यपरमानन्दनियोगाय नमो नमः ।
शक्तिहंसवधूमुख्यनियोगायै नमो नमः ॥ ४६ ॥
स्वद्रोहिदक्षसवनविनाशाय नमो नमः ।
कलेवरान्तविभ्रान्तिविनाशिन्यै नमो नमः ॥ ४७ ॥
दुःखमन्युमहामोहभञ्जनाय नमो नमः ।
दुष्टभूतमहाभीतिभञ्जनायै नमो नमः ॥ ४८ ॥
सनकादिसमायुक्तदक्षिणामूर्तये नमः ।
अनाद्यन्तस्वयम्भानदिव्यमूर्त्यै नमो नमः ॥ ४९ ॥
अशेषदेवताराध्यपादुकाय नमो नमः ।
सनकादिसमाराध्यपादुकायै नमो नमः ॥ ५० ॥
अनन्तवेदवेदान्तसंवेद्याय नमो नमः ।
सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्त्वायै नमो नमः ॥ ५१ ॥
निजपादाम्बुजासक्तसुलभाय नमो नमः ।
भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै नमो नमः ॥ ५२ ॥
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणाय नमो नमः ।
अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै नमो नमः ॥ ५३ ॥
नन्दिभृङ्गिमुखानेकसंस्तुताय नमो नमः ।
वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै नमो नमः ॥ ५४ ॥

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकाय नमो नमः।
लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै नमो नमः॥ ५५॥
सहस्रारमहापद्ममन्दिराय नमो नमः।
अनाहतमहापद्ममन्दिरायै नमो नमः॥ ५६॥
अकारादिक्षकारान्तवर्णज्ञाय नमो नमः।
वाणीगायत्रीसावित्रीवर्णज्ञायै नमो नमः॥ ५७॥
घोरापस्मारदनुजदमनाय नमो नमः।
महापापौघकान्तारविभेदिन्यै नमो नमः॥ ५८॥
कैलासतुल्यवृषभवाहनाय नमो नमः।
कामकोटिमहाभद्रपीठस्थायै नमो नमः॥ ५९॥
शम्बरान्तकलावण्यदेहसंहारिणे नमः।
भण्डदैत्यमहासेनाशासनायै नमो नमः॥ ६०॥
संसारामयसंछेदभेषजाय नमो नमः।
भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकायै नमो नमः॥ ६१॥
सहस्रभानुसङ्काशचक्रदाय नमो नमः।
अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै नमो नमः॥ ६२॥
आदिमध्यान्तरहितदेहस्थाय नमो नमः।
रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै नमो नमः॥ ६३॥
अनाहतमहासौख्यपदस्थाय नमो नमः।
सुधाब्धिस्थमणिद्वीपमध्यस्थायै नमो नमः॥ ६४॥
ज्योतिषामुत्तमज्योतीरूपदाय नमो नमः।
नामपारायणाभीष्टफलदायै नमो नमः॥ ६५॥
नरसिंहमहादर्पशमनाय नमो नमः।
चन्द्रशेखरभक्तार्तिभञ्जनायै नमो नमः॥ ६६॥
शाश्वतैश्वर्यविभवसहिताय नमो नमः।
त्रिलोचनकृतोल्लासविभवायै नमो नमः॥ ६७॥
निश्चलौदार्यसौभाग्यप्रबलाय नमो नमः।
नतसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै नमो नमः॥ ६८॥

निजाक्षिजाग्निसन्दग्धत्रिपुराय नमो नमः ।
महिषासुरदोर्वीर्यनिग्रहायै नमो नमः ॥ ६९ ॥
दारुकावनमौनिस्त्रीमोहनाय नमो नमः ।
साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै नमो नमः ॥ ७० ॥
पतञ्जलिव्याघ्रपादसंस्तुताय नमो नमः ।
धात्रच्युतमुखाधीशसेवितायै नमो नमः ॥ ७१ ॥
सकृत्प्रपन्नदौर्भाग्यवेदनाय नमो नमः ।
भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै नमो नमः ॥ ७२ ॥
अचिन्त्यदिव्यमहिमारञ्जिताय नमो नमः ।
हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै नमो नमः ॥ ७३ ॥
हिरण्यकिङ्किणीयुक्तकङ्कणाय नमो नमः ।
नवचाम्पेयपुष्पाभनासिकायै नमो नमः ॥ ७४ ॥
संसिद्धऋग्यजुर्वेदवाहनाय नमो नमः ।
सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै नमो नमः ॥ ७५ ॥
केशवब्रह्मसंग्रामवारकाय नमो नमः ।
समस्तदेवदनुजप्रेरकायै नमो नमः ॥ ७६ ॥
चामीकरमहाशैलकार्मुकाय नमो नमः ।
सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै नमो नमः ॥ ७७ ॥
महाताण्डवचातुर्यपण्डिताय नमो नमः ।
क्रूरभण्डासुरच्छेदनिपुणायै नमो नमः ॥ ७८ ॥
ब्रह्मादिकीटपर्यन्तव्यापकाय नमो नमः ।
अनङ्गजनकापाङ्गवीक्षणायै नमो नमः ॥ ७९ ॥
अनेककोटिशीतांशुप्रकाशाय नमो नमः ।
सचामररमावाणीवीजितायै नमो नमः ॥ ८० ॥
अविद्योपाधिरहितनिर्गुणाय नमो नमः ।
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै नमो नमः ॥ ८१ ॥
शिक्षितान्तकदैतेयविक्रमाय नमो नमः ।
रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षिकायै नमो नमः ॥ ८२ ॥

अद्वयानन्दविज्ञानसुखदाय नमो नमः ।
वृषभध्वजविज्ञाततपःसिद्ध्यै नमो नमः ॥ ८३ ॥
अनेककोटिशीतांशुशीतलाय नमो नमः ।
दक्षप्रजापतिसुतावेषाढ्यायै नमो नमः ॥ ८४ ॥
समस्तलोकगीर्वाणशरण्याय नमो नमः ।
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै नमो नमः ॥ ८५ ॥
शब्दस्पर्शसुगन्धादिसाधनाय नमो नमः ।
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै नमो नमः ॥ ८६ ॥
धर्मार्थकाममोक्षैकसूचकाय नमो नमः ।
हिमाचलमहावंशपावनायै नमो नमः ॥ ८७ ॥
सर्वमन्त्रमहाचक्रस्यन्दनाय नमो नमः ।
महापद्माटवीमध्यनिवासिन्यै नमो नमः ॥ ८८ ॥
रजस्तमःसत्त्वमुखगुणेशाय नमो नमः ।
चण्डमुण्डनिहन्त्रादिसेवितायै नमो नमः ॥ ८९ ॥
परानन्दस्वरूपार्थबोधकाय नमो नमः ।
ज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनियुक्तायै नमो नमः ॥ ९० ॥
जलन्धरासुरशिरच्छेदनाय नमो नमः ।
दक्षाध्वरविनिर्भिन्नशासनायै नमो नमः ॥ ९१ ॥
चण्डेशदोषविच्छेदप्रवीणाय नमो नमः ।
महेशयुक्तनटनतत्परायै नमो नमः ॥ ९२ ॥
महापातकतूलौघपावकाय नमो नमः ।
अशेषदुष्टदनुजसूदनायै नमो नमः ॥ ९३ ॥
सुधाकरसितच्छत्ररथाङ्गाय नमो नमः ।
सौभाग्यज्ञातशृङ्गारमध्यमायै नमो नमः ॥ ९४ ॥
सरसीरुहसञ्जातप्राप्तसारथये नमः ।
बृहन्नितम्बविलसञ्जघनायै नमो नमः ॥ ९५ ॥
वैकुण्ठनाथज्वलनसायकाय नमो नमः ।
श्रीनाथसोदरीरूपशोभितायै नमो नमः ॥ ९६ ॥

सप्तकोटिमहामन्त्रपूरिताय नमो नमः ।
लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै नमो नमः ॥ ९७ ॥
सहजानन्दसन्दोहसंयुक्ताय नमो नमः ।
विरक्तिभक्तिविज्ञाननिधानायै नमो नमः ॥ ९८ ॥
षड्‌विंशत्तत्त्वप्रासादभुवनाय नमो नमः ।
सहस्त्रारसरोजातनिवासायै नमो नमः ॥ ९९ ॥
अक्षरक्षरकूटस्थपरमाय नमो नमः ।
रमाभूमीसमाराध्यपादुकायै नमो नमः ॥ १०० ॥
देवकीसुतकौन्तेयवरदाय नमो नमः ।
जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जितायै नमो नमः ॥ १०१ ॥
भुजङ्गराजविलसच्छिञ्जिन्याकृतये नमः ।
निजभक्तमुखाम्भोजसंस्थितायै नमो नमः ॥ १०२ ॥
कोलाहलमहोदारशरभाय नमो नमः ।
श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यस्थायै नमो नमः ॥ १०३ ॥
ज्वलज्ज्वालावलीभीमविषघ्नाय नमो नमः ।
हानिवृद्धिसमाधिक्यरहितायै नमो नमः ॥ १०४ ॥
द्रुहिणाम्भोजनयनदुर्लभाय नमो नमः ।
मत्तहंसवधूमन्दगमनायै नमो नमः ॥ १०५ ॥
प्रपञ्चनाशकल्पान्तभैरवाय नमो नमः ।
नित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै नमो नमः ॥ १०६ ॥
हिरण्यगर्भोत्तमाङ्गकर्तनाय नमो नमः ।
नागाद्रिनिलयेशानकुटुम्बिन्यै नमो नमः ॥ १०७ ॥
वसुन्धरामहाभाग्यसूचकाय नमो नमः ।
अर्धाद्रिशिखरस्थार्धनारीश्वर्यै नमो नमः ॥ १०८ ॥
पराशक्तिसमायुक्तपरेशाय नमो नमः ।
महादेवसमायुक्तमहादेव्यै नमो नमः ॥ १०९ ॥

*॥ इति श्रीअर्धनारीश्वराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥*

॥ श्रीआदित्याय नमः ॥

# काशीस्थद्वादशादित्यनामानि

लोलार्क उत्तरार्कश्च साम्बादित्यस्तथैव च।
चतुर्थो द्रुपदादित्यो मयूखादित्य एव च॥
खखोल्कश्चारुणादित्यो वृद्धकेशवसंज्ञकौ।
दशमो विमलादित्यो गङ्गादित्यस्तथैव च॥
द्वादशश्च यमादित्यः काशिपुर्यां घटोद्भव।
तमोऽधिकेभ्यो दुष्टेभ्यः क्षेत्रं रक्षन्त्यमी सदा॥

*॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे काशीस्थद्वादशादित्यनामानि॥*

# काशीस्थद्वादशादित्यनामावलिः

१ ॐ काश्यां लोलार्काय नमः।
२ ॐ काश्यां उत्तरार्काय नमः।
३ ॐ काश्यां साम्बादित्याय नमः।
४ ॐ काश्यां द्रुपदादित्याय नमः।
५ ॐ काश्यां मयूखादित्याय नमः।
६ ॐ काश्यां खखोल्कादित्याय नमः।
७ ॐ काश्यां अरुणादित्याय नमः।
८ ॐ काश्यां वृद्धादित्याय नमः।
९ ॐ काश्यां केशवादित्याय नमः।
१० ॐ काश्यां विमलादित्याय नमः।
११ ॐ काश्यां गङ्गादित्याय नमः।
१२ ॐ काश्यां यमादित्याय नमः।

*॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे काशीखण्डे काशीस्थद्वादशादित्यनामावलिः सम्पूर्णा॥*

॥ श्रीकार्तिकेयाय नमः ॥

# प्रज्ञाविवर्धनाख्यं कार्तिकेयस्तोत्रम्

*[ प्रज्ञाविवर्धन नामक इस स्तोत्रमें भगवान् स्कन्दने अपने उन अट्ठाईस नामोंको स्तोत्ररूपमें बताया है, जिनका प्रातःकाल श्रद्धाके साथ पाठ करनेपर गूँगा मनुष्य भी बृहस्पतिके समान हो जाता है। ये नाम महामन्त्रस्वरूप बताये गये हैं, इनका पाठ करनेसे निस्सन्देह महाप्रज्ञा ( महान् बुद्धिमत्ता ) प्राप्त होती है। ]*

*विनियोग*

*ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धनस्तोत्रस्य भगवान् शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, स्कन्दकुमारो देवता, प्रज्ञासिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।*

*श्रीस्कन्द उवाच*

**योगीश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।**
**स्कन्दः कुमारः सेनानीः स्वामी शङ्करसम्भवः॥ १ ॥**
**गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।**
**तारकारिरुमापुत्रः क्रौञ्चारिश्च षडाननः॥ २ ॥**
**शब्दब्रह्मसमुद्रश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।**
**सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षफलप्रदः॥ ३ ॥**
**शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।**
**सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदर्शनः॥ ४ ॥**
**अष्टाविंशतिनामानि मदीयानीति यः पठेत्।**
**प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्॥ ५ ॥**
**महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत्।**
**महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥ ६ ॥**

*॥ इति श्रीरुद्रयामले प्रज्ञाविवर्धनाख्यं कार्तिकेयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥*

# ‘गीताप्रेस’ गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

| | | |
|---|---|---|
| **गोरखपुर**-२७३००५ | गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस<br>website:www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org | ✆ ( ०५५१ ) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स २३३६९९७ |
| **दिल्ली**-११०००६ | २६०९, नयी सड़क | ✆ ( ०११ ) २३२६९६७८; फैक्स २३२५११४० |
| **कोलकाता**-७००००७ | गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड<br>e-mail:gobindbhawan@gitapress.org | ✆ ( ०३३ ) २२६८६८९४; फैक्स २२६८०२५१ |
| **मुम्बई**-४००००२ | २८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट)<br>मरीन लाईन्स स्टेशनके पास | ✆ ( ०२२ ) २२०३०७१७ |
| **कानपुर**-२०८००१ | २४/५५, बिरहाना रोड | ✆ ( ०५१२ ) २३५२३५१; फैक्स २३५२३५१ |
| **पटना**-८००००४ | अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने | ✆ ( ०६१२ ) २३००३२५ |
| **राँची**-८३४००१ | कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर | ✆ ( ०६५१ ) २२१०६८५ |
| **सूरत**-३९५००१ | वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड<br>e-mail: suratdukan@gitapress.org | ✆ ( ०२६१ ) २२३७३६२, २२३८०६५ |
| **इन्दौर**-४५२००१ | जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग | ✆ ( ०७३१ ) २५२६५१६, २५११९७७ |
| **जलगाँव**-४२५००१ | ७, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास | ✆ ( ०२५७ ) २२२६३९३ ; फैक्स २२२०३२० |
| **हैदराबाद**-५०००९५ | ४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार | ✆ ( ०४० ) २४७५८३११ |
| **नागपुर**-४४०००२ | श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड | ✆ ( ०७१२ ) २७३४३५४ |
| **कटक**-७५३००९ | भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी | ✆ ( ०६७१ ) २३३५४८१ |
| **रायपुर**-४९२००९ | मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक | ✆ ( ०७७१ ) ४०३४४३० |
| **वाराणसी**-२२१००१ | ५९/९, नीचीबाग | ✆ ( ०५४२ ) २४१३५५१ |
| **हरिद्वार**-२४९४०१ | सब्जीमण्डी, मोतीबाजार | ✆ ( ०१३३४ ) २२२६५७ |
| **ऋषिकेश**-२४९३०४ | गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम<br>e-mail:gitabhawan@gitapress.org | ✆ ( ०१३५ ) { २४३०१२२, २४३२७९२ |
| **कोयम्बटूर**-६४१०१८ | गीताप्रेस मेंशन, ८/१ एम, रेसकोर्स | ✆ ( ०४२२ ) ३२०२५२१ |
| **बेंगलोर**-५६००२७ | १५, फोर्थ ‘इ’ क्रास, के० एस० गार्डेन, लालबाग रोड | ✆ ( ०८० ) २२९५५१९०, ३२४०८१२४ |

## स्टेशन-स्टाल—

**दिल्ली** (प्लेटफार्म नं० ५-६); **नयी दिल्ली** (नं० १६); **हजरत निजामुद्दीन** [दिल्ली] (नं० ४-५); **कोटा** [राजस्थान] (नं० १); **बीकानेर** (नं० १); **गोरखपुर** (नं० १); **कानपुर** (नं० १); **लखनऊ** [एन० ई० रेलवे]; **वाराणसी** (नं० ४-५); **मुगलसराय** (नं० ३-४); **हरिद्वार** (नं० १); **पटना** (मुख्य प्रवेशद्वार); **राँची** (नं० १); **धनबाद** (नं० २-३); **मुजफ्फरपुर** (नं० १); **समस्तीपुर** (नं० २); **हावड़ा** (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); **कोलकाता** (नं० १); **सियालदा मेन** (नं० ८); **आसनसोल** (नं० ५); **कटक** (नं० १); **भुवनेश्वर** (नं० १); **अहमदाबाद** (नं० २-३); **राजकोट** (नं० १); **जामनगर** (नं० १); **भरुच** (नं० ४-५); **इन्दौर** (नं० ५); **वडोदरा** (नं० ४-५); **औरंगाबाद** [महाराष्ट्र] (नं० १); **सिकन्दराबाद** [आं० प्र०] (नं० १); **गुवाहाटी** (नं० १); **खड़गपुर** (नं० १-२); **रायपुर** [छत्तीसगढ़] (नं० १); **बेंगलोर** (नं० १); **यशवन्तपुर** (नं० ६); **हुबली** (नं० १-२); **श्री सत्यसाईं प्रशान्ति निलयम्** [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० १) एवं **अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली**।

## फुटकर पुस्तक-दूकानें

**चूरू**-ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क, **ऋषिकेश**-मुनिकी रेती, **तिरुपति**-शॉप नं० ५६, टी० टी० डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, **बेरहामपुर**-म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, ब्लाक-बी, शॉप नं० ५७—६०, प्रथम तल, **गुजरात**-सन्तराम मन्दिर, नडीयाड।